UNIVERSAL LIBRARY

OU_186231

UNIVERSAL LIBRARY

Osmania University Library

Call No. H398.9 B57R

Accession No. GH1425

Author

Title राजस्थानी भीलों की कहावतें भीली शब्द कोष

This book should be returned on or before the date marked below.

राजस्थानी भीलों की कहावतें
भीली शब्द कोष

प्रकाशकीय निवेदन

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारतीय लोक सभा द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया गया। परन्तु उसके विकास, विस्तार एवं समृद्धि के लिये जितना क्रियात्मक कार्य किया जाना चाहिये; उतना नहीं किया जा रहा है। इसलिये इस ओर केन्द्रीय सरकार को अधिक गतिशील बनना चाहिये। प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों के साथ २ हिन्दी का काम करने वाली संस्थाओं का भी कर्तव्य है कि वे अपने उत्तरदायित्व की गंभीरता को अनुभव करें और अपने सीमित साधनों के द्वारा भी इसे सम्पन्न बनाने में रचनात्मक योग दें। विधान के अनुसार १५ वर्षों में हिन्दी को सम्पूर्ण रूप से अंग्रेजी का स्थान लेना है तो समस्त हिन्दी-प्रेमियों, हिन्दी हितैषियों और हिन्दी भाषियों को सक्रिय रूप से इसके विकास-कार्य में लग ही जाना चाहिये। राजस्थान विश्व विद्यापीठ विगत एक युग से हिन्दी की समृद्धि के लिये अपने 'साहित्य-संस्थान' द्वारा प्राचीन साहित्य, लोक साहित्य, पुरातत्व, कला एवं इतिहास विषयक शोध-खोज, संग्रह-सम्पादन एवं प्रकाशन का नम्र किन्तु महत्वपूर्ण काम करती आ रही है।

"साहित्य-संस्थान" राजस्थान विश्व विद्यापीठ द्वारा गवेषणा के साथ-साथ लोक साहित्य के संग्रह-सम्पादन का कार्य भी योजना बद्ध रूप से किया जा रहा है। राजस्थानी भाषा में गंभीर साहित्यिक सामग्री के अतिरिक्त लोक-साहित्य की प्रचुर सामग्री है। 'साहित्य-संस्थान' में अब तक सैंकड़ों लोक-गीत, लोकवार्ता, लोकोक्तियाँ, कहावतें एवं लोक कथायें एकत्रित की जा चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक उसी संग्रह का परिणाम है। राजस्थान के पहाड़ी प्रदेशों में बसे हुए भीलों का अपना इतिहास एवं अपनी संस्कृति है। भील-जाति का साहस और शौर्य न केवल राजस्थान में ही प्रसिद्ध है अपितु समस्त भारत में इस जाति की ख्याति है। भील-जाति शताब्दियों से भूखी और अर्धनग्न अवस्था में रहती आ रही है परन्तु अब तक इसके विकास एवं प्रगति की अवहेलना ही की जाती-रही है। स्वाधीनता के बाद देश के जीवन में प्रगति का जो दौर शुरु हुआ है; उसमें पिछड़ी हुई जातियों के विकास एवं उत्थान कार्य को प्रमुखता दी गई है। ऐसी जातियाँ देश के कौने कौने में बिखरी हुई मिलती हैं, जिनकी अपनी सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशेषतायें हैं। भाषा की दृष्टि से ऐसी जातियाँ प्रादेशिक भाषाओं की उप बोलियाँ बोलती हैं। इन उप बोलियों के द्वारा प्रादेशिक भाषा सम्पन्न होती है तथा प्रादेशिक भाषाओं से जीवनी शक्ति प्राप्त कर राष्ट्र भाषा अपना बल बढ़ाती जाती है। 'भीली बोली' राजस्थानी भाषा की ताकत है। उक्त पुस्तक 'राजस्थानी भीलों की कहावतें' भीलों में प्रचलित कहावतों का संग्रह है।

साहित्य-संस्थान-राजस्थान विश्व विद्यापीठ के संस्थापक और संचालक श्री जनार्दनराय नागर ने श्री फूलजी भाई को पढ़ाया और पढ़ा कर यह कार्य करने को प्रेरित किया । श्री फूलजी ने साहित्य-संस्थान के अन्तर्गत यह संग्रह तय्यार किया और संस्थान ने इसे सम्पादित कराया । प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न प्रकार की ८००आठ सौ कहावतें हैं । इन कहावतों को पढ़ने से पता चलेगा कि भीलों की अपनी क्या विशेषतायें है और जीवन के प्रति इन का क्या दृष्टिकोण है ?

यह संग्रह प्रकाशन के लिये कई वर्षों से पड़ा हुआ था परन्तु साधन सुविधाओं के न होने से आज से पूर्व पाठकों के हाथ में नहीं दिया जा सका । अभी तक भी इसका प्रकाशन शायद ही हो पाता यदि राजस्थान सरकार के पिछड़ी जाति विभाग के संचालकों, पदाधिकारियों और माननीय मंत्री श्री पंड्याजी का सक्रिय सहयोग नहीं मिलता । सरकार के पिछड़ी जाति विभाग ने उक्त पुस्तक तथा इसके साथ दो और पुस्तकों के लिये एवं भीली शब्द संग्रह, जो कहावत माला के साथ ही प्रकाशित है २०००) दो हजार रुपैयों की आर्थिक सहायता प्रकाशन हेतु देने की कृपा की; इसके लिये संस्थान की और से मैं उन का अत्यन्त आभारी हूँ । विभाग की ओर से इसी प्रकार का सहयोग भविष्य में भी निरन्तर मिलता रहा तो 'साहित्य-संस्थान' भीलों सम्बन्धी और अन्य पिछड़ी हुई जातियों सम्बन्धी साहित्य शीघ्र ही और भी प्रकाशित कर सकेगा ।

सरकार की इस सहायता को प्राप्त करने में राजस्थान विश्व

तूलिका से अंकित कर दिया; लोक के मानस-पट पर एक ऐसी रेखा खींच दी जिसे काल का अदम्य प्रवाह भी धो नहीं पाता।

ईसा मसीह ने कहावतों द्वारा शिक्षा दी, गोतम बुद्ध ने उपदेश देने में लोकिकी गाथाओं का प्रयोग किया। स्वयं अरस्तू जैसे सुविख्यात दार्शनिक ने सर्व प्रथम कहावतों का संग्रह किया। इस प्रकार अत्यन्त प्राचीन काल से कहावतों को अमित सम्मान मिलता रहा है। 'लोकोक्ति जनता-जनार्दन की उक्ति है' इस आशय की कहावतें लेटिन आदि अनेक भाषाओं में प्रचलित हो गई हैं। तमिल भाषा में भी एक इसी प्रकार की कहावत सुनी जाती है।

यह कहावती जगत् भी एक विलक्षण लोक है। बड़े बड़े ऋषि-मुनियों की उक्तियों को भी यदि जनता स्वीकार न करे तो वे भी लोकोक्तियों के गौरवपूर्ण पद पर आसीन नहीं हो सकतीं। कहावतों की सचमुच बड़ी महिमा है, कोई उनकी अवमानना न करे।

न्याय में आप्त वाक्य को प्रमाण माना गया है किन्तु कहावत का महत्त्व किसी भी आप्त वाक्य से कम नहीं। कहावती न्यायालय में निर्णय हो जाने के बाद उसकी कहीं कोई अपील नहीं होती। कहावत ने जो निर्णय दे दिया, वही अन्तिम है। किसी तथ्य की प्रामाणिकता का कहावत से बड़ा कोई प्रमाण नहीं समझा

जाता। कहावत के संबन्ध में ही ऐसी अनेक कहावतें प्रचलित हो गई हैं जिनमें कहा गया है कि कहावतें झूठ नहीं बोलतीं।

काल-समुद्र की लहरियों पर तैरती हुई बहुत सी कहावतें अपने सत्य के बल पर ही सुरक्षित रह पाती हैं। ऐसी लोकोक्तियाँ जिनका सत्य पुराना नहीं पड़ता, जीवन रूपी व्याकरण के लिए पाणीनि के सूत्रों से भी अधिक उपयोगी सिद्ध होती हैं।

कहावतें कितनी प्राचीन हैं, इस संबन्ध में भी कुछ कहा नहीं जा सकता। राजस्थानी भीलों में प्रचलित एक कहावत है—'बाप जहां बेटा, मां जांही डीकरी।' अर्थात् जैसा पिता, वैसा पुत्र और जैसी माता, वैसी उसकी पुत्री। एक ऐसी ही कहावत वाल्मीकि रामायण में भी उपलब्ध होती है—

"सत्यश्चात्र प्रवादोऽयं लौकिकः प्रतिभाति मे।
पितॄन्समनुजायन्ते नरा मातरमंगनाः॥"२।३५।२८

सुमंत्र की कैकेयी के प्रति उक्ति है कि यह लौकिक प्रवाद मुझे सत्य जान पड़ता है कि पुरुष पिता का अनुसरण करते हैं और स्त्रियाँ अपना माता का।

कहावतों के अध्ययन का महत्व अब प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। लोगों को अब इस तथ्य की प्रतीति होने लगी है कि जिस प्रकार पुराने सिक्कों और शिलालेखों का अन्वेषण किया जाता है, उसी प्रकार कहावतों के क्षेत्र में भी अनुसन्धान और अध्ययन

किये जाने की आवश्यकता है। सिक्कों और शिलालेखों का तो राजाओं और अभिजात-वर्ग से संबन्ध है किन्तु कहावतों के द्वारा सामाजिक जीवन, पुराने रीति-रिवाज, नृवंशविद्या आदि सभी पर प्रकाश पड़ता है। कहावतें वे आलोक-दीप हैं जिनकी सहायता से अन्धकारपूर्ण अतीत भी चमक उठता है। जाति-विज्ञान और संस्कृति के विद्वानों का कथन है कि जनता की विचारधारा जन-कथाओं, कहावतों और मुहावरों आदि में व्यक्त होती है। कहावतें श्रमिक जनता की सम्पूर्ण सामाजिक और ऐतिहासिक अनुभूतियों के संक्षिप्त रूप हैं। स्वयं गोर्की ने एक स्थान पर लिखा था कि मैंने कहावतों और मुहावरों आदि से बहुत कुछ सीखा है।

श्री गिरिधारीलाल शर्मा ने राजस्थानी भीलों की कहावतों का अकारादि क्रम से संग्रह और हिन्दी अनुवाद सहित सम्पादित कराकर राजस्थानी कहावत-साहित्य का श्रीवृद्धि की है। राजस्थानी कहावतों के जब अनेक संग्रह निकल चुकेंगे तब उनके वैज्ञानिक वर्गीकरण की ओर भी विद्वानों का ध्यान आकृष्ट होगा, ऐसी आशा है।

कन्हैयालाल सहल

पिलानी

राजस्थानी भीलों की कहावतें

भाग ३.

१ अक्कल ए पूचे आदमी ए कोयनी पूचे ।

बुद्धि से ही मनुष्य की पूछ होती है ।

२ अक्कल बड़ी के नकल ।

बुद्धि बड़ी है अथवा नकल । किसी की नकल करने की अपेक्षा स्वयं की बुद्धि से काम करना उचित है ।

३ अक्कल कणानी बापनी नी है ।

अक्ल किसी के बाप की नहीं है । प्रयत्न करने पर प्रत्येक मनुष्य बुद्धि सम्पन्न हो सकता है ।

४ अक्कल ते हया मांये उपजे ।

बुद्धि तो हृदय में पैदा होती है । किसी को विवश कर उसके लाभ की बात नहीं मनवाई जा सकती ।

५ अक्कलन् खावो है ।

जिस व्यक्ति में जैसी और जितनी बुद्धि होगी, वह उतना ही कमायेगा । अक्ल का खाना है ।

६ अच् बचाने वीजली पड़्ये अहू कूण जाणेतीर

अचानक बिजली गिर जायगी ऐसा कौन जानता था।

अचानक अनर्थ होने पर यह कहावत कही जाती है।

७ अठे कणी–मूंगों मोटो कीदो जे मोटी २ वोत कर

यहाँ किसने तुझे महँगा-बड़ा माना है, जो बड़ी २ बातें करता है।

महत्व हीन व्यक्ति के अनुचित बातें कहने पर इस कहावत का उपयोग होता है।

८ अड़ग्ये भड़ग्ये आडो आवे जो हगो है।

कठिनाई में सहायता दे, वही सच्चा सम्बन्धी माना जाता है।

९ अण जाणन्यों कणांने आंगणे रोये।

अनजान व्यक्ति किसके आंगन में रोये।

अनजान व्यक्ति हर किसी के सामने अपना दुःख प्रकट कर उसको मिटाने का प्रयत्न नहीं कर सकता।

१० अण नूंदयी ज़ात अण नूदयी भात, हूँ खबर पड़े।

अन गिनत जाति निमंत्रित है और बिना तोला भोजन बनाया है तो घटने बढ़ने का कैसे पता लग सकता है।

दो प्रतिकूल अथवा विरोधी बातों के मिलने पर सत्य का पता लगाना कठिन होता है।

११ अण भण्यों भण्या ए ठगे ।

अनपढ़ किन्तु समझदार व्यक्ति पढ़े हुए किन्तु ना समझ व्यक्ति को ठग लेता है ।

व्यक्ति में पढ़ाई के साथ समझ का होना जरुरी है ।

१२ अण भणिया भील मन जाणिया पलाणे ।

अशिक्षित भीलों से स्वेच्छापूर्वक कष्ट देकर भी काम लिया जाता है ।

अशिक्षा से आत्माभिमान नहीं जागता और अशिक्षित पर मन-माना अत्याचार किया जा सकता है ।

१३ अणानो कायदो चुपाने, मोटी मोटी वात भलै करो ।

इनका मान बिल्कुल नहीं है; बड़ी बड़ी बातें भले ही करें ।

बड़े मनुष्यों जैसी बातें करने से ही, कोई बड़ा नहीं बन जाता ।

१४ अणना जुमका माते आधा ।

सप्तर्षि आदि तारों के गुच्छे सर पर आ गये हैं ।

यह कहावत बहुत देर होने पर आधी रात के बाद तारों को देख कर कही जाती है ।

१५ अद्धोरु कीदा वगर होरू नी थाये ।

कठिन कार्य किये बिना सरल नहीं होता ।

१६ अनवाये जतरे ते खानी मानी, अनवाये नी ते चानी मानी।

खाने को अनाज है तब तक बड़े आनन्द से गीत-नाच करना और अनाज नहीं रहने पर चुपचाप दिन काटना।

१७ अन्दर हरको गेरो, धरती हरको भारी वेई ने रेवो।

इन्द्र के समान गंभीर और धरती के समान भारी-उदार होकर रहना चाहिये।

इन्द्र शत्रु मित्र सब को समान मान कर समान ही पानी बरसाता है और पृथ्वी छोटे बड़े सभी का समान निर्वाह करती है।

१८ अन्यायी ना अवला पग।

अन्यायी के उल्टे पैर होते हैं अर्थात् वह सदा उल्टा कार्य करता है।

१९ अवला फेरा है आज हाहू नो काले वउ नो।

उल्टा चक्कर है। आज सास का समय है तो कल बहू का होगा।

सास को वृद्धावस्था में अथवा उसके पुत्र के कमाऊ होने पर बहू की अधीनता में रहना पड़ता है।

२० अवली गांठ लागवानी, ..टवानी नो।

उल्टी गांठ लगती ही है छूटती नहीं।

चुभती हुई बात चाहे उल्टे ढंग से कही जाय अवश्य अपना प्रभाव बताती है।

२१ आंख ते रेई जाये ने धोखो निकली जाये ।

आंख रह जाती है और आंख में लगी चोट दूर हो जाती है।
आपत्तियों से नहीं डरने के लिये यह कहावत कही जाती है।

२२ आंखां दीठी ने कानां हामली जे हांची ।

आंखों देखी और कानों से सुनी बातें झूठ नहीं कही जा सकतीं।

२३ आंखां मां अणीको नी खटे ।

आंखों में तिनका बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।
शत्रुता सहन नहीं कर सकने के लिये यह कहावत कही जाती है।

२४ आंखां हूं खबर ने पड़े हें ते नाका हूं तो पड़े हैं।

आंखों से मालूम नहीं होगा तो नाक से तो होगा।
देखने से वास्तविकता का ज्ञान नहीं होगा तो स्वयं सहन करने से तो अवश्य ही होगा।

२५ आंगल ल्या धरम कीदे धर्म नी थाये ।

अंगुली के संकेत मात्र के धर्म से धर्म नहीं होता अर्थात् जिसमें कुछ करना नहीं पड़े, उससे धर्म नहीं होता।
धर्म लाभ परिश्रम साध्य है।

२६ आंखों कुड़ों ने वऊ चाचली।

कुआ समीप है और फिर बहू फुर्तिली है।

कार्यकर्त्ता के दक्ष होने पर सावन-सुविधायें भी जहाँ सुलभ हों, वहाँ यह कहावत कही जाती है।

२७ आहें कणनी अड़द्यी है,केवानी।

ऐसा कहने की किसको पड़ी है।

अच्छी बात कहने पर भी जब उस पर ध्यान नहीं दिया जाता है, तब इस कहावत का प्रयोग होता है।

२८–आकड़े दूध हुकाणो ढाही डोबियाँन खटे हावें।

आक का दूध भी जब सूख गया है तो गायों भैसों के दूध कहाँ से हो सकता है।

२९–आखा ने भरोसे आधो चूकी जाहो।

पूरे को प्राप्त करने की आशा में आधा भी खो दोगे।

आधे को छोड़ कर पूरे की आशा रखना उचित नहीं क्योंकि उसका मिलना भविष्य पर निर्भर रहता है।

३०–आग तो मांटी झड़काये।

जल्द बाज (पति) की हड्डी इधर उधर हो जाती है; जिससे काम रुक जाता है। अर्थात् जल्द बाजी में काम नहीं करना चाहिये।

३१ आगने ने काल ने मूड़े कई नी रे ।

आग और काल के आगे कुछ नहीं बच सकता ।

३२ आगले भौव खोटूं कीदूं अणै भौव भगतो ।

पूर्व जन्म में बुरा काम किया, उसका फल इस जन्म में उठाओ ।

जीवन में दुःखों का कारण पूर्व जन्म के पाप समझे जाते है ।

३३–आगलो आग तो आपां पाणी ।

सामने वाला आग–क्रोधी हो तो हमें पानी (शान्त) बन जाना चाहिये । इससे उसका शमन हो जाता है ।

३४–आची ने वाची ने काची आवे नदं ।

भोजन न ताजा है न बासी इसी तरह यहाँ तो सुख की नींद भी नहीं आवेगी ।

जहाँ भोजन की आशा में जाने पर निराश होना पड़ता है; वहाँ के लिये यह कहावत कही जाती है ।

३५–आज अणाने वार है, धारे जो करे ।

आज इनका समय है; जो चाहे कर सकते हैं ।
किसी के समय अनुकूल होने पर यह कहावत कही जाती है ।

३६–आज काल दनियां बो रंगी है ।

आज कल दुनियाँ बहु रंगी है, घड़ी में गोपनीय बात के लिये हल्ला कर देती है ।

३७ आज ते मैं काम घणूं कीदूं, तो के कणानी ठोड़ नी कीदूं ।

आज तो मैंने काम बहुत किया तो किसी के बजाय नहीं किया अर्थात् स्वयं का कर्त्तव्य ही किया ।

३८—आज ते राम रखवाली है ।

आज तो राम ही रक्षा करने वाला है ।

जहाँ कोई रक्षा करने वाला नहीं होता; केवल ईश्वर का ही सहारा होता है, वहाँ यह कहावत कही जाती है ।

३९—आज ते सुख दीठो एवां देखां नवा माँ बाप ने पेटे ।

आज तो सुख देखा अब आगे नये माँ बाप के आश्रय में देखेंगे ।

एक दिन सुख देखने वाले व्यक्ति को जब उस जन्म में और सुख मिलने की आशा नहीं रहती है, तब यह कहावत कही जाती है ।

४०—आज रामै कूंण ओलखे-आपै राम हैं ।

आज राम को कौन पहचानता है; स्वयं ही राम है ।

ईश्वर के लिये लोगों की आस्था कम होने पर यह कहावत प्रयोग में लाई जाती है ।

४१—आज वार है तं काले कवार भी है ।

आज वार है तो कल बुरा वार भी है । अर्थात् अच्छे दिन सदा स्थायी नहीं रहते ।

४२=आटा मांये लूण मलै जेम मलीन रेवा हूं फायदो है ।

आटे में नमक की तरह मिल कर रहने में लाभ है । अर्थात् आपस में घुल मिल कर रहने से सफलता निश्चित रुप से मिलती है ।

४३—आदमी ना हो कायदा, लगाई नो एक कायदो ।

आदमी के सौ कायदे और स्त्री का एक कायदा होता है ।

.आदमी कई बुराइयाँ करने पर भी अपनी प्रतिष्ठा कायम रख सकता है किन्तु स्त्री अपनी एक भूल से ही प्रतिष्ठा खो बैठती है ।

४४—आदा ते बाबा ने आदा काका-कूंण कणये कै ।

आधे तो बाबा हैं और आधे काका तो फिर आपस में काम करने के लिये कौन. किसको कहता है ।

कई व्यक्तियों के मिलने पर जब न कोई कार्य करता है और न करने के लिये कोई किसी को कहता है, तब यह कहावत कही जाती है ।

४५ आन्धो कणाये आंगली करी न भाले ।

अन्धा किसकी ओर अंगुली उठा कर देखे।

जो जिस वस्तु से हीन है; वह उस वस्तु को काम में लाने का प्रयत्न नहीं करता।

४६ आपणा हाथ नूं काम हाथेज करवू ।

अपने हाथ से किया जाने वाला कार्य अपने हाथ से ही करना चाहिये। इस से वह कार्य सफलता पूर्वक होता है।

४७ आपणी आपणी हवारध हारां ताके ।

अपना अपना स्वार्थ सभी देखते हैं।

४८ आपणी एक धणी कर्‌या करो-हाड़ कर वूं राम कर्‌या हैं।

हमें अपना कर्त्तव्य करना चाहिये, अच्छा करना राम के हाथ है। अर्थात् अपने आश्रित व्यक्ति अथवा मवेशियों की संरक्षा के लिये हमें तो स्वामी-कर्त्तव्य करना चाहिये, उसका सुफल देना राम के हाथ में है।

४९ आपणी भूले खाएडां खाये ते बीजो हूँ करे ।

अपनी भूल से दण्ड पाता है अथवा नुकसान उठाता है तो दूसरा क्या कर सकता है।

५० आपणूं आपणूं हाड हारा जोवे ।

अपना अच्छा सभी देखते हैं। अर्थात् अपना बुरा कोई नहीं चाहता।

५१ आपणें कई न चावे रामजी नू घड़्घू, मनख चावे ।

हमें कुछ नहीं चाहिये, ईश्वर का बनाया हुआ मनुष्य चाहिये।

५२ आपणे हणगे हात ने करवो ।

हमें आकाश में (मरने पर) साथ नहीं करना है।

दूसरा अर्थ–जो संभव न हो, उसकी आशा करने पर भी यही कहावत कही जाती है।

५३ आपणो घेर मोरं पूगो के आपह हारा पूचे ।

हमारा घर आगे पहुँच गया है तो हमें सब पूछते हैं। अर्थात् हमने पहले लोगों का आदर-सत्कार कर उन्हें अपना बना लिया है तो हमारा आदर भी सर्वत्र होता रहेगा।

५४ आपणो मन हातो मांये नी है ते बीजू हातों मांये नी आवे ।

अपना मन ही हाथ में नहीं है तो दूसरा हाथ में कैसे आ सकता है ?

दूसरों को वश में करने से पूर्व अपने मन को वश में करना चाहिये।

५५ आबरु वालो बोयां हाड़े मरे ।

सम्मानित व्यक्ति दोनों ओर से मरता है ।

कोई अच्छे बुरे दोनों पक्षों में अपना मान बनाये रखने के लिये दोनों पक्ष ग्रहण करता है किन्तु इस दुहरी नीति से वह दुःख पाता है ।

५६ आम्बे मोर, कलाली लेखो ।

धन वेतो, पाहलू फरी न देखो ।।

आम के असंख्य बौरों में से सब के सब आम नहीं होते, उसी तरह मद्य बेचने वाली स्त्री की आशातीत आय भी सम्पत्ति के रुप में परिणित नहीं होती । उसके पैसे की समाज में कद्र नहीं होती । वह जिस प्रकार प्राप्त होता है, उसी प्रकार निकृष्ट कार्यों में पानी की तरह खर्च भी होजाता है ।

५७ आघी मौत कूंण फैरवे ।

आई हुई मौत को कौन टाल सकता है ।

जिसकी मृत्यु निश्चित है उसे बचाना असंभव समझा जाता है ।

५८ आघो ज़मानो ज़ोवन जावानो है ।

आया हुआ समय और यौवन जाने के लिये ही है । अर्थात् समय और यौवन स्थायी नहीं रहते हैं ।

५९ आलक होरु लेवू दोरु ।

देना सरल है, लेना मुश्किल है।

किसी को कोई वस्तु देना आसान है परन्तु वापस लेना कठिन है।

६० आलीन दाड़ो कडड़ावद्यो-जमारु थोड़े कडड़ावद्यो हैं ।

देकर दिन व्यतीत करवाया है सारा जीवन नहीं।

थोड़ा सा देकर भी अत्यधिक प्रशंसा या आभार चाहने वाले के लिये यह कहावत कही जाती है।

६१ आलो ढोलो कीदे काम नी चाले ।

हां ना करते रहने से काम नहीं चलता। अर्थात् काम तो करने से ही होता है।

६२ आहोज़ पाणो ने भायग वाणी ।

आश्विन माह में वर्षा होना बड़े भाग्य की बात है; क्योंकि इससे सियालू और उनालू दोनों फसलें अच्छी होती है।

६३ अ ते खाली अलापएया दड़े है ।

ये तो केवल बातों की लम्बी उड़ान ही भरते हैं।

व्यर्थ की चिकनी चुपड़ी हवाई बातों के लिये यह कहावत कही जाती है।

६४ अ ते चीरा चोकली हैं, मनख थोड़ा हैं।

यह तो 'पूर्वजों' की पत्थरों की मूर्तियाँ है, मनुष्य थोड़े ही है।

अज्ञानियों के लिये यह कहावत कही जाती है।

६५ अ ते जोगी थाग्यो पण मांइ हाते ! हो जोगी कीदो !

यह तो जोगी (साधू) होगया पर साथ में हमें भी जोगी बना गया।

जब कोई व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति बिगाड़ कर दूसरों की भी बिगाड़ देता है; तब यह कहावत कही जाती है।

६६ इ ते ठग वेपार है, जोई ने लेवू।

यह तो ठगी का व्यापार है, देख के लेना (खरीदना) चाहिये।

६७ इ ते नखराली वाला नखरा हैं।

यह तो 'नखराली' के नखरे हैं।

नित्य नई बातें करने वालों के लिये यह कहावत कही जाती है।

६८ इ ते बेहतो भमर उडाड़े ।

यह तो बैठते हुए भँवरे को उड़ा देता है।

बैठते ही शहद कैसे मिल सकता है ! अचानक अ समय में कार्य प्रारंभ कर काम की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिये यह कहावत कही जाती है

६९ इ तं मुलन्या बैठो है जो पाने पाणी पातां कीदां ।

यह तो मूल में (जड़ में) बैठा है, इसने पेड़ के पत्ते से पानी पीने की स्थिति करदी है। अर्थात् बहुत ही निर्धनावस्था करदी है।

संभव सभी प्रयत्न कर किसी को अत्यन्त निर्धन कर देने पर यह कहावत कही जाती है।

७० इ ते वाहे लागो जे जमारा नो हाल वालियो ।

यह तो पीछे लगा हुआ है, जिसने सारे जीवन को बिगाड़ दिया है।

किसी के दुःख से अत्यन्त दुखी हो जाने पर यह कहावत कही जाती है।

७१ इये ते चाती माते पीपली है-है जणां दड़ा नी ।

यह तो प्रारंभ से आज तक छाती पर पीपल है।

पहले से चली आती हुई आपत्ति के लिये यह कहावत कही जाती है।

७२ ईज़त नूं मनख वगर ईज़त नूं ढांढूं ।

इज्जत का मनुष्य, बिना इज्जत का पशु । अर्थात् इज्जत के बिना मनुष्य पशु तुल्य है ।

७३ चोर साहुकारे दण्डे ।

चोर साहुकार को दण्ड देता है ।

अपराधी जब निरपराध को ही अपराधी सिद्ध करता है; तब यह कहावत प्रयुक्त होती है !

७४ चोरे बेठूं चोरु गेल बेठूं कूतरु नी बतलावणों ।

गांव के मध्य चौराहे पर बैठे हुए लड़के को और मार्ग में बैठे हुए कुत्ते को नहीं छेड़ना चाहिये ।

इन दोनों को बतलाने से अपमान और काटने का डर रहता है ।

७५ उँघ नी जोए हातरो न भूख नी जोए मावड़ो ।

नींद बिछौने की चिन्ता नहीं करती और भूख स्वाद युक्त भोजन की इन्तजार नहीं करती ।

दोनों वस्तुएँ प्राकृतिक हैं, अतः इनकी आवश्यकता में शरीर को अच्छे बुरे का ध्यान नहीं रह पाता ।

७६ उचो भाटो दड़ीन मूंड नी मांडवी ।

ऊपर पत्थर फेंक कर सर पर नहीं झेलना चाहिये ।

अपने ही हाथ से अपना बुरा नहीं करना चाहिये ।

७७ उचो लई ने नीचं दड़हें।

ऊँचा लेकर नीचा डालेगा।

जिस सम्मान के बाद निरादर सहना पड़े, उस सम्मान को ग्रहण नहीं करना चाहिये अथवा जो व्यक्ति भुलावे में भलाई के बदले बुराई करना चाहे उससे सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये।

७८ उटा वालू केरे पड़ ने केरे खाऊँ।

ऊँट का ओठ[१] कब पड़े और कब खाऊँ।

असम्भव बात के होने की आशा रखने पर यह कहावत कही जाती है।

७९ उतरघे घाणी बली तो।

उतरी हुई घाणी और जली हुई लकड़ी।

किसी से काम लेने पर जब उसका महत्त्व कम हो जाता है, तब यह कहावत कही जाती है।

८० उदेपर में पोल ई पोल दर्वाजा एकी है।

उदयपुर में पोल ही पोल (गड़बड़ ही गड़बड़) है दरवाजा एक ही है।

काम बनाने के लिये एक ही उपाय-पैसा खर्च करना है।

---

[१] ऊँट का ओठ गिरने जैसा दीखता है किन्तु कभी गिरता नहीं है।

८१ उपाड़्यो कूतरो आयड़े नीचड़े ।

उठा कर लेजाया गया कुत्ता शिकार में काम नहीं करता । इच्छा के विरुद्ध सभी सुविधायें देकर लेजाया गया व्यक्ति काम नहीं आता ।

८२ ऊँट चढ़ी ने भीख मांगे ।

ऊँट पर चढ़ कर भीख मांगता है । अर्थात्
सम्पन्न अवस्था में अथवा देने वाले को कठिनाई होने पर भीख नहीं मिलती है ।

८३ ऊँट नूं गाबड़् लाम्बो वे तो वे दण ने वड़ाया।

ऊँट की गरदन लम्बी होती है तो उसे दो बार नहीं काटी जाती ।

८४ ऊँट नो मोल ऊँट माते-मो माते नी ।

ऊँट का मूल्य ऊँट पर होता है-मुफ्त पर नहीं ।
मार्ग में सामान लाते समय ऊँट मर गया तो ऊँट वाले ने कहा कि-इसका मोल इसी की पीठ पर है-इसी माल को बेचने से इस ऊँट की कीमत निकल आयगी । अथवा धन कमाने के लिये किया गया मूल खर्च बाद में अवश्य मिल जाता है ।

८५ ऊगा जे बूड़वाना ।

जो उदय होगा, वह अस्त भी होगा । अर्थात् संसार में प्रत्येक उत्पन्न होने वाला नाशवान है ।

८६ ऊठो बैठो ने धरती माते हूरज तपे जेम तपो ।

स्वस्थ रहो और धरती पर सूर्य तपता है, उस प्रकार तपो ।
शुभा शीष की तरह यह कहावत कही जाती है।

८७ ऊतले ऊतले फरयो है पण ऊंडे ऊतरी जेरां खबर पड़े हैं ।

उतले पानी में ही फिरा है। गहरे पानी में उतरेगा तब पता चलेगा।

साधारण कार्य को कर बड़े कार्य को भी उसी प्रकार सरलता से करने वाले उतावले व्यक्ति के लिये यह कहावत कही जाती है।

८८ ऊना मांये आंगली घाले ते बलिया वगर नी रे।

गरम वस्तु में अंगुली डालने पर वह जले बिना नहीं रहेगी।
जब स्पष्ट है कि इस काम में पड़ने से कष्ट होगा तो फिर उसमें पड़ना ही नहीं चाहिये।

८६ ऊनूँ खाओ तो मूंडू बाले ।

गरम खाओगे तो मुँह जलेगा।
सुख प्राप्ति के लिये थोड़ा कष्ट भी उठाना पड़ता है।

६० ऊनो पाँणी मूंडी मार ।

गरम पानी की मार सर को ही सहनी पड़ती है।
स्वयं की भूल से दुःख पहुँचने पर यह कहावत कही जाती है।

९१ ऊबा ऊबा दूध पाये ते नी पीये,
आड़ो पाड़ी ने मूत पाये ते पीये।

खड़े खड़े दूध पिलाया जाय तो नहीं पीता है। और नीचे डाल कर मूत्र भी पिलाया जाय तो पीना पड़ता है।

सीधी तरह से नहीं मानने पर, जबरदस्ती मनवाने के प्रयत्न करने पर यह कहावत कही जाती है।

९२ एक कागलो मरे ते हो ठाहद्याना हेंग हालें।

एक कौआ मरता है। तो सौ गायों के सींग हिलते हैं अर्थात् गायों को तसल्ली होती है।

एक दुष्ट के मरने पर कई लोगों को सन्तोष होता है।

९३ एक काम ने बे काज।

एक पन्थ दो काम। एक काम के अवसर पर जब दो काम कर लिये जाते हैं तब यह कहावत कही जाती है।

९४ एक दड़ा हाऊ खावाऊ कई मातू थोड़े थवाए।

एक दिन अच्छा खाने से क्या मोटा थोड़ा ही हुआ जा सकता है

९५ एक दन ज़ोलो लागे ते ज़ोको खावा नो।

एक दिन जोरदार धक्का लग जाय तो झोंका खाही जाता है अर्थात् नष्ट होने की संभावना रहती है।

९६ एकन्त हदा हाऊ ।

एकान्त सदा अच्छा है ।

९७ एक नूं हाउकारुं बीजां ना दुकड़ा ।

एक का साहूकारा और दूसरे का धन समान माना जाता है ।

साहूकारे से ही दूसरे का धन रखा जा सकता है ।

९८ एक राज़ा राम चौंवदे वर अन वगर् वेड़े मांए रेग्या ज़मे रहैं ।

राजा राम चौदह वर्ष विना अन्न के वन में रह गये, उसी प्रकार रहेंगे ।

कठिन परिस्थिति में भोजन के लिये अन्न नहीं मिलने पर यह कहावत कही जाती है ।

९९ एक सवार बे घोड़ा नी बेहे ।

एक सवार दो घोड़ों की सवारी नहीं कर सकता ।

जब दो कार्य एक व्यक्ति संभालने की अवस्था में नहीं होता तब यह कहावत कही जाती है ।

१०० ए ते खेती हाथे हारा खेल हैं, बीज़े झूठी वात हारी ।

ये तो खेती के साथ सारे खेल हैं, दूसरी सारी बातें झूठी हैं ।

खेती अच्छी फलने की अवस्था में ही सुख मिल सकता है ।

१०१ एवां आवी लाग है रगे टगे ।

अब बहुत समीप आ लगा है ।

किसी के शीघ्र ही आ जाने के लिये यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

१०२ एवां मोरे जाई ने घणूं खाहें करम ने कूला हाथें हैं

अभी आगे जाकर अधिक कैसे खाने को मिलेगा ? भाग्य के साथ कष्ट तो लिखा ही है ।

१०३ एवां हूँ अक्कल आवे रेईग्यो ढोर नो ढोर ।

अब क्या बुद्धि आयेगी यह तो पशु का पशु ही रह गया ।

लम्बे समय में भी जब कोई अपना सुधार नहीं कर सकता तो आगे के लिये अविश्वास-सूचक-इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

१०४ ओछी वाणी कणाये नो केवी ।

ओछी (बुरी) लगने वाली बात किसी को नहीं कहनी चाहिये ।

१०५ ओवानूं ज़्यो ते थाई ग्यू एवा हूं थावान ।

होने का था सो तो होगया-अब क्या होने का है । अर्थात् काम बिगड़ने के बाद प्रयत्न व्यर्थ है ।

१०६ ओसान बड़ी चीज है।

ध्यान बड़ी वस्तु है।
काम करने में सदा हर बात का ध्यान रखना चाहिये।

१०७ कड़यूं जटे ते कोली ने भारु जटे कड़यूं।

घास का छोटा बण्डल एक हाथ में आजाय उतना एक कोली। इस प्रकार ५ कोली का एक 'कड्यं'। इनकड्यु का 'भारु' बड़ा बण्डल बनता है जो सर पर लादा जा सकता है।

अधिक उपज के स्थान पर कम उपज होने की अवस्था में यह कहावत कही जाती है।

१०८ कडुवा मांये मीठू है।

कडुवे में मीठा है।
कष्ट में ही सच्चा सुख निहित है।

१०९ कण कण भेलो कीदे कोटी भराय।

कण कण एकत्रित करने से कोठी भरती है।
थोड़ा २ संग्रह करने से एक बड़ा संग्रह होजाता है।

११० कणये दबावी ने बात नी करवी।

किसी को दबा कर बात नहीं करनी चाहिये। क्यो कि दबाव से किसी के मन का स्पष्टी करण नहीं होता।

१११ कणानी हाँची झूठी ने करवी, कणांक नु गेर नेंकली जाहें।

किसि की सच्ची-झूठी नहीं करनी चाहिये। इससे किसी का घर तक बरबाद होजाता है।

११२ कणानूं चोरु ने कणाये दोरु आवे।

किसका लड़का और किसकी कठिनाई।

एक के कार्य में जब कोई अन्य कष्ट उठाता है, तब यह कहावत कही जाती है।

११३ कणा ने मूंडे नी लागवू, मनाव ने मूंडा मांये जीम आबे जीम बोली जाये।

किसी के मुँह नहीं लगना चाहिये क्योंकि मनुष्य जैसा मुँह में आवे वैसा बोल देता है।

११४ कणां भड़े बँधाई ने ने बोलवो, मोरलाये जोर लागे।

किसी को पास में बंधा कर नहीं बोलना चाहिये अर्थात उसका अनुचित पक्ष नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे उसको बल मिलता है और वह अनुचित कार्य कर बैठता है।

११५ कपाली कपाली मत न्यारी है।

विभिन्न व्यक्ति की विभिन्न राय होती है। "मुण्डे २ मतिर्भिन्ना"

११६ कमाई करवी ते एक दन करवी जे जमारो भूख भागी जाये ।

कमाई करनी तो एक दिन करनी, जिससे उम्र भर की भूख मिट जाय। अर्थात् लाभ एक साथ उठाना चाहिये।

चोरी करने पर माल कम मिलता है, तब भी इस कहावत को प्रयुक्त किया जाता है।

११७ करवा वाला तो कीदूं, चोरां ना गाबड़ा अमलाना ।

करने वालों ने तो (कर्ज) किया किन्तु बाद में लड़कों को आपत्तियाँ सहनी पड़ी।

अपने बच्चों का ध्यान रखते हुए किसी को कर्ज दार नहीं बनना चाहिये।

११८ करवू तो राम नू ने केवू आपणू ।

करना राम का और कहना अपना।

ईश्वर से प्रार्थना करने के सिवाय हमारा ओर कोई बस नहीं चलता।

११९ करसो काम-धारी है, धारे जतरो करे ।

किसान काम करने वाला है, जितना चाहता है उतना करता है।

१२० करसो हाथे कमावे वाणन्या ना बेटा हारू ।

किसान अपने हाथ से कमाता है परन्तु बनिये के पुत्र के लिये।

किसान की कमाई बनिये के पास जाती है; जिससे बनिया भी काम में नहीं लेकर अपने पुत्रों के लिये छोड़ जाता है।

१२१ करे चाकराई सो करे ठाकराई ।

जो काम करता है, वह ठकुराई करता है। अर्थात् योग्यता से सेवा कार्य करने वाला समय पड़ने पर बड़ा बन सकता है।

१२२ काका नी खाटकाई खावा हारु हाराई आँखां में खटके

काका की सम्पत्ति को खाने के लिये सब की आँखे लगी रहती (आँखों में खटकती है) है।

काका हाथ केड़ा नी वलावणा ।

चाचा के द्वारा जाते हुए बछड़ों को पीछे नहीं फिरवाना चाहिये।

बुजुर्ग लोगों से नीचे दर्जे का कठिन कार्य नहीं लेना चाहिये। ऐसा स्वयं का कार्य स्वयं को ही करना चाहिये।

१२४ कागलो कोयल एक वरण कूंण कणये कै ।

कौआ और कोयल एक ही रंग के हैं तो कौन किसको कह सकता है।

अच्छा व्यक्ति भी बुरे व्यक्ति के वेष में रहता है तो दोनों एक दूसरे को कुछ नहीं कह सकते।

१२५ काचू, कटोरा, नेण, धन, मन, मोती फूटे टूटे ज्यांका सान्धा नी लागे।

काच, बड़ा प्याला, आँख, धन, मन और मोती के टूट जाने या फूट जाने पर इनके जोड़ नहीं लग सकती।

१२६ काचे घड़ूल्ये पानी नी ठेरे।

कच्चे मिट्टी के घड़े में पानी नहीं ठहरता है।

अच्छी राय जब कोई साधारण व्यक्ति स्वीकार नहीं करता है; तब यह कहावत कही जाती है।

१२७ कातीनू हगरधू हारु काम आवे।

कार्तिक माह का संग्रह किया हुआ सब काम आता है।

१२८ कानां माये कइ बांदरा मूत्या है।

कानों में क्या बन्दरों ने मूत्र त्याग किया है।
आवाज देने पर भी किसी के नहीं सुनने पर यह कहावत कही जाती है। :-:

:-: ऐसी मान्यता है कि बन्दर का मूत्र कानों में जाने से आदमी बहरा होजाता है। प्रयोग कर्ताओं के लिये यह विचारणीय है।

१२९ काम करवू आपणा हाथ में है, आलूवू राम ना हाथ में है।

काम करना अपने हाथ में है, फल देना ईश्वर के हाथ में।

हमें काम का फल ईश्वर के भरोसे छोड़ कर ही काम करना चाहिये।

१३० काम करो जोइ वचारी ने करो।

सोच-विचार करही काम करना उचित है।

१३१ काम मां काम नी वदावणो।

काम में काम नहीं बढ़ाना चाहिये। अर्थात् हाथ में लिये हुए काम को नहीं बढ़ाकर उसे शीघ्र ही समाप्त कर देना चाहिये।

१३२ काम मोटो है नाम मोटो नी।

काम बड़ा है, नाम नहीं।

कार्य से ही किसी व्यक्ति का महत्त्व आंका जाता है।

१३३ काला कोहां जावो हैं।

काले कोस जाना है। बहुत लम्बा मार्ग तय करने के लिये यह कहावत कही जाती है।

१३४ काली राते काला तल खादां हैं, जे एवां पूरा करवा है।

काली रात्रि में काले तिल खाये, जिये अभीपूरा करना है।

किसी का कष्ट पूर्ण कार्य जब स्वीकार करना ही पड़ता है; तब यह कहावत कही जाती है।

१३५ कालो हांप आड़ो आयो है।

काला सांप सामने आगया है।

अप शकुन होजाने पर यह कहा जाता है।

१३६ कुल की मांये कण नी ने कागा भाय नूतू।

कुलहड़ी में तो कण भी नहीं है और कहता है कि मैं कौए भाई को निमन्त्रित करुं।

अन्न के बिना भोज नहीं हो सकता।

१३७ कूड़ा मांये उतारी ने नेज वाड़ दी।

कुए में उत्तार कर रस्सी काटदी।

विश्वास घात करने पर यह कहावत कही जाती है।

१३८ कूतरा काच भालल्यू, भची मुवो दन्या मांय।

कुत्ते ने काच देखा तो संसार भर में भोंकता भोंकता मर गया।

मूर्ख व्यर्थ की बातों से दुःख उठाते हैं।

१३९ कूतरा माते कूतरा पाड़ी ने चेटी हरकी जाहें।

कुत्ते पर कुत्ता डाल कर हट जावेंगे।

आपस में लड़ा कर दूर चले जाने वाले के लिये यह कहावत कही जाती है।

१४० केई बाया नो कांकणियाँ नो मेल खादो है ।

कई स्त्रियों के कंकण का मेल खाया है ।

रोटी बनाते समय कंकण आटे से छूते हैं, जिससे उनका मेल आटे में छूटता है ।

२४१ केते खाये मोट पणाये, कै खाये वैर पणाये ।

कै खाये मान पणाये, तीन वाते चोड़ दिये ते ।

वो है देव पणाये मांय ॥

मनुष्य बडप्पन की भावना से, दूसरों की शत्रुता से, और अभिमान की भावना से आलस्य वश ही दुःख पाता है एवं नीचे गिरता है, तीनों को छोड़ने पर वह देव स्वरुप होता है ।

१४२ के ते चोतो हूनू करे के करे हांनो ।

या तो चूना सूनापन पैदा कर देता है या फिर सोने जैसा सम्पत्ति शाली । अर्थात् मकान बनवाने से या तो घर का नाश हो जाता है या घर सम्पन्न बन जाता है ।

घर बनवाने का कार्य सोच समझ कर प्रारंभ करना चाहिये ।

१४३ के ते धन धणी खाये, कै धन धणीये खाय ।

धन का स्वामी धन का उपयोग करता है, नहीं तो फिर धन पड़ा रहने से वह स्वामी को खाजाता है ।

धन का उपयोग समय पर ही करना चाहिये नहीं तो उसकी चिन्ता बनी रहती है और वह चिन्ता ही मनुष्य के लिये घातक हो जाती है।

१४४ के ते भार मांज झेले ने, कैं जमी झेले।

या तो भार मां ही उठाती है या जमीन ही।

मां को पुत्र के लिये बहुत कष्ट उठाना पड़ता है।

१४५ केरकते हकत्यां दकत्यां आवी न ज़ोवो।

कभी तो सुख-दुःख में आकर देखो।

घनिष्ट व्यक्ति के बराबर सुख दुःख में किनारा काटते रहने पर यह कहावत कही जाती है।

१४६ केल कांटा नी हूँ परीत।

कैल और कांटे की आपस में क्या प्रीत ?

कांटा केल के पत्तों को छेद देता है। साथ नहीं रह सकने वाले मनुष्यों को साथ रखना मूर्खता है

१४७ कै हारा भण करे जी कूंण।

कहते सब हैं किन्तु करने वाले कौन हैं ?

कहना आसान है पर करना कठिन।

१४८ क्रोध राखवो रात दाड़ो खाय।

क्रोध मनुष्य को रात दिन खाता है।

१४९ कोड़े जो काम आवे, होना नी लंकाचे टीहै ।

पास हैं वही काम आता है, सोने की लंका दूर है ।

१५० कोयल कागलो एक रंग, बोल्या खबर पड़े ।

कोयल और कौवे का एक ही रङ्ग होता है, बोलने से उनका भेद प्रकट होता है ।

१५१ खटके कणाने ने, खटकारे कणाये ।

दुःख किसी से होता है और दुःख दिया किसी को जाता है ।

दुःख देने वाले को उसका बदला चुका कर किसी अन्य को कष्ट दिया जाता है तो यह कहावत कही जाती है ।

१५२ खपटां करे जो करे ।

क. षड़यन्त्री होता है, वही षड़यन्त्र करता है ।

ख. दूसरों पर आई लड़ाई को स्वयं लड़ने वाले कम होते हैं ।

१५३ खरो खोटो राम जाणें ।

अच्छा बुरा तो ईश्वर ही जानता है ।

अच्छे बुरे की पहिचान करना कठिन होता है ।

१५४ खांखरा नी खली, हूं जाणे हग ना हवाक ।

पलास की गिलहरी डाल पक आम के स्वाद को क्या जाने ?

निम्न श्रेणी का व्यक्ति उच्च श्रेणी की वस्तु का अनुभव नहीं रखता ।

१५५ खांडया भेंडया घराड़ो घाले, हींगालल्या ना हींग भागे ।

बिना सींग वाले बैल और मुड़े सींग वाली गायें सहायता के लिये जोर की आवाज करती हैं और सींग वालों के सींग टूटते हैं ।

साधन हीन व्यक्ति अपने संकट काल में साधन सम्पन्न व्यक्तियों को लड़ा कर साधन हीन कर दिया करते हैं ।

१५६ खाई खोयो माहले रेई ने रोयो ।

खा कर खो दिया और पीछे रह कर रोया ।

बिना विचारे खर्च कर देने से बाद में पछताना पड़ता है ।

१५७ खाऊं ते खाड़ो पड़े, नी खाऊं तो रोड़ी वले ।

खाता हूँ तो कमी पड़ती है और नहीं खाता हूँ तो रोड़ी (संग्रह) बन जाती है ।

नहीं उपयोग में लाने पर कोई वस्तु नष्ट होती हो तो उसे उपयोग में लाने से नहीं डरना चाहिये ।

१५८ खारड़ा मां कांटो भील मां आंटो हदा रे ।

जूते में कांटा और भील में वैर भाव सदा रहता है ।

पहाड़ी स्थानों में कांटे बहुत होते हैं, जो लोगों के जूते में फँस जाते हैं ।

१५९ खाटा तोरा मदड़ा पीवा मरदां ना काम है।

खट्टा, तुआ मद पीना मर्दों का काम है।

भला बुरा सभी प्रकार का काम डरपोक व्यक्ति नहीं कर सकता।

१६० खात पाड़ी ने खोटी थाद्या

१—चोरी के लिये दीवार में सेंध लगा कर व्यर्थ ही समय खोया।

२—ऊसर खेत में खाद डाला, व्यर्थ ही गया।

परिश्रम करने पर भी जब सफलता नहीं मिलती है, तब यह कहावत कही जाती है।

१६१ खादे भूख जाये दीठे भूख नी जाये।

खाने से भूख मिटती है, देखने से नहीं मिटती।

१६२ खान्यो खांद दिये ते खाइन जाय-खवड़ावीने ने जाय।

मरे हुए व्यक्ति को कोई कन्धे उठा कर यथा स्थान लेजाने में योग देगा तो मृत्यु-भोज को खाकर जायगा कुछ खिला कर नहीं।

कोई कुछ आशा में ही कार्य करने को तय्यार होता है।

१६३ खाये जो जी खाये नी तो खाये हाये।

खाया गया भोजन पचता नहीं है तो खाते क्यों हैं?

एक बार खाये गये भोजन के पचने के बाद ही पुनः भोजन करना चहिये।

१६४ खाये ते डाकण नी खाये ते डाकण।

खाये तो डायन और नहीं खाये तो भी डायन।

बुरा व्यक्ति बुराई नहीं करने पर भी बुरा ही समझा जाता है।

१६५ खाल जणाज ना हेवा।

चमड़ी उसी की सीवण।

किसी का बन कर उसी को सताना उचित नहीं।

१६६ खालडां नी लाड़ी खाएड़ा नी पूजा।

बुरे स्वभाव की बहू से ताड़ना द्वारा ही काम लेना सम्भव समझा जाता है। अर्थात् बुरे स्वभाव का व्यक्ति पीटने-धमकाने से ही काम देता है।

१६७ खाली तजारा माजे चोकी।

रीते छिलकों पर पहरा। अर्थात् साधारण वस्तु पर कड़ी निगरानी रखना मूर्खता है।

१६८ खाधानी ते बग पड़े ने मोटी मोटी वात करें

खाने के तो लाले पड़ते हैं और बड़ी २ बात बनाता है।

आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने पर भी जो बढ़कर बातें बनाता है उसके लिये यह कहावत कही जाती है।

१६९ खावा नी वेला अग्गो, काम नी वेलां पाचो।

खाने के समय आगे और काम के समय पीछे। आनन्द चाहने वाले किन्तु आलसी व्यक्ति के लिये यह कहावत कही जाती है।

१७० खीमला खीमला खीर मीठूं, खाये जणाये खबर।

खीमले, खीमले खीर मीठी तो खावे उसको पता है।

वास्तविक उपयोग के बिना वस्तु के गुण दोष नहीं जाने जा सकते। किसी वस्तु का उपयोग नहीं करने वाले को उस वस्तु के गुण-दोष पूछना मूर्खता है।

१७१ खूंटे हार गले बीजो हूँ करे।

अलगनी पर पड़ा २ ही हार गलता है तो दूसरा क्या कर सकता है।

कहावत का आधार शनिजी की कथा है।

जिसमें दुर्भाग्यवश अलगनी हार निगलती है।

किसी की दुर्भाग्य के कारण अथवा ईश्वरीय-कोप से हानि हो तो दूसरा क्या कर सकता है?

१७२ खेतां मांय हाल़ कराल़, घेर मांये रांड लडाक खल़ॉ मांये ताण पराऩ।

खेत में गहरा बैठ जाने वाला हल है। घर में झगड़ालू स्त्री है और खलिहान में खराब धान की भूसी हाथ से अलग करनी पड़ती है।

दुःखी किसान के लिये यह कहावत कही जाती है।

१७३ खेती कणाये नी पूगवा दिये ।

खेती किसी को नहीं पहुँचने देती अर्थात् दूसरे धन्धों की अपेक्षा खेती करना सब से अधिक लाभप्रद समझा जाता है ।

१७४ खेती नो खाड़ो खेती की देज भराय है ।

कृषि से उत्पन्न होने वाली सामग्री की कमी कृषि करने पर ही पूरी हो सकती है ।

१७५ खोटा ना खटका मसाणा माते निकले ।

बुरे व्यक्तियों के बदले उनके मरने पर शमशान में लिये जाते हैं । अर्थात् —

बुरे व्यक्तियों के मरने पर बहुत कम व्यक्ति उसके अन्तिम-संस्कार में सम्मिलित होते हैं और श्मशान में उसकी निन्दा करते हैं ।

१७६ खोटा नू खरु करे जणां नो नाम आदमी ।

बिगड़े का बनाने वाला अथवा बुरे को भला बनाने वाले का नाम ही आदमी है ।

१७७ खोटो खरी वगत मां काम आवे ।

बुरा समझा जाने वाला कभी कठिनाई में काम देता है । अर्थात्-

बुरा समझ कर किसी की अवज्ञा नहीं करनी चाहिये ।

१७८ खोड़ीया ढीला मेलो अदर अदर फरग्ये काम ने चाले ।

कन्धे ढीले करो, धीरे २ आराम के साथ घूमने से काम नहीं चलता है ।

१७९ खोतरे ज्योत पड़े, वावे जो लणे ।

खोदेगा सो पड़ेगा और बोवेगा सो काटेगा ।

बुरे काम का फल बुरा और अच्छे काम का फल अच्छा, उसके कर्ता को मिलता है ।

१८० गड्डा टाल ते गामनी ने खेड़ा टालते वैरनी ।

वृद्ध मुखिया के बिना गाँव नहीं और वर्षा कुछ दिन के लिये रुक रुक कर हुए बिना वर्ष नहीं (फसल नहीं) ।

वृद्ध मुखियों से गाँव की पूछ रहती है और वर्षा के कुछ दिनों के अन्तर देकर होती रहने से फसल अच्छी होती है ।

१८१ गडड् ते मरे खोजे, मोट क्यार मरे लाजे ।

वृद्ध अपनी आदत से मरते हैं किन्तु बड़े अपनी लज्जा से ।

आदतवश किसी को ऐसा कार्य नहीं करना चाहिये, जिससे दूसरों को दुःख हो ।

१८२ गंडकडं हूँ गोठी पणा चे.नाल ना हूँ संग ।

कुत्ते से (दुष्ट व्यक्ति से) क्या मित्रता और छन्याल (कुलटा स्त्री) का क्या साथ ।

उपर्युक्त दोनों से दूर रहना उचित है।

१८३ गडू जोई ने गुण ते घाल्यू, तो काम आघूं।

बुढ़े को देखकर उसे शक्तिहीन एवं निकम्मा समझ कर भी बैल के गुणते में डाला तो काम आगया।

बुड्ढे शक्तिहीन किन्तु बुद्धिमान समझे जाते हैं।

१८४ गढ़ गली भराणी, भीलड़ी धादी।

'घेड़' जैसे छोटे बर्तन के नाज से भर जाने पर भी भीलड़ी अपने को तृप्त हुई समझती है और गर्व युक्त उत्तर देती है।

निर्धन थोड़े धन की प्राप्ति से ही अपने को धनवान समझ कर गर्व करने लगते हैं।

१८५ गधेड़ा ओले ढाही बांदी वे भोंकने लागी।

गधे के पास गाय बांधी तो वह भी रेंकने लगी।

बुरी आदत वाले का असर उसके पास वाले पर भी पड़ता है।

१८६ गन्धी देहीना हूँ भरोसा।

गन्दे शरीर का क्या विश्वास। क्यों कि यह नाशवान है।

१८७ गमेती ने हाथ में कात, नी आवे रली गाय नी वात।

सरकार द्वारा नाम जद गांव के मुखिया के हाथ में कार्य होता है तो गांव की व्यर्थ बात को लेकर कोई व्यक्ति उसके पास नहीं जाता है। क्यों कि वह दूसरों से करवा कर अपना कार्य हलका करता है।

अपना काम निकलवाने का इच्छुक ही कोई व्यक्ति दूसरे को अपनी सहायता देता है ।

१८८ गरज जतरे नोकर, गरज मटे ने दियो ठोकर ।

स्वार्थ रहने तक नोकर और स्वार्थ पूरा होते ही लगाओ ठोकर ।

नोकरी मालिक के स्वार्थ पूरा होने तक ही रहती है ।

१८९ गरज पड़्यॆ थारूर मारू करवो पड़े ।

काम पड़ने पर तेरा–मेरा कर इधर–उधर से कुछ माँग कर काम चलाना पड़ता है ।

१९० गरज बावली है, आदमी बावलो नी है ।

स्वार्थ (काम) बावला होता है, मनुष्य नहीं ।

१९१ गरज मटी ने गूजरी नटी ।

स्वार्थ पूरा हुआ और गुजरी ने इन्कार किया ।

कृष्ण भगवान को बाद में 'दाण' (कर) चुकाने का वचन देकर एक 'गुजरी' बिना 'दाण' चुकाये चली गई । बाद में आने पर 'दाण' चुकाने से मना कर दिया ।

१९२ गरजे गदेड़ा ए बाप केवी हें ।

काम निकालने के लिये गधे को भी बाप कहना पड़ता है । अर्थात्–मूर्ख को भी समझदार की तरह सम्बोधित करना पड़ता है ।

१६३ गलियो लागे जो गोल नी, खारी लागे जो खांड ।

मीठा लगने वाला गुड़ नहीं और खारी लगने वाली शक्कर है ।

संसार में जो जैसे दीखते हैं, और अपने को वैसा कहते हैं; वास्तव में वे वैसे नहीं होते ।

१६४ गांटे मौत लेई ने फरे—जणांये हूँ करवो ।

जो व्यक्ति गांठ-साथ में मौत लिये घूमता है अर्थात् 'हेंकड़ी' झूठी आन में सदा मरने के लिये तय्यार रहता है, उसके बचने का कोई उपाय नहीं किया जा सकता ।

१६५ गांम मांये घेरनी, उजाड़ मांये खेती नी ।

गांव में घर नहीं, उजाड़ में खेती नहीं, मुँह में दांत नहीं और दूसरे की जमानत चाहता है ।

जमानत, घर, खेती अथवा कम कर धन पुनः चुकाने की शक्ति होने पर ही मिलती है ।

१६६ गाड़ा पाड़ा ना हूँ भरोसा, वाटे रात राखे ।

गाड़ियाँ और भैंसों की सवारी का क्या विश्वास ? इनके कारण कभी रास्ते में ही रात बितानी पड़ती है ।

१६७ गाड़ी भरी ने बो घू, ने टोपी भरी ने लाद्या ।

गाड़ी भर कर बोया और टोपी भर कर लाये ।

भीन क्षेत्र में मुसलमान (जो यहां टोपी लगाते हैं) कृषि कार्य के उपयुक्त नहीं समझे जाते ।

आयोग्य व्यक्ति के खेती बिगाड़ देने पर यह कहावत कही जाती है ।

१९८ गादा मांये जाणी ने पड़े ते फचड़का उड़ेज ।

कीचड़ में जान कर गिरेंगे तो उसके छींटे अवश्य उछलेंगे ।

जान बूझ कर मूर्खता से कोई कार्य किया जायगा तो परेशानी अवश्य होगी ।

१९९ गारेना गड़ग्रा कल़ ग़ल़ग्राना है ।

मिट्टी के बने हुए बर्तन नष्ट होने को है ।

शरीर को नाशवान बताने के लिये यह कहावत है ।

२०० गिया जो ते हारा जांणे, आवे जी कोना जाणे ।

गये सो सब जानते हैं किन्तु आने वालों को कोई नहीं जानते ।

भूत काल की बात जानी जा सकती है किन्तु भावी की नहीं ।

२०१ गिया जी पाचा नी आवणा ना ।

गये अर्थात् मर गये सा पीछे नहीं लौटने के हैं ।

२०२ गुणनो तो वन भलो को गुण नो मनख खोटो ।

गुण युक्त वन अच्छा है किन्तु दुर्गणी मनुष्य बुरा ।

२०३ गुण लारे पूजा ।

किसी की पूजा अर्थात् मान-सम्मान गुणों के कारण होता है ।

मनुष्य के गुणवान होने पर उसका मान-सम्मान होता है ।

२०४ गुवाल नी वात दोवा वाली जांणे।

ग्वाले के काम की बात दूध निकालने वाली ही जानती है।

जिस कार्य-कर्ता के काम से जिसका सम्बन्ध होता है; उस कार्य-कर्ता के काम की बात वही जानता है।

२०५ गोटी पणा मांये गोडा रगड़वा पड़े।

मित्रता में कठिन सहायता कार्य भी करना पड़ता है।

२०६ गोलान मूंडे गएनू दिये, दन्न्या मूडे हूँ दिये।

छाछ विलोने के घड़े मिट्टी के बर्तन का मुँह कपड़े से बांधा जा सकता है किन्तु संसार का मुँह नहीं।

लोगों में फैलती हुई बात को रोका नहीं जा सकता।

२०७ घड़वा वाला ए दोरुं नी आय्यू, तोय हूं दोरु आवे।

बनाने वाले को कठिनाई नहीं हुई तो तुमको क्या कठिनाई होती है?

किसी विकृतांग को देख कर जब उसकी हँसी उड़ाई जाती है, तब यह कहावत कही जाती है!

२०८ घड़ी नो घड़ूल्यो पैदा नहीं करवो।

घड़ी में बर्तन नहीं घड़ना चाहिये।

अर्थात् काम में बहुत शीघ्रता करना अनुचित है।

२०९ घड़ी पलक नी ते खबर नी, ने करे काल नी वात ।

घड़ी और पल की तो खबर ही नहीं और कल की वात करते हैं।

किसी कार्य को तत्काल करने तथा दूसरे दिन पर उसे नहीं छोड़ देने के लिये इसका प्रयोग होता है।

२१० घणा ग्या ने थोड़ा रेग्या है ।

बहुत बीत गया, अब थोड़ा ही रह गया है।

थोड़े शेष समय के लिये घबराना नहीं चाहिये।

२११ घणाजी घणा भूंडा ।

बहुत व्यक्ति मिल कर काम को बहुत खराब कर देते हैं।

२१२ घणां दाड़ा गलका कीदा भण खरां खोटा ना पार आज हैं ।

बहुत दिन आनन्ददायक भोजन किया किन्तु तुम्हारी अच्छाई बुराई की जांच आज ही होगी।

किसी से बहुत दिन लाभ उठाने पर जब उस लाभ उठाने वाले को कार्य की कसौटी पर कसा जाता है; तब यह कहावत कही जाती है।

२१३ घणा नाड़ा तोड़्या जेरा घरान आलो बांध्यो ।

परिश्रम द्वारा बहुत नसें तोड़ी तब घर में आवश्यक सामान का प्रबन्ध हुआ।

अर्थात् परिश्रम करने से घर की स्थिति सुधरी।

२१४ घणा वाला ए घणा रोये ।

अधिक धनवान को अधिक आपत्तियाँ उठानी पड़ती हैं ।

२१५ घणा वाला ए घणों दुःख ।

अधिक धन वाले को अधिक दुःख होता है ।

२१६ घणी चतराइ घणी भूंडी ।

बहुत चतुराई बहुत खराब है ।
क्योंकि यह अन्य व्यक्तियों को बुरी लगती है ।

२१७ घणी दालीदराई दुख दियेज हैं ।

अधिक दरिद्रता दुःख देती है ।
अर्थात् आलस्य से दरिद्र बनना उचित है ।

२१८ घणू आले ते मेलू क्या, थोड़ू आले ते जाउं क्यां ?

बहुत दे तो रखने को स्थान नहीं और थोड़ा दे तो अन्यत्र निर्वाह के लिये जाने का स्थान नहीं ।

अपनी वर्त्तमान स्थिति को ही बनाये रखने के लिये यह कहावत कही जाती है ।

१२९ घणू बोले ने घणू खाये ज्यो कई काम थोड़ू करे ।

बहुत बोलने वाला और बहुत खाने वाला निकम्मा समझा जाता है ।

२२० घणो करे, थोड़ो करे आपणे आपणे घेरनू वोज पूरी पाड़े, बीजू कोनी पाड़ ।

अधिक काम करे या कम काम करे पर अपने अपने घर का निर्वाह वही करता है दूसरा कोई नहीं करता।

जैसे तैसे जो व्यक्ति अपने घर का काम चलाता है, उसके साथ समझोता करने पर यह कहावत कही जाती है।

२२१ घणो गाजे जो थोड़ो वरे ।

बहुत गरजने वाला बादल थोड़ा पानी बरसाता है।

अधिक आडम्बर रचने वाला कम काम करता है।

२२२ घणो हमझणो धूल खाये ।

अधिक समझदार माना जाने वाला धूल खाता है। अर्थात् भूल करता है।

२२३ घरना गोदा ने घरना जोदा, जणानी खेती ।

घर के नये मजबूत बैल और घर के मजबूत व्यक्तियों से ही खेती सफलता के साथ हो सकती है।

२२४ घरनी ते घट्टी चाटे, उपाद्यो कै पोय चपटी ।

घर की तो घट्टी चाटती है और मांगने वाला ब्राह्मण कहता है कि मुझे आटा दे।

अत्यन्त निर्धनता में दान नहीं दिया जा सकता।

२२५ घरनो दीवो करी ने जाणे, डूंगरे देव लगाड़े ।

घर का दीपक जलाना तो जानता ही नहीं, और पहाड़ में आग लगाता है ।

घर की कठिनाइयों को दूर नहीं कर जो बाहर के लिये ही प्रत्नशील रहता है, उसके लिये यह कहावत है ।

२२६ घर मांये उन्दरा ग्यारस करे ।

घर में चूहे एकादशी करते हैं ।

यह कहावत बहुत ही गरीबी की द्योतक है ।

२२७ घरां घरां ने गामा गामा कणको खोड़ती है ।

घरों घरों और गावों गावों में जूठा अन्न बीनती है ।

अस्थायी प्रवृत्ति और बुरे चाल चलन वाली स्त्री के लिये उपयुक्त कहावत कही जाती है ।

२२८ घी दूध नजराँना, धान खोड़्यानू ।

घी दूध देखते रहने पर और धान परिश्रम करते रहने पर ही मिलता है ।

पशुओं की देख भाल कर घी दूध प्राप्त करने और खेती में परिश्रम करने के लिये यह कहावत कही जाती है ।

२२९ घी बगर चूरमूं ने केवाय ।

जिसमें घी नहीं हो, वह चूरमा नहीं कहलाता ।

२३० घेरनो खूंणो तो चोड़ेह नी, ने गांम में गमेताई करे ।

घर का कौना तो छोड़ता ही नहीं है और गाँव में मुखिया (गमेती) का कार्य करने चला है !

एक ही स्थान पर बैठ कर जो केवल बातें करता रहता है; उसके प्रति इस कहावत से असंतोष प्रकट किया जाता है ।

२३१ घेर लुगाई नूं है; आदमी नुं नी ।

घर स्त्री का माना जाता है, आदमी का नहीं ।

२३२ घेर विवा, बऊ पीपला वीणे ।

घर पर विवाह है और बहू पीपले बटोरती है ।

आवश्यक कार्य को पहले करना चाहिये ।

२३३ घोड़ाऊं नी पूगे ते गदेड़ा ना कान आमले ।

घोड़े से वस नहीं चलता है तो गधे के कान मरोड़ना है ।

शक्ति शाली से सामना करने की सामर्थ्य नहीं होने पर जो व्यक्ति दुर्बल को सताता है उसके लिये यह कहावत कही जाती है ।

२३४ घोड़ा गदेड़ा नी मोंड़ा आगेवणां जाओ ।

घोड़े और गधे के मुँह आगे जाने से (उनके सींग नहीं होने से) किसी बात की आशंका नहीं ।

जहाँ हानि कर वस्तु नहीं, वहाँ उस वस्तु से उत्पन्न हानि नहीं हो सकती ।

२३५ घोड़ानी लगाम घोड़ा वाला ने हाथ में ।

घोड़े की लगाम घोड़े वाले के हाथ में है तो वह घोड़ा अपनी इच्छानुसार कहीं जा नहीं सकता ।

काम करने वाले की इच्छानुसार नहीं वरन् काम लेने वाले की इच्छानुसार होता है ।

२३६ घोड़ाये नी रोवु है, घोड़ा नी चाले रोवू है ।

घोड़े को नहीं रोना है, उसकी चाल को रोना है ।

जिस प्रकार घोड़े की पहिचान उसकी चाल से होती है उसी प्रकार मनुष्य की पहिचान उसकी बुद्धि से ही होती है ।

२३७ घोड़ा लोड़ानू मोल नी ।

घोड़े और लोहे की वस्तु का मूल्य आंकना कठिन होता है ।

२३८ चाणी ने पीये ते कहें ने चोटे ।

छान कर पीने से कुछ नहीं चिपकता ।

सोच विचार के साथ पूर्व तय्यारी से काम करने पर उसमें रुकावट नहीं आती ।

२३९ चाती माते चोगू है ।

विवाह का तुर्रा दुल्हे के सर पर नहीं सीने पर माना जाता है ।

विवाह की आन्नद दायक बातें दुल्हे के लिये कष्ट प्रद समझी जाती हैं । क्योंकि उसके व्यय का भार उस पर पड़ता है ।

२४० चाना माना जाओ, थारे मारे हूँ लेवू है।

चुपचाप जाओ, तुम्हारे-मेरे क्या लेना है ?

जब किसी के साथ कोई अकारण झगड़ने लगता है, तो यह कहावत कही जाती है।

२४१ चाने करवा हूँ घणी चौड़े आवे।

छिपाई जाने वाली बात अधिक चौड़े आती है।

२४२ चानो काम चोराये करावहो ते वो पोड़े घणो करहें।

गोपनीय काम लड़के से कराया जायगा, तो वह अधिक प्रकट करेगा।

२४३ चाबी ने खाये ते घोघले नी चोटे।

चाब कर खावे तो गले में नहीं अटके।'

बिना विचारे शीघ्रता से काम करने के कारण बाद में कष्ट होता है।

२४४ चाये जेम करी ने झाली बालो करवो है।

जैसे तैसे करके पानी मिला थोड़ा सा खा कर भूख शान्त करनी है।

खाने के लिये अनाज कम होने पर यह कही जाती है।

२४५ चाल चालो बवोरा री, ना आवे ना आवे पूंजी ने आल।

बंवोरा गांव की चाल (जहाँ के लिये प्रसिद्ध है कि आने वालों को उनके खर्चे से ही रखा जाता है) चलनी चाहिये–इससे पूंजी कुछ भी खर्च नहीं होती।

अपना कुछ भी खर्च न कर दूसरों के खर्ज से काम निकालने के लिये यह कहावत कही जाती है।

२४६ चालती गाड़ी मांये चाएनी नो हूं भार।

चलती गाड़ी में चलनी का क्या भार?

जहाँ कार्य बहुत साधारण होता है और उसके करने में विशेष कठिनाई नहीं होती, वहाँ इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

२४७ चाली नार नूं हूँ माखू, नार तो हाँड़ ना हॉड मारे।

शेर के लिये बकरी का क्या मारना? वह तो सांड के सांड मारता है।

शक्ति शाली के लिये साधारण बिगाड़ करना साधारण बात है।

२४८ चाली नू चरनार ने चिता नूं बेहनार।

बकरी का पत्ती चरना तथा चीते का उसी स्थान पर बैठना।

भक्ष्य और भक्षक एक ही स्थान पर अधिक दिनों तक नहीं रह सकता।

२४९ चतान सदा सुखी।

शैतान सदा सुखी रहता है।

२५० चेल चकी वाली वात है, थावू करवू तो कई ने।

शैलचिक्खी की बात है, स्थाई कार्य कुछ नहीं होता।

२५१ चोची खेती घरना धणिये खाय।

थोड़े स्थान पर की गई खेती घर के स्वामी को खा जाती है।

थोड़े पैमाने पर किये गये कार्य में शक्ति अधिक लगती है और लाभ पूरा नहीं मिलता।

२५२ चोरां वचे मोर पड़े।

चोरों के चोरी करने से पूर्व मोर उसे खा जाते हैं।

किसी के अनुचित लाभ उठाने से पूर्व जब कोई अन्य उस वस्तु को लेता है; तब यह कहावत कही जाती है।

२५३ चोटे वींचू थाइ ने, उतरे हॉप थाइ ने जणां हूँ करें।

बिच्छु बन कर चिपके और सांप बन कर उतरे उसका क्या किया जाय।

थोड़ी दुःख पूर्ण बात से भी जब बहुत दुःख उपजता है; तब यह कहावत कही जाती है।

२५४ चोटी चाकरी मांये सुख नी मलवानो।

छोटी सेवामें सुख नहीं मिलता।

नोकरी का कार्य ऊंची श्रेणी का या बड़े व्यक्ति का करना चाहिये।

२५५ चोड़ोजी चचून्दरी मारी ने पूमाइग्या।

'चोड़ोजी' छछून्दरी (एक प्रकार का जन्तु-गरीब) को मार कर गर्व से फूल गये।

साधारण सा कार्य कर डींग मारने वाले के लिये यह कहावत है।

२५६ चोपूं आये हक दिये, वणां दक नी देवो, अण बोलनी जात है।

जो मवेशी हमें सुख देते हैं, उनको दुःख नहीं देना चाहिये। नहीं बौलने वाली आत्मा है।

२५७ चोपो चार खाये जो दाद्यो नी रे ते मनख धान खाये ते वो कदा हाद्यो रे।

घास खाने वाला पशु सधा हुआ (अनुशासन में) नहीं रहता तो मनुष्य जो अन्न खाता है; कब सधा हुआ रह सकता है।

२५८ चोरे चे.नाल़ नी उल्टी रीती ।

चोर और छिनाल स्त्री की उल्टी रीति होती है ।

समाज के नियमों के विपरीत कार्य करते हैं ।

२५९ चोर चोवटिया नो घेर चोड़े देखाय ।

चोर और बाजार में बढ़ बढ़ कर बोलने वाले का घर स्पष्ट दिखाई देता है ।

२६० चोर ढोर ना हूँ भरोसा करवा ।

चोर और पशु का भरोसा नहीं किया जा सकता ।

२६१ चोर ना तो हो दाड़ा, धणी नो एक दाड़ो ।

चोर के सौ दिन और घर मालिक का एक दिन ।

चोर किसी न किसी दिन पकड़ा जाता है, तब सारी कसर निकल जाती है ।

२६२ चोर ना हतरे चे.कलां ।

चोर के १७ सत्तरह रास्ते हैं । अर्थात् चोर छूट जाने के लिये सतरह मार्ग जानता है ।

२६३ जगती मोटी के भगती ।

जमीन महत्त्व पूर्ण मानी जाती है अथवा भक्ति ।

भक्ति ही महत्त्व पूर्ण हैं; क्यों कि उसी के कारण स्थान विशेष का आदर होता है ।

२६४ जटे मरे जटे बले ।

जहाँ मरते हैं; वहाँ बलते हैं ।

मुर्दे को बहुत दूर स्थान पर नहीं जलाया जाता ।

२६५ जणा ने गेर मांल, जणा ने गेर काल नी ।

? जिनके घर खेत होता है; उनके घर अकाल नहीं समझा जाता ।

२ जिनके घर रहँट चलता रहता है, उनके यहाँ सिंचाई होती रहती है; इसलिये अकाल नहीं समझा जाता !

२६६ जतरु काम थावानू वतरु करवानू ।

जितना काम हो सके, उतना अवश्य करना चाहिये ।

२६७ जनावर हमजावणो हाऊ, मनख हम जावणो खोटू ।

जानवर को समझाना अच्छा है किन्तु मनुष्य को समझाना बुरा है ।

मूर्ख बड़ों की सीख नहीं मानते हैं और बड़ो को इसके लिये दोषी तक ठहरा देते हैं । ऐसी अवस्था में मूर्ख को सीख देना उचित नहीं होता ।

२६८ जमाना में जमी जेलू खोटी ।

बुरे समय में जमीन और कुलटा स्त्री दोनों बुरे होते हैं । क्योंकि दोनों के बचाव के लिये कठिनाइयाँ उठानी पड़ती है ।

२६९ जमाना हाई जूट नी बोले तो काम नी चाले।

समय के अनुसार झूट नहीं बोलते है तो काम नहीं चलता।

समय पर झूठ भी बोलना पड़ता है।

२७० जमारो ते रेवू ने, होच कीदे हूँ वे।

जीवन भर इसी तरह रहना है, तब चिन्ता करने से क्या होगा ?

स्थायी दुःख के लिये चिन्ता करना व्यर्थ है।

२७१ जमीनो बीज जमी नी खागी।

जमीन का बीज जमीन नहीं खागई।

बीज बोने पर कुछ बीज तो फलते ही हैं; इसी प्रकार बहुतों में कुछ मनुष्य तो अच्छे होते ही हैं।

२७२ जलमणा ने मरवाना मोरत नी है।

जन्म लेने और मरने का मुहूर्त नहीं होता।

दोनों कभी भी हो सकते हैं।

२७३ जवानी ना देखे रात ना देखे दाड़ो।

जवानी न रात देखती है और और न दिन।

यौवन के गर्व में मनुष्य को समय-असमय का ध्यान नहीं रहता।

२७४ जाई ने जोगी थावू तो जावू हाये ।

जाकर जोगी बनना तो जाने से क्या लाभ ?

जीवन में जोगी साधू बनना बेकार है ।

२७५ जात ने जाज जांणे जो करे ।

जाति और जहाज अपनी मनमानी करते हैं ।

जाति के विरुद्ध होने पर उसे मनाना कठिन होता है और इसी प्रकार डूबते अथवा बिगड़े हुए जहाज को पुनः ठीक अवस्था में लाना कठिन है ।

२७६ जुग तें तेड्या पण बेहवा नी जगा नी है ।

बहुत अधिक व्यक्तियों को निमंत्रित किया पर बैठने की जगह नहीं है ।

अपनी शक्ति के अनुसार ही लोगों को भोज में निमन्त्रण देना चाहिये ।

२७७ जोगी ढोली हीर कमांणा, खपपां खपरां बांट क्यूं ।

साधू और ढोली ने हिस्से दारी में खेती की तो आपस में केवल खप्पर खप्पर नाज बांटा ।

साधू और ढोली माँगने वाले समझे जाते हैं और खेती के योग्य नहीं समझे जाते । दो समान अयोग्य व्यक्तियों के

मिल कर कार्य करने पर जब कार्य लाभ दायक नहीं होता, तब यह कहावत कही जाती है।

२७८ जोणा वरे ने जोणा वले ।

घर के व्यक्ति खर्च करते हैं तो कमा कर भी लाते हैं।

जिस घर में सभी कमाई करने वाले होते हैं; वहाँ अधिक व्यक्तियों के होने पर भी घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ती नहीं।

२७९ डोकरद्ये डाकण मोट क्यारे चे नाल् कँज हैं।

बुढ़िया को डायन और युवा को कुचरित्र तो कहते ही हैं।

ऐसे कथन पर वास्तविकता की जांच किये बिना विश्वास करना उचित नहीं है।

२८० ढांकियां पूत नी मोटा थाये ।

ढंक कर रखे हुए पुत्र बड़े नहीं होते।

बचपन के प्रारंभ से ही जिनको सर्दी-गर्मी सहने का अभ्यास नहीं होता, वे कड़ी-सर्दी गर्मी नहीं सहन कर सकते।

२८१ ढाही तारे डोबी डुबावे, डोबी नूं पूंछड़ो नी हावूं ।

गाय तैरा कर पानी से पार निकाल देती है किन्तु भैंस डुबो देती है, इस लिये भैंस की पूंछ नहीं पकड़नी चाहिये।

२८२ तोंये राम खवड़ावे जेम खाजे ।

तुझे राम खिलावे, उस प्रकार खाना ।

दूसरों का अनुचित ढंग से लिया हुआ धन हानि कारक समझा जाता है ।

२८३ थारा हाटा, कुरी ना खाटा ।

तुम पहाड़ो छोटे धान की कट्ठी के समान हो ।

यह कहावत निकम्मे व्यक्ति के लिये कही जाती है ।

२८४ थूंके थूंके मांडा चौंपड़े ।

पानी के स्थान पर थूक लगाने से मांडा नहीं चिपकता ।

मांडा या मक्की की रोटी बनाते समय टूटने पर पानी के प्रयोग से पुनः बार २ चिपकाई जाती है ।

अधिक की आवश्यकाता होने पर थोड़े से ही काम चलाने का असफल प्रयत्न करने पर यह कहावत कही जाती है ।

२८५ दन्या ना ज़ूटा जगड़ां माय ने लागवू ।

संसार के मिथ्या प्रपंचों में नहीं पड़ना चाहिये ।

समय का सदुपयोग करने के लिये व्यर्थ की बातों में शक्ति का अपव्यय नहीं होना चाहिये ।

२८६ दन्या मांय को चक़त्यो नी है ।

संसार में कोई सुखी नहीं है ।

सबको दुःखी मान कर अपने दुःख में धैर्य धारण करने के लिये इस कहावत का प्रयोग होता है।

२८७ दारू है दगाखोर, दाये आवे तो पीवो नी ते राखो डीलते दूर।

मदिरा धोका देने वाली होती है क्यों कि पीते समय तो बड़ी प्रिय लगती है पर बाद में बिगाड़ करवाती है। यदि इससे होंशियार रह कर अपना बचाव कर सकें तो पीना चाहिये, अन्यथा शरीर से तक इसे दूर रखना चाहिये।

२८८ दुकड़ा बगर मोटा मोटा रूकाई जाय।

पैसे बिना अच्छे २ लोग भी अड़ जाते हैं-

पैसा सभी के लिये और प्रत्येक परिस्थिति में आवश्यक है। मेवाड़ी में इसी को यों कहा है :- "रुप्या पैसा हाणे तो राज-दरबार माणे" अंग्रेजी में- Money makes the mare go.

२८९ देश चोड़वानो पण वेश चोड़वानू नी।

देश भले छोड़ दिया जाय किन्तु पहनावा छोड़ना उचित नहीं।

परिस्थितियों वश स्वदेश छोड़ना भी पड़े तो उससे प्रेम के सूचक पहनावे का त्याग नहीं करना चाहिये।

२९० धरती माते भाटा जतरा देव कीदूं, पण कई उपाय ने लागी।

पृथ्वी पर जितने पत्थर थे सभी को देवता समझा, परन्तु अन्त में कोई प्रयत्न सफल न हुआ।

ऐसा लगता है कि जीवन की नश्वरता को लेकर यह कहावत कही गई है कि मृत्यु-घड़ी कोई नहीं टाल सकता। अन्यथा पत्थर पूजन व्यर्थ है, इसे आदीवासी नहीं मानते।

२६१ नया जतरे नक्ता, पचे नवी हगाई ने नवा नक्ता।

नवयुवक होने तक विवाह आदि विशेष आयोजन हैं, फिर तो अद्भुत सम्बन्ध और अन्तिम मृत्यु-भोज का नया नया आयोजन रह जाता है।

अनमेल-विवाह की असंगति की ओर इस कहावत में बड़ा मार्मिक व्यंग किया गया है।

२६२ नेवा निकडल्ये हूँ वे नदी नाला निकले हें, जेरों काल् निकल् हें।

खपरेल पर के कवेलुओं से बनी नालियों से जल बहने से क्या लाभ? उसी से नदी-नाले बहेंगे और तब अकाल दूर होगा।

कण कण से मन बनता है।

२६३ परथमी नो ने पाणी नो कइ हेड़ो थोड़ो है।

पृथ्वी और जल के प्रसार की सीमा नहीं समझी जा सकती।

पृथ्वी और जल के फैलाव, इनकी महत्ता और जीवन के लिये अनिवार्यता को दृष्टि में रख कर यह कहावत कही जाती है।

२९४ पांच जणा नी चौरी मांये हाथ दाईन ले जाये जीधणी ।

पांच व्यक्तियों की उपस्थिति में– चँवरीमें – जो हाथ पकड़ कर ले जावे, स्त्री के लिये वही पति है ।

२९५ पाणी पेली पाल ने बाधणी ।

जल की व्यवस्था के पूर्व पाल तय्यार नहीं करनी चाहिये ।

क्योंकि पर्याप्त मात्रामें जल न मिलने पर श्रम व्यर्थ जाता है । विना साधन की प्राप्ति के– पहले का काम पूरा हुए– आगे का कार्य आरंभ नहीं करना चाहिये ।

उल्टी बातः– पाणी पेलां पाल बाणवी ।

२९६ पाना मां रवाइ, पारधा मांये रेधा, जणना नाम रेधाँ मेवाड़ मां ।

पेड़ के पत्तों पर खाया और विकट पहाड़ों में निवास किया, मेवाड़ में उन्हीं का नाम रहा ।

कठिनाइयों को सहन करने से ही व्यक्ति बड़ा माना जा सकता है ।

२९७ पालविया नी पड़ाई पाएनां मांये ।

भील पलने (टोकरे) में ही अपना सामान रख एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं ।

अत्यधिक दरिद्रता के कारण भीलों के घर में अधिक असबाब नहीं होता ।

२९८ पाली पपोली मनाव राखवू घणो मुसकल है !

भील को खुशामद से मनाकर रखना बहुत कठिन है क्योंकि भील प्रकृति से ही स्वच्छन्द होने के कारण कहीं भी अधिक समय टिक कर नहीं रहते।

२९९ पेटे भाटो बाँधी ने काम कोई नी करे।

पेट पर पत्थर बाँधकर-मुफ्त में-भूखा रहकर काम नहीं किया जा सकता।

काम लेने के लिये काम करने वाले को उचित पारिश्रमिक देना आवश्यक है।

३०० बाएने तो बारे हाथ घर मांये वेंत भर छो।

बाहर तो बारह हाथ और घर में बालिश्त भर।

स्वयं की घरेलू-परिस्थिति ठीक न होने पर भी बाहर जो बढ़ चढ़ कर बातें करता है, उसके लिये इस कहावत को कहा गया है। इसी प्रकार "भड़जी भट्टा खाय औरां ने शिक्षा दे।"

३०१ बाएने फरे, मांये उंदरा नांहे, मांये फरे ने बाएने चकली उड़े।

बाहर फिरती है तो भीतर चूहे भाग जाते हैं और भीतर फिरती है तो बाहर चिड़िया उड़ जाती है।

यह कहावत अधिक बजने वाले आभूषण पहनने वाली स्त्री के सम्बन्ध में कहा गया है।

३०२ बेटानी वार बऊजी वास हैं, हाउजी ने वास हैं।

बेटे के लिये अच्छा समय बहु ही उपस्थित कर सकती है बहू की सास–बेटे की माँ नहीं।

पुत्र के लिये पुत्र-वधु माँ की अपेक्षा अधिक सहायक होती है।

३०३ भमतो कागलो मरांकड़े बेहे।

उड़ता हुआ कौआ जहाँ मरे हुए मवेशी डाले जाते हैं, वहाँ जाकर बैठता है।

जो अपने विचारों पर दृढ़ न रह कर इधर-उधर बहता रहता है, उसकी दुर्दशा पर संकेत।

३०४ भागू चोपू हगरबूं भण भागो मनाप नी हगरबू।

टूटे हुए (निकम्मे-बुड्ढे) पशु का पालन करना चाहिये किन्तु टूटे हुए (अकेले रह गये) मनुष्य का पालन नहीं करना चाहिये।

निकम्मा पशु काम नहीं करने पर भी जंगल का घास खा कर अपने गोबर द्वारा खाद और मरने पर चमड़ा देता है किन्तु अकेले बन गये मनुष्य की स्थिति सुधारने पर अथवा थोड़े से कष्ट के कारण अपयश का भागी बनना पड़ता है।

३०५ भाटा रनंरवड़ा तोड़्या, काम नी चोड़्या परताब।

राणा प्रताप ने पत्थर और वृक्षों को तोड़ा किन्तु अपने कर्त्तव्य से विरत न हुए।

तात्पर्य यह कि कठिनाई में भी मनुष्य को कर्तव्यरत रहना चाहिये।

३०६ भीलनो दसमण हरो, बीजाये करवानूं हूं काम।

भील के लिये एक मदिरा रूपी दुष्मन ही पर्याप्त है, तो किसी अन्य को दुष्मन बनाने की और क्या आवश्यकता है।

भील मदिरा बहुत पीते हैं और इसी में मस्त रहते हैं।

३०७ भील भोला ने हाथ में टोला।

भील सीधे समझे जाते हैं किन्तु हाथ में पत्थर रखने वाले अर्थात् बड़े लड़ाकू होते हैं।

३०८ भील भोला ने चेला मोटा।

भील सीधे होते हैं और तराजू के पलड़े बड़े होते हैं।

भीलों को उनके सीधेपन के कारण व्यापारी आसानी से ठग लेते हैं।

३०९ भूकत्या ना हाते भोव भाजी मांये।

भूखे व्यक्ति को सातों ही जन्मों में भाजी पर निर्वाह करना पड़ता है।

भूखा व्यक्ति अच्छा-बुरा भोजन नहीं देखता।

३१० भूकत्यू भचे भण्डाई।

भूखा व्यक्ति भांड की तरह बुरे बोल बोलता है।

बिगड़े हुए को और अधिक बिगड़ने की चिन्ता नहीं रहती।

३११ भूकत्यो वांटे भेली, धाप्यू करे एकार।

भूखा शामिल रहना चाहता है किन्तु तृप्त अहंकार रखता है।

३१२ भूखे हूं भेड़ाटी खाये भण भीख नी मांगे।

भूखे रहकर इधर-उधर टक्कर खाते फिरते हैं किन्तु भिक्षा नहीं माँगते।

(भील लोग उधार लेते हैं किन्तु भिक्षा नहीं मांगते)

अपनी मर्यादा समझने वाले लोग कभी भीख नहीं मांगते।

३१३ मजूरद्या नी मजूरी हारा भांजे भण राम नी भांजे।

मजदूर की मजूरी सभी लोग तोड़ते-नहीं देते-हैं किन्तु ईश्वर नहीं तोड़ता। अन्त में श्रमिक को पारिश्रमिक मिलता ही है।

३१४ मत मल्ली ने जात मल्ली।

मत के मिलने पर जाति भी मिल जाती है।

दो विभिन्न जाति के लोगों की घनिष्टता एवं एक राय होने से दोनों मिल कर-जैसे एक जाति के हों-रहने लगते हैं। अथवा एक जाति एक मत के कई मनुष्यों का समुदाय माना जाता है (प्रारंभ में था)।

३१५ मनख धारे जो करे ।

मनुष्य जो सोचता है कर दिखाता है ।

पुरुष पुरुषार्थी समझा जाता है ।

३१६ मनके धाई ने खावे मले, जो धारे जो करे ।

मनुष्य को तृप्ति के साथ खाने को मिले तो वह अपने विचारानुकूल कार्य कर सकता है ।

३१७ मनख नो एक हाथ, राम ना हजार हाथ ।

मनुष्य का एक ही हाथ है जब ईश्वर के हजार हाथ हैं ।

मनुष्य से इश्वर कहीं अधिक शक्ति-संपन्न है ।

३१८ मनख नो मूठी भरद्यो जमारो, काले निकली जाये ।

मनुष्य का मुट्ठी भर जीवन कल समाप्त हो जाने को है ।

जीवन के अल्प-काल का सदुपयोग होना चाहिये क्योंकि न जाने कब वह समाप्त हो जाये ।

३१९ मनख वातां वातां में वलूं बावी दिये ।

मनुष्य बातों ही बातों में भुलावा देते हैं । इस लिये भुलावे में डालने वाले मनुष्यों से बात नहीं करनी चाहिये ।

३२० मनखां ने पेटां मांये अकूल ने भरयो है, भाटा भरया है।

मनुष्यों के पेट में बुद्धि नहीं भरी है, पत्थर भरे हैं।

मूर्ख मनुष्यों के लिये इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

३२१ मन नी भरम नी भागे।

मन का भ्रम दूर नहीं होता।

३२२ मन ने माखों चावे जटे जाई ने बे हैं।

जिस प्रकार मक्खी को कहीं भी बैठने से रोका नहीं जा सकता, उसी प्रकार मन भी अपनी इच्छानुसार काम करता है।

मन की स्वच्छन्द एवं चंचल वृत्ति की ओर इस कहावत में सङ्केत किया गया है।

३२३ मलीन रेवा हूं मजो है।

मिल-जुल कर रहने में ही आनन्द प्राप्त होता है।

संसार में वास्तविक आनन्द प्रेममय व्यवहार से ही मिल सकता है।

३२५ मां बाप जलम दिये अकूल न दिये।

माँ-बाप जन्म देते हैं, बुद्धि नहीं दिया करते।

ज्ञानार्जन के लिये मनुष्य को स्वयं प्रयत्नशील होना पड़ता है।

३२५ मां बाप ना पेट मांये कूंण हीकी ने आवे।

माता-पिता के उदर में से कौन सीख कर आता है।

संसार ही ज्ञानार्जन का क्षेत्र है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति ज्ञान प्राप्त कर सकता है। ज्ञान वान उत्पन्न नहीं होते वरन् बनते हैं।

३२६ मारे कणा बेटां ना कन्दोरा ढ़ीला थाये।

मेरे किन बेटों के 'कन्दोरे' ढीले होते हैं। अर्थात् जो वस्तु अपने पास नहीं उसकी चिन्ता करना व्यर्थ है। तात्पर्य यह कि मेरे कौन से पुत्र दुर्बल हुए जा रहे हैं।

३२७ मारे खाल ओलख हैं मोय नी ओलखे।

मेरी चमड़ी को पहिचानेंगे, मुझे नहीं।

संसार में मनुष्य अपने कार्यों से जाना जाता है, नाम या स्थूल शरीर से नहीं।

३२८ मीठी मीठी वात कीदें पेट नी भरा हें, वेट कीदेज पेट भराहें।

मधुर वार्तालाप से पेट की भूख नहीं जाने की, वह तो परिश्रम करने पर ही शान्त होगी।

३२९ मीरांबाई काम करी ने नाम कीदूं, तों हारा बाबा थाइने हूं करो।

मीरा ने काम करके नाम किया है, किन्तु तुम सब साधु हो कर क्या करोगे ?

मीरां ने संसार त्याग कर अपने को ईश्वर प्रेम में पूर्ण रूपेण निमग्न किया तभी उसका नाम संसार में हुआ किन्तु तुम व्यर्थ ही नामधारी साधू बन कर क्या करोगे। तात्पर्य यह कि साधू बनना कोई सहज कार्य नहीं।

३३० मूं थाई ग्यो ढोर, मारा लबरा लेईग्या चोर।

मैं मूर्ख बना रहा, तभी तो मेरे वस्त्रादि चोर लेकर चलते बने।

प्रत्येक व्यक्ति को सावधान रहना चाहिये ताकि अन्य कोई उसे छल न सके।

३३१ मोटां छोटां नो राम एक है, न्यारो नी है।

ईश्वर सभी के लिये एक है, चाहे वह छोटा हो या बड़ा ईश्वर कभी भिन्न २ नहीं होता।

अर्थात् ईश्वर की दृष्टि में छोटे-बड़े का भेद-भाव नहीं।

३३२ मोटा चोटा नूं कायदो राखवू पड़े।

छोटे-बड़े की मर्यादा रखना आवश्यक है। सभी के साथ यथोचित व्यवहार करना चाहिये।

३३३ मोरली बात गई मोरली हाथे, आज तो करो जे बात।

प्राचीन बातें विगत व्यक्तियों के साथ लुप्त हो गई, अब तो जिस प्रकार की स्थिति है, उसी प्रकार की बात का महत्त्व है।

समय-चक्र के साथ २ रूढ़ियों और परंपराओं में भी परिवर्तन अवश्यंभावी है।

३३४ मोरे बोलमा आड़े आव हैं।

मनौती कठिनाई में रक्षा करती है।

ईश्वर के नाम पर की गई भेंट आदि दुःख के समय रक्षा कवच की भाँति सहायक सिद्ध होती है, ऐसी प्राचीन लोगों की मान्यता है।

३३५ रात रांका ना हूं भरोसा करवा।

रात्रि और बुरे कार्य करने वाले व्यक्तियों का क्या भरोसा करना? अर्थात् अन्धकार और कु-प्रवृत्ति वाले लोगों का विश्वास नहीं किया जा सकता।

३३६ रान रान ना पान पान ना थाई ग्या।

राह-राह और पत्ते-पत्ते के हो गये।

किसी अच्छी स्थिति वाले लोगों का कारण विशेष से बिखर जाना इसी प्रकार का होता है।

३३७ राम ने घरे कूंण जाई ने आव्यो

कौन ईश्वर के यहाँ जाकर लौट आया है?

ईश्वर की लीला अपरंपार है, जिसे समझना सहज नहीं।

३३८ राम राम हूं करो, तां हारा राम।

राम राम क्या जपते हो? तुम सभी राम ही तो हो।

आत्मा सो परमात्मा। अतः ईश्वर सर्वत्र, सर्वव्यापी है।

३३९ रीत देखी ने रोवे नी बेहवो।

रूढ़ि वश रोना नहीं आरंभ करना चाहिये।

कोई भी काम रूढ़ि के फेर में करना रोने के समान होगा, अतः अपनी समझ से ही किसी काम को करना चाहिये।

३४० रूप चावे रांडी ने धन चावे धरती ने।

वैश्या को सौन्दर्य और पृथ्वी को धन की आवश्यकता होती है।

यदि वैश्या सौन्दर्य-विहीन है तो उसका कोई मूल्य नहीं और धरती समृद्ध नहीं तो उसका कोई महत्त्व नहीं।

३४१ रोग्या वगर माँ मी नी आले।

बिना रुदन के माता स्तन-पान नहीं करवाती।

तात्पर्य यह कि बिना दुःख के संसार में सुख प्राप्त नहीं हो सकता।

३४२ लगाई हल मातें हाथ ने दिये, बीजू हारू करे।

स्त्री सिर्फ हल को ही हाथ से नहीं छूती, अन्य सभी कार्य करती है।

भारतीय-परंपरानुसार स्त्रियों का हल को छूना वर्जित है। फिर भी आवश्यकतानुसार अन्य सभी कार्यों को वह करती है।

३४३ लाकां चौरासी मांये एक दण मनख नो जमारो ।

चौरासी-लाख जन्मों (योनियों) में मनुष्यजीवन एक बार ही प्राप्त होता है ।

अल्प-कालीन मनुष्य-जीवन यों ही न बीत जाय सद्कार्यों के अभाव में । इस कहावत में इस ओर संकेत किया गया है ।

३४४ लाखूं उपाये कीदे लखपती नी थाये, राम करहें जेरा थाहें ।

ईश्वर की इच्छा बिना लाख प्रयत्न करने पर भी लक्षाधिपति नहीं बना जा सकता ।

भाग्यवाद पर विश्वास होने के कारण संपत्ति शाली बनना भी ईश्वर पर आश्रित माना जाता है ।

३४५ वगर अकले वगड़ ग्यो जमारो मनका नो ।

बिना बुद्धि के मनुष्य-जन्म निरर्थक हो जाता है ।

जीवन को उन्नत बनाने के लिये बुद्धि की सर्वोपरि आवश्यता होती है ।

३४६ वगर चाबव्यू पेट मांये दूखे ।

बिना चबाये भोजन करने से पेट में दर्द होता है ।

शीघ्रता में यदि कोई ग़लत कार्य किया जाय तो बाद में कष्ट उठाना पड़ता है ।

३४७ वगर तोली माटी गेलवजे ।

शरीर का बहुत-सा मांस नष्ट कर दिया ।

अत्यधिक परिश्रमोपरान्त भी जब किसी को कुछ दिया नहीं जाता तो यह कहावत कही जाती है ।

३४८ वड़ला नो भार वड़वाटई ढाव हें, बड़लाए हुँ दोरो आवे ।

वह-वृक्ष का भार उसकी शाखायें ही तो वहन करती हैं, इसमें बरगद को क्या कठिनाई होती है ।

किसी चीज़ के विस्तार से उसका भार उस पर नहीं पड़ता तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

३४९ वनो वे भाग खाये ।

दुल्हा (बरातियों से) दू-गुना खाता है ।

अर्थात् कहीं भी प्रमुख साधारण व्यक्तियों से अधिक सम्मानित होता है ।

३५० सत में सायबो है ।

ईश्वर सत्य में निवास करता है ।

सु-कार्यों में ईश्वर-प्रदत्त बुद्धि मानी जाती है ।

सुख सभी लोग चाहते हैं, पर दुःख कोई नहीं चाहता ।

३५१ सुख हारां चावे दुःख को नी चावे ।

सुख और दुःख दोनों के सन्तुलन में ही वास्तविक सुख प्राप्त

होता है। अतः दुःख से पलायन करना सुख की वास्तविकता को नहीं समझना है।

३५२ हलो घुण लोगो ते रेवानो नी है।

जिस लकड़ी में घुन लग गई वह अधिक समय तक रह नहीं सकती।

इसी प्रकार असाध्य रोग लगने पर शरीर की जो दशा होती है, उस समय इस कहावत को कहा जाता है।

३५३ हाऊ मांये धक्को ने देवो, राम देक्खे।

अच्छे कार्य में विघ्न नहीं डालना चाहिये। ईश्वर सब-कुछ देखता है।

किसी का बनता काम बिगाड़ने पर ईश्वर के कोप से नहीं बचा जा सकता।

३५४ हाऊ भूंडू टालवू नी, भूख नू मूंडू बालवूं।

अच्छे या बुरे—किसी भी प्रकार के-भोजन को सामने से दूर न करके, बुभुक्षा-शान्ति से काम रखना चाहिये।

सामने आई थाली से विमुख होना, अन्न देवता का अपमान माना जाता है।

३५५ हाऊ-भूंडू नी जोवूं, चाये जेम करीने पेटे भाडू आलवो।

भला-बुरा नहीं देखा जाता, किसी प्रकार पेट पालना है।

किसी प्रकार जीवित तो रहना ही पड़ता है इसलिये अच्छे-बुरे

भोजन का विचार किये बिना ही-जो मिल जाये उसी में संतोष करना चाहिये।

३५६ हाऊभूंड़ो-हगरो तो हाऊ-भूंड़ा दाड़ा में काम आवे।

अच्छी और बुरी इन सभी वस्तुओं का संग्रह किया जाय तो अच्छे-बुरे दिनों में काम आती हैं।

तात्पर्य यह कि अच्छी और बुरी-सभी काम चलाउ वस्तुओं का संग्रह करते रहना चाहिये, कभी न कभी वे काम आती ही हैं।

३५७ हाऊ हगरे ने वऊ वखरे हे तो बीजो कूण वगड़ू करे।

सास संग्रह करती है और बहु बिखेरती है तो अन्य कौन बीच में पड़ कर काम को सुधारे।

कोई किसी के परस्पर झगड़ों के मध्यस्थ बन कर सुलझावे, यह बड़ा कठिन है।

३५८ हाये हाये करता हा निकली जाये।

हाय हाय करते हुए एक दिन प्राण निकल जायँगे।

दुःख में रो रो कर व्यर्थ ही समय खोने में लाभ नहीं। धैर्य धारण कर अपना कार्य करना चाहिये।

३५९ हारा हरखा वे तो चावे हूँ।

सभी लोग यदि समान हों तो फिर कमी क्या रह जाती है।

यदि संसार में सभी लोगों की स्थिति समान हो तो फिर क्यों कर किसी बात की कमी अनुभव की जाय।

३६० हालुवा हगाल् नी वले।

धान-गेहूँ के पकने से अच्छा समय पुनः नहीं आता।

पहाड़ों में धान-गेहूं बहुत थोड़ी मात्रा में उपजता है। वर्षा के कारण सियालू फसल ही (जिसमें मक्का मुख्यतया होता है) अच्छी पैदा होती है इसके बिगड़ने से साल भर अकाल बना रहता है।

३६१ हूतो बैठो डूमड़ी घरे मांये घाले।

सोये-बैठते दमामिन को घर में डाले।

बैठे-बिठाये हाथ से विपत्ति मोल लेना कोई बुद्धिमानी नहीं।

३६२ मोरली वात गई मोरला हाते।

पहले की बातें पहले के लोगों के साथ गई।

समय के अनुसार बातें भी परिवर्तित होती रहती हैं।

३६३ घोड़ा ने घर जावू है।

घोड़े को अपने स्थान पर जाना है।

घर पहूंचने का समय हो जाने पर भी मार्ग में जब विलम्ब किया जाता है तो इस कहावत का प्रयोग समीचीन होता है।

३६४ जहां आपणा भाव जहां अपणा भाग।

जैसे अपने विचार होंगे उसी प्रकार का भाग्य होगा।

तात्पर्य यह कि यदि हम अपने या दूसरों के प्रति अच्छा सोचेंगे तो हमारा भविष्य भी अच्छा होगा, नहीं तो जैसे का तैसा।

३६५ जहूं करे जहूं मले.

जैसा करोगे वैसा मिलेगा।

संसार में जो जैसा करता है अन्ततोगत्वा उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है।

३६६ जहो वा जहो वर्ताव।

जैसा पड़ोस होगा, वैसा ही व्यवहार होगा।

परस्पर व्यवहार भी व्यक्तियों पर निर्भर करता है।

३६७ जाई ने अणा मोरे ज़क मारवो हे।

इनके सम्मुख जाकर ज़क मारना है।

जहाँ जिन से लाभ की कोई संभावना नहीं, वहाँ जाना व्यर्थ है।

३६८ जाई ने ते फायले फरी ने नी जोय्यू एवा पड़ी पड़ी ने वात करे।

पीछे से जाकर काम को देखा तो नहीं, जिससे वह बिगड़ गया और फिर लम्बी २ बातें की जाती हैं।

समय पर किसी काम की देख-रेख नहीं करने से वह बिगड़ जाता है तो फिर बढ़-चढ़ कर बातें करने से क्यालाभ ?

३६९ जागत् मूते वीनों हूं उपा लागे।

जो जाग्रतावस्था से भी मूत्र-त्याग करे तो उसका उपाय ही क्या हो सकता है।

जब जान-बूझ कर कोई बुरा कार्य किया जाय तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

३७० जाणी ने जोगी थाये, जणा नो हूं करवो।

जो व्यक्ति जान-बूझ कर निर्धन बने, उसकी स्थिति सुधार ने के लिये क्या किया जा सकता है।

अपने ही पाँवों पर जो कुल्हाड़ी मारे, उसकी क्षमा कोई अन्य व्यक्ति नहीं कर सकता।

३७१ जाणीने धामड़ो ने करवो।

जानते हुए किसी प्रकार का झगड़ा नहीं करना चाहिये।

लड़ाई-झगड़े से हानि ही होती है, लाभ नहीं। इसलिये अपनी जानकारी से झगड़ा बढ़ाना बुद्धिमानी नहीं।

३७२ जाणे वीणे तो कई नी, ने आव राँड जुवा रेयाँ।

सोच-समझ तो कुछ है नहीं और कहते हैं कि आ राँड अलग रहें।

बिना सांसारिक अनुभव और सोच-समझ के अलग रहना बुद्धिमत्ता नहीं। सामुहिकरूप छोड़ कर अकेले रहने में विशेष बुद्धि की आवश्यकता होती हैं।

जब सामूहिक-कुटुम्ब से पति-पत्नी अलग होने लगते हैं तो इस कहावत का प्रयोग समीचीन होता है।

३७३ जात मां जावू तो जात हाई रेवू नीते रोवू ।

जाति-विरादरी में जाने पर उसकी मर्यादाओं में रहना चाहिये, नहीं तो कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ।

३७४ जाते जात खामेज है ।

जाति जातिवाले को खाता ही है ।

एक ही जाति के लोगों में जो परस्पर वैमनस्य और ईर्षा होती है, इस कहावत से उस पर प्रकाश पड़ता है कि जातिवाले किसी व्यक्ति को उन्नति की ओर अग्रसर होते नहीं देख सकते ।

३७५ जावानूं जण पूठे अज़ार कला करो, वो रेवानूंजी ।

जो जानेवाला है, उसके पीछे चाहे हज़ार प्रयत्न क्यों न किये जायँ, वह रुक नहीं सकता । ऐसी अवस्था में प्रयत्न करना व्यर्थ है ।

लगता है जीवन की नश्वरता की ओर संकेत है ।

३७६ जावा नू जोग नी, रेवा ना दन नी ।

मृत्यु का संयोग नहीं तथा जीवित रहने की स्थिति नहीं ।

न तो मौत ही आती है और न जीने को ही जी चाहता है- ऐसी दुःखावस्था में यह कहावत कही जाती है ।

३७७ जावानू त्यू राखत्यू क्यें रेवा-नू ।

जो जाने का है, उसे रखने पर भी वह कैसे रह सकता है ।
अवश्यंभावी बात को रोकने का प्रयत्न व्यर्थ है ।

३७८ जावानों ते झगड़ो आवण नो रगड़ो ।

जहाँ पर जाने और आने-दोनों समय झंझट हो, वहाँ जाना ही नहीं चाहिये ।

३७९ जावू जणा पूटे पाहले मोरें नी जाके वगड़ो के हदरो ।

जब जाना (किसी कार्य को करना) निश्चय कर लिया तो फिर आगे-पीछे नहीं देखना, चाहे फिर वह बिगड़े या सुधरे ।

३८० जावो वे जठे पगां घूघरा बन्दाई जाय ।

जहाँ कहीं जाना हो, पाँवों पर घूंघरू बाँध कर जाना चाहिये।
अर्थात् किसी भी कार्य को पूर्ण उमंग और उत्साह के साथ पूरा करना चाहिये ।

३८१ जीव जाज्यो भण जीवाई हके जाज्यो ।

प्राण भले निकल जायँ परन्तु हमें जीवित रखने वाला बना रहे।
जीवन बनाये रखने वाले के मरने पर जीवित रहना कठिन हो जाता है ।

३८२ जीवणू ने खांवू हारे चावे ।

सभी जीवित रहना व भोजन पाना चाहते हैं ।

संसार में सभी लोग भोजन और जीवन की अपेक्षा करते हैं, कोई मृत्यु नहीं चाहता।

३८३ जूट नू नाम नी लेवू, अठे जूट बोलवानू काम नहीं।

भूठ का नाम न लो, यहाँ भूठ बोलने की आवश्यकता नहीं।

जहाँ पर भूठ बोलने से कोई लाभ नहीं, वहाँ पर भूठ क्यों बोला जाय।

३८४ जूटूं बोलवानू कई न कई समज़ावणो पड़े।

भूठ बोलने पर किसी न किसी बहाने उसकी सफाई देनी ही पड़ती है।

३८५ जूड़ा नो भार धोरी ई भेले।

जूड़े का सारा भार बैल ही वहन करते हैं।

समर्थ-व्यक्ति ही अन्य लोगों का बोझ अपने पर रख कर, उस गाड़ी को चलाता है।

३८६ ज़रे खाये जो नी मरे ने नी खाये जो मरे।

विष नहीं खाने पर भी मर जाता है, और खाने पर नहीं मरता।

"होनहार बिरवान के होते चीकने पात" जो होना होता है हो कर रहता है।

३८७ जेलू जलमी है जे मोय ऊंदू जोवाड़्यू ।

बदमाश लड़की पैदा हुई, जिसने मुझे नीचा दिखाया।

३८८ जैसमन्द वाली अमर टांकी है ।

जयसमुद्र पर अमर टांकी चलती रहती है।

मेवाड़ की एक बहुत बड़ी कृत्रिम झील जय समुद्र पर सदा ही पत्थरों की घड़ाई टांकी से की जाती है। इसी लिये कहा गया है कि जयसमुद्र वाली अमर टांकी है।

३८९ जो खोटू करे जो हाथ जोड़े ।

यदि कोई अपराध ही नहीं करता तो उसे क्षमायाचना करने की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

३९० जोत जागी भरांत भागी ।

प्रकाश के होने पर अन्धकार नष्ट हुआ।

जब ज्ञान का प्रकाश हो जाता है तो भ्रान्ति और संशय रूपी अज्ञान का अन्धकार विनशित हो जाता है।

३९१ जो दूखे जणाये खबर, बीजो हूं जाणे ।

जिसके पीड़ा हो वही उसका अनुभव करता है, दूसरा क्या समझे।

३९२ झगड़ा भरी बात ने राखनी ।

किसी बातको झगड़े भरी नहीं रखना चाहिये।

अधबीच में किसी बात को लटकती छोड़ देना अच्छा नहीं।

३९३ टके नी हांडी टक चड़े ने टक ऊतरे।

कम मूल्य का साधारण भोजन पकाने का मिट्टी का बर्तन एक समय ही चूल्हे पर चढ़ता है और उसी समय निकम्मा सिद्ध होकर उतार दिया जाता है।

तात्पर्य यह कि कम मूल्य की चीजें टिकाउ नहीं हुआ करती।

३९४ टाट्या नी टाट जाय, टेव नी जाये।

गंजे का गंजापन दूर हो जाने पर भी, उसकी खुजालने की आदत नहीं जा सकती।

बुराई दूर हो जाने पर भी, उससे उत्पन्न बुरी आदतों का समाप्त होना सम्भव नहीं।

३९५ टाडी हीयालो हारी हाऊ लागे, हारू काम हाऊ थाये।

ठण्डी-मीठी बातें सभी को अच्छी लगती है तथा इससे सभी काम अच्छा होता है।

कटु-बात सत्य होते हुए भी बुरी लगती है।

और बनता काम भी बिगड़ जाता है इसके विपरीत मीठी बात झूठ होते हुए भी अच्छी लगती है और बिगड़ता काम बन जाता है।

३९६ टीलू तकदीर वाला ने थाय।

भाग्यशाली के ही तिलक होता है।

विवाह के पूर्व सम्बन्ध होते समय तिलक किया जाता है, इसे 'तिलक होना' कहते हैं। कई ग़रीब और असहाय लोग इससे वंचित रह जाते हैं, इसलिये कहा जाता है भाग्यशाली के ही तिलक होता है।

३९७ टूटी हथियार ने टूटो लूटो बेटो वगत में काम आवे।

टूटा हथियार और शरीर से टूटा हुआ पुत्र भी समय पर काम आता है। अतः इनकी उपेक्षा उचित नहीं।

३९८ टोटानी टापरी मांये रात-दाड़ो राड़।

साधन-सुविधाओं से रहित झोंपड़ी में रात-दिन झगड़ा होता है।

आवश्यक वस्तुओं की कमी के कारण मनस्थिति सन्तुलित नहीं रह सकती और ऐसी स्थिति में झगड़ा होना स्वाभाविक ही है।

३९९ ठाला भूला भेला थाये, जे वगर ठा नी वात करे।

निकम्मे लोग जब एकत्रित होते हैं तो वे विना ठोर-ठिकाने की बात करने लगते हैं।

४०० डाकण ते हाऊ ने चे.नाल खोटी।

डाकन तो फिर भी अच्छी परन्तु कुलटा स्त्री बहुत बुरी।

४०१ डाकण भोपा ने एक मतू।

डायन तथा भोपा एक राय के होते हैं।

दो विरोधी जब आपस में मिल जाते हैं, तो उनकी दो रायें नहीं हो सकतीं। ऐसे अवसर पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

४०२ डोकरो देखी ने अड़वो नी, मोटक्यार देखी ने बिहवो नी।

वृद्ध को देख कर उससे अड़ना नहीं चाहिये तथा युवक को देख कर उससे डरना नहीं चाहिये।

यह कहावत वृद्ध पुरुष के अनुभवों का विचार कर उससे नहीं झगड़ने तथा युवा व्यक्ति की हृष्ट-पुष्टता को देख कर उससे भयभीत नहीं होने के सम्बन्ध में कही जाती है, क्योंकि वह अनुभव शून्य होता है, वृद्ध की तुलना में।

४०३ डोकरो मुवो ने डग डगारो मटक्यो।

वृद्ध की मृत्यु हुई और सब रगड़ा-झगड़ा मिटा।

जब तक घर में कोई वृद्ध होता है, नहीं चाहते हुए भी उसके नियंत्रण में रहना पड़ता है, उसका एक भय बना रहता है। जब वह रहा ही नहीं तो फिर भय किसका।

४०४ डोबी नी टाटली चाली नी चाकरी।

भैंस के घास-पात की व्यवस्था और बकरी की सेवा बराबर ही होती है।

तात्पर्य यह कि छोटे और बड़े-सभी के जीवित रहने की अपनी २ समस्या होती है। इसमें किसी की बड़ी और किसी की छोटी समस्या नहीं हो सकती। यदि भेंस के लिये बड़ी मात्रा में घास आदि की व्यवस्था करनी होगी तो बकरी के लिये पत्तियों को काटने की, हिंसक पशुओं से रक्षा आदि की।

४०५ डोरी बले, डोरी नो आमलो नी बले।

रस्सी जल जाती है पर उसमें पड़े सल नहीं मिटते।

मनुष्य मरता मर क्यों नहीं जावे परन्तु अपनी हठ नहीं छोड़ता।

४०६ ढले ते खावे भले।

छलकने पर अन्य व्यक्ति उपयोग करते हैं।

परस्पर वैमनस्य के कारण जब कोई गोपनीय बात प्रकट हो जाती है तो अन्य व्यक्ति उसका लाभ लेने से नहीं चूकते।

४०७ ढांकयो धरम ने उघाडयो पाप।

अनुचित कार्य छिपे रूप से होने पर धर्म की कोटि में रहता है किन्तु वही प्रकट में आ जाने के बाद पाप बन जाता है।

४०८ ढाही नू डोबी नीचे, डोबी नू ढाही नीचे, करवू है।

गाय का भेंस नीचे और भेंस का गाय नीचे करना है अर्थात् भेंस से प्राप्त लाभ से गायका काम चलाना और गाय से भेंस का।

तात्पर्य यह कि संसार में इधर का उधर और उधर का इधर करने से ही काम चलता है।

४०९ ढाहो तो हाकी न लेवो, डोबी दोई न लेवी।

बैल को हल में जोत कर लेना चाहिये और गाय को दुहने के बाद। इस प्रकार इनके अच्छे-बुरे होने की परीक्षा हो जाती है।

४१० ढाहो भरी जाये ने खेती नो नीपजे जे हू काम नी करवू।

बैल मर जाय और खेत की उपज न मिल सके, ऐसा काम नहीं करना चाहिये।

भाव यह है कि इतना अधिक काम बैल से नहीं लेना चाहिये, जिससे वह मृत्यु को प्राप्त हो जाय और जो खेती की उपज मिल रही हो वह भी नष्ट हो जाय।

४११ ढोली नूँ छोरूँ गदयो नी मरे, न भील नू छोरूँ रोदयो नी मरे।

ढोली (गन्धर्व वर्ग की जाति-विशेष) बालक का गाते रहने से मर नहीं सकता और भील का बालक रोते रहने से नही मर सकता।

ढोली के बालक को गाने का अभ्यास होने से निरन्तर गाते रहने पर भी अधिक कष्ट नहीं होता तो भील के बालक को जीवन की निम्न परिस्थितियों में रुदन का अभ्यास हो जाता है।

४१२ तगदीर ने थीगलो नी लागे ।

भाग्य के कारी नहीं लगाई जा सकती ।

भाग्यवादी विधि के विधान को अपरिवर्तनशील मानता है, उसमें परिवर्तन को कोई स्थान नहीं ।

४१३ तरत दान ने महा पन्न ।

यथा शीघ्र दान करने पर बहुत अधिक पुण्य होता है ।

दान करने में आज-कल न कर, शीघ्रता बरतनी चाहिये ।

४१४ तरत नी काकड़ी तरत नी लागे ।

तुरन्त बोई हुई ककड़ी उसी समय नहीं लग जाती ।

बीज बोने के बाद एक निश्चित अवधि के पश्चात ही उसका फल प्राप्त हो जाता है ।

४१५ तालाव तरय्यो, वीवो भुखियों ।

तालाब के होते हुए प्यासा रहा एवं विवाह अवसर पर भी भूखा रहा ।

साधन प्राप्त होते हुए भी यदि कोई उनका उपयोग न कर सके तो दोष किसका ।

४१६ तां केय्यो ने माये ढौच् करावय्ये ।

तुम्हारा कहना हुआ और मुझे अग्नि-परीक्षा देनी पड़ी ।

किसी के कहने में क्या विगड़ता है, कठिनाई तो उसको होती है, जिस पर आ पड़ती है।

४१७ तांते एवां मारे नाम काड़धू ताहले हेउे।

तुमने मेरे परंपरित यशपूर्ण नाम को अब (पीछे से) बदनाम किया।

४१८ ताकड़ी तणी रामना हाथ मांये है।

तराजू की डण्डी ईश्वर के हाथ में है।
ईश्वर ही सभी का न्याय करने वाला है।

४१९ तीन घर वे जटे गड्डो वे, ग्राम मांये हाये नी वे।

तीन घर होने पर भी जब मुखिया होता है तो पूरे गाँव में क्यों न हो।

गांव में न्याय चाहने वाला जन कम पंचों की उपस्थिति स्वीकार नहीं करता तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

४२० तीन पग ताणिया ने चितोड़ तांई चोको।

तीन डग बढाने के बाद चित्तौड़ तक चोका है।

तात्पर्य यह कि जब घर से बाहर यात्रा पर निकले तो फिर रसोई-घर की छुआछूत पालने की आवश्यकता नहीं रहती।

४२१ तेड़िया वगर को नी आवे, पलां घरे ने बाण्ने वो।

बिना बुलाये किसी दूसरे के द्वारपर वह नहीं जाता।

विना निमन्त्रण के कभी किसी के यहाँ नहीं जाना चाहिये।

४२२ तेली ने तोदूखे ने तेरमांए डामे।

तेली के तो कष्ट है और तेरमें को दागता है।

कष्ट देने वाले का ही उपाय उचित है।

'तेरमा' गाली के लिये रूढ़ हो गया है, जिसका प्रयोग तेली प्रायः किया करते हैं। जब तेली को किस प्रकार का कष्ट होता है, तो 'तेरमा' का नाम लेकर गाली देने लगता है, जिससे कोई लाभ नहीं।

४२३ तो मां कई लक्खण नी, कूतरा मांजे लक्खण हाउ हे।

तुझ में कोई गुण नहीं, इससे तो कुत्ते के गुण ही अच्छे।

किसी जड़ मूर्ख के सम्बन्ध में इस कहावत का प्रयोग होता है।

४२४ थाको हाली दोवे दोवे कांटो काढ़े।

थका हुआ किसान- नोकर प्रत्येक दूर्वा-त्रण से कण्टक ढूंढ निकालने का प्रयत्न करता है।

वैसे तो विश्राम किया नहीं जा सकता, क्योंकि स्वामी देखले तो न जाने क्या गुजरे ? ऐसी स्थिति में दूब से कांटा ढूंढ निकालने के बहाने ही क्षणिक विश्राम लेता है।

४२५ थाय्यू ज्याते थाय्यू, थाय्योज जाये ।

बिगड़ा सो तो बिगड़ा किन्तु आगे भी बिगड़ता जा रहा है ।

कोई काम बिगड़ गया सो बिगड़ गया लेकिन आगे भी जो बिगड़ता जा रहा है, उसे सुधारने का प्रयत्न करना चाहिये ।

४२६ थारा आगला भो ना लेख, मुं हूं करूं ।

यह तो तेरे पूर्व जन्म का लेख है, मैं इसमें क्या कर सकता हूँ ।

पूर्व-जन्म के संस्कारों के परिणाम स्वरूप जब कोई दुःखी रहता है तो इस कहावत को कहा जाता है ।

४२७ थारी आगते ऊमर नी पाके ।

तेरी शीघ्रता से उम्र में प्रौढ़ता नहीं आ सकती ।

तात्पर्य यह है कि कोई किसी काम के लिये कितना ही उतावला हो, समय आने पर ही वह पूरा होगा ।

४२८ थारे हाथे कीदूं, हाथे आय्यूं ।

जो कुछ तूने अपने हाथ से किया, उसी का फल तुझे मिला ।

जैसा हम करते हैं, वैसा ही हमें मिलता है ।

४२९ थारी दन्या माये रेई ने धूल जमारो ।

संसार में रह कर तुम्हारा जीवन धूल के समान है ।

जीवन का सदुपयोग नहीं करने वाले व्यक्ति के लिये यह कहावत चरितार्थ होती है ।

४३० थारो दीठो देवालो, मांये जाहों चेड़ा ने चेड़ा जाहों मांये ।

तेरा दीवाला देख लिया, जैसा भीतर है वैसा ही बाहर और जैसा बाहर वैसा अन्दर ।

घर के बाहर खेत-कुए नहीं होने पर एवं घर में गृहस्थी का कुछ भी सामान न होने पर यह कहावत कही जाती है ।

४३१ थाली मांय भमरो रमाड़े जेम रमाडूंगा ।

थाली के अन्दर लट्टू घुमाने की तरह (तुम्हें) नचाउंगा ।

किसी ऐसे व्यक्ति को जिसे कोई कार्य आदि करने को कहा जाय और उसके आनाकानी करने पर इस कहावत को चरितार्थ किया जाता है ।

४३२ थावानू ज्यो मटवा नूं नी ।

होनहार मिट नहीं सकता ।

जो होना होता है वह होकर ही रहता है ।

४३३ थोड़ा मांये घणो राम कर दें जेरा थां हे ।

थोड़े में बहुत जब राम करेगा तभी होगा ।

ईश्वर की इच्छा पर ही सम्पन्नता निर्भर होती है ।

४३४ दई ने दूणो हारो ग्यो ।

दही और दही रखने का मिट्टी का बर्तज 'दूणा' सब नष्ट हो गया ।

तात्पर्य यह कि सब कुछ बरबाद हो गया-दोनों ओर से गये-'धोबी का गधा न घर का रहा न घाटका'

४३५ दन्या कोपे ते कई नी थाय।

संसार के क्रोधित होने पर कुछ नहीं बिगड़ सकता।

अर्थात् हमें दुनियां के क्रोध की चिन्ता न करते हुए उस सर्व शक्तिमान ईश्वर से डरना चाहिये।

४३६ दन्या मांये रेवू पड़े ते हाप वाळो फूंफाटो राखवो पड़े।

संसार में रहने के लिये फणिधर-सी फूत्कार का रखना भी आवश्यक है।

कारण यह कि जो दबता रहता है, उसे अधिक दबाया जाता है, परन्तु डर बताने पर कभी कभी काम सरल हो जाता है।

४३७ दन्या में मा बाप नी मले, बीजूं हारू मले।

संसार में माँ-बाप ही नहीं मिलते अन्य सभी वस्तुयें मिल जाती है।

तात्पर्य यह कि मात-पिता का वह निस्वार्थस्नेह अन्यत्र कहाँ संसार में उपलब्ध हो सकता है?

४३८ दनियां में हबलू-नबलू हारू है, हांराए नबा-वणो पड़े।

संसार में सबल और निर्बल सभी प्रकार के व्यक्ति हैं तथा सभी को निभाना पड़ता है।

४३९ दनियां ये हारई पूगे, रामें नी पूगे।

संसार के व्यक्तियों तक सभी की पहुंच होती है, परन्तु राम तक पहुंच नहीं होती।

मनुष्य पर किसी का भी बस चल सकता है किन्तु राम पर नहीं।

४४० दबऱ्यू-दबऱ्यू रेवे दियो नी ते दलाली पांती आव हैं।

स्वयं दबे रह कर मामले को भी दबा रहने दो नहीं तो दलाली हिस्से में आवेगी।

अपने आपके एवं किसी बात के प्रकट होने से उलटा कुछ देना पड़े यानि कठिनाइयों का सामना करना पड़े तब इस कहावत का प्रयोग किया जाताता है

४४१ दबी ने रेवू दन्या में हूदो है।

संसार में लोगों से दब कर रहने से सरलता होती है। अर्थात् इससे कोई विशेष आपत्ति नहीं आती।

४४२ दलवा वाली दलाई लेई ने जाहें ।

दलनेवाली स्त्री अपना पारिश्रमिक लेकर जायगी ।

अपनी मजदूरी कोई छोड़ने को तैयार नहीं होता ।

४४३ दांतां मांये ते दूध नी, चोरू वात करे ।

दांतों में तो दूध नहीं (कम अवस्था है) और बच्चा बात करता है ।

बड़ों के सामने छोटे का बढ़ २ कर बोलना अच्छा नहीं समझा जाता ।

४४४ दाड़ू नो दाड़ो हरो हरको नी है ।

सभी दिन समान नहीं होते ।

समय परिवर्तनशील है ।

४४५ दाड़ा ना देवालां राते देखाये ।

दिनका दिवाला रातको दिखाई पड़ता है ।

दिवस में कुछ भी प्राप्त न होने पर रात्रि में घर जाने पर चिन्ता अधिक बढ़ जाती है ।

४४६ दाड़ो कूकड़ा नी वात नी जोये ।

दिन कभी मुर्गे के बोलने की प्रतीक्षा नहीं करता ।

होने का काम यथा समय होता ही है ।

४४७ दाड़ो बावची ऊगा जे कणहूं अण चाना ने हे।

सूर्य का उदय होना किसी से छिपा नहीं रहता है।

जो बात सहज ही सब के लिये स्पष्ट हो, फिर भी उसे छिपाने का असफल प्रयास किया जाय तब यह कहावत ठीक उतरती है।

४४८ दारू दोगलो, पीये ओचलो, धूल खावे, धूम मचावे, ओचे घर करे वास।

मदिरा धोखा देने वाली होती है, निम्न कोटि का व्यक्ति इसे पीता है, फिर धींगाधांगी करता है और निम्न श्रेणी के घर में निवास करता है अर्थात् उसका घर ऊँची श्रेणी में नहीं समझा जाता।

४४९ दीदा डाम लागे भण अकल ने लागे।

अनिच्छा से लगाये गये डाम (गर्म लोह-शलाका का दाग) भले कारगर हो जाय किन्तु इस प्रकार दिया गया ज्ञान कभी फलीभूत नहीं होता।

४५० दीदी अकूल ने लागे ते डाम ते लागे।

किसी को दी गई राय भले उसे स्वीकार न हो तो भी कष्ट रूप में उसका परिमाण तो उसे भुगतना ही पड़ेगा।

४५१ दीवा नीचू अन्धारू।

दीपक तले अंधेरा।

आस-पास की या स्वयं की त्रुटियाँ खुद नहीं समझ सकता। अंग्रेजी में भी कहा गया है: 'Nearer the church farther from heaven'

४५२ दुखत्या ना वार ने तेवार हारा एक।

दुःखी व्यक्ति के लिये पर्व और त्यौहार सभी एक समान होते हैं।

तात्पर्य यह कि दुःखी इन अवसरों पर भी दुःख को अपने से अलग न कर सकने के कारण त्यौहारों के विशेष आनन्द का उपभोग नहीं कर सकता।

४५३ दुखे ते डाम देवाँड़ो।

यदि कष्ट है तो डाम (तप्त-लोह-शलाका से दग्ध) दिलवाओ।

यानि असाध्य रोग को दूर करने के लिये डाम लगवाने का दुःख भी सहन करना पड़ता है। कांटे से ही कांटा निकाला जाता है।

४५४ दुनियां बेरंगी है, जठे हाऊ देखे जठे फरे।

दुनियां दुरंगी है, जहाँ अपनी स्वार्थ-सिद्धि देखती है, वहीं पर चक्कर काटा करती है।

४५५ दूबलाए हो दुख।

दुर्बल व्यक्ति को सैकड़ों कष्ट होते हैं।

कोई भी दुर्बल व्यक्ति को दबाता रहता है।

४५६ दूद दोवावाली नो बीजाये चा ।

दूध पर तो दूहने वाली का ही अधिकार होता है, अन्य लोगों को छाछ ही मिल पाती है ।

किसी वस्तु के श्रेष्ट भाग पर उसके स्वामी का ही अधिकार होता है ।

४५७ दूध डोबी मांये नी है, दूध दोवा वाली मांये है ।

दूध भेंस में नहीं होता अपितु निकालने वाली में होता है ।

अर्थात् दूहनेवाली की चतुरता, दूधारू के पालन-पोषण में उसकी कुशलता आदि पर ही दूध की मात्रा निर्भर करती है ।

४५८ देव दुवारका ने पीर मखां ।

देवता का द्वारिका में एवं पीर का मक्का में स्थान है-निवास है ।

जब कोई बार २ देवता या पीर की चर्चा करता है तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

४५९ देश देश नो धालो न्यारो न्यारो है ।

देश देश के रीति-रिवाज, पहनाव और बोलियाँ भिन्न २ होती हैं ।

४६० धणी जतरे धन, धणी गियो ने धन ग्यो ।

स्वामी के रहने तक ही धन बना रहता है, स्वामी के समाप्त होने पर सम्पत्ति भी समाप्त हो जाती है ।

इसी प्रकार पति के जीवित रहने तक उसकी आय द्वारा धन बराबर बना रहता है और उसके समाप्त हो जाने पर किसी आयके अभाव में बचा हुआ धन खर्च रूप में खुटता २ नष्ट हो जाता है।

४६१ धणी धणियकाणी नी जोड़ी है।

वामी और स्वामिनी की जोड़ी है।

तात्पर्य यह कि पति-पत्नी की पूर्णता एक दूसरे पर आश्रित है। एक के अभाव में दूसरा अपूर्ण ही रहेगा।

४६२ धणी नो कायदो धणियाणी ने हाथ मांये।

पति का मान रखना पत्नी के हाथ में होता है।

४६३ धन्धो करे जो धाई ने खाये।

काम करने वाला ही पेटभर भोजन कर सकता है।

जो आलस्यवश कोई काम न कर इधर-उधर अपना समय व्यर्थ खोकर दीन अवस्था में रहते हैं, उनके सम्बन्ध में यह कहावत कही जाती है।

४६४ धन जोबन माया तीन दड़ां नी पामणी।

सम्पत्ति, यौवन और ऐश्वर्य-ये तीन दिन के अतिथि होते हैं।

अर्थात् किसी भी व्यक्ति को इन्हें प्राप्त कर गर्व न करना चाहिये, क्योंकि ये कभी स्थायी रूप से नहीं रहा करते।

४६५ धन धणन्या नूं हूं जो धणन्यां हाथे धाय्यो।

सम्पत्ति उसके स्वामी की थी, जो स्वामी के साथ लुप्त हो गई-चली गई।

जब किसी के द्वारा सम्पत्ति उसके साथ ही समाप्त हो जाय तो यह कहावत कह कर सन्तोष प्रादन किया जाता है।

४६६ धन ने धणी धोरय्यां हाथे हैं।

सम्पत्ति और स्वामी-दोनों ही-वृषभों पर आश्रित होते हैं।

खेती पर जिनका जीवन-यापन आश्रित है, यदि उनके पास बैल न हो, या रुग्णावस्था में हों, तो गृह-पति को हाथ पर हाथ धरे बैठा रहना पड़ेगा; परिणाम स्वरूप न तो फसल के अभाव में सम्पत्ति ही मिल सकेगी, न वह अपने स्वामित्व के उत्तरदायित्व को ही पूरा कर सकेगा।

४६७ धनय्याए मारे राम धानूज मिलवहों।

धान खाने वाले को ईश्वर आगे धान ही देता है।

ईश्वर जैसे को वैसा ही प्रदान करता है।

४६८ धागड़ियो धान करे मनख नीकरे।

कोई मनुष्य अधिक अन्न प्राप्त करने पर झगड़ालू हो जाता है।

तात्पर्य यह कि अधिक भोजन पेट में पड़ने पर ही झगड़ा करने की सूझती है, अन्यथा भूखा व्यक्ति बेचारा क्या झगड़ा कर सकता है।

४६६ धाप्या माते डूमड़ी खीर रांदे ।

पेट भर जाने के बाद डूम जाति की स्त्री भी खिलाने लिये खीर पकाती है ।

तात्पर्य यह कि संसार में भूखे व्यक्ति को कोई नहीं पूछता । सभी घी में घी पूरते हैं ।

४७० धान खाहां थोड़ूज तो हमजता ओहां ।

थोड़ा-बहुत अन्न खाते हैं तो कुछ समझ होगी ही ।

प्रत्येक व्यक्ति में थोड़ी बहुत बुद्धि होती है, किन्तु जब किसी को निरा मूर्ख ही बताया जाय तो वह इस कहावत का प्रयोग करता है ।

४७१ धान जटे धनेरां हूं ।

जहाँ धान होगा धनेरिये (गेहूं में लगने वाला छोटा काला कीड़ा) भी वहाँ अवश्य होंगे ।

तात्पर्य यह कि जिसको जिस वस्तु की आवश्यकता होती है, वह वहाँ पहुँच जाता है ।

४७२ धान नी वकाये केलवणावाली वकादे ।

भोजन अच्छा बनने पर अन्न की प्रशंसा नहीं होती वरन् भोजन बनाने वाली की बड़ाई की जाती है ।

क्योंकि अन्न अच्छा होने पर भी बनाने वाली कुशल नहीं तो वह बिगड़ जायगा ।

४७३ धान नो हगरो हदा हाऊ।

धान का (अन्न का) संग्रह सदा अच्छा रहता है।

कारण कि समय परिवर्तनशील होने के कारण संकट पड़ने पर संग्रहित अन्न से भोजन की प्राथमिक आवश्यकता पूरी की जा सकती है।

४७४ धारज्ये ने धावन्ये काम नी थाय, काम धीरे हूं थाय।

धारणा मात्र से एवं जल्दबाजी से कोई काम नहीं बनता काम तो धैर्य के साथ करने से ही होता है।

४७५ धीरा नी चतरी ने आगत ना पालल्या।

धीरज रखने वाले की छतरी (छोटा मन्दिर) बनती है तथा जल्दबाजी करने वाले की समाधि पर पत्थरों का ढेर कर दिया जाता है।

तात्पर्य यह कि धीरज रखने में काम अच्छा और शीघ्रता में बिगड़ जाता है। 'Haste makes waste'।

४७६ धूल खाये ज्यो धाई ने खाये।

जो धूल खाता है (कड़ा परिश्रम करता है।)

वही भर पेट भोजन पाता है।

बिना कड़े परिश्रम के भर पेट भोजन नहीं मिल सकता।

४७७ धूल मांये धन है, न्यारो नी ।

धूल-धरती ही धन प्राप्ति का स्थान है, अन्य नहीं।

अन्न, खनिज आदि धरती से ही प्राप्त होते हैं, अन्यत्र नहीं। इसलिये उसका महत्त्व सर्वोपरि है।

४७८ धूल मांये धनाई नौपजै, भोग लागे भगवाने तांई दोष हणानो ।

अन्न मिट्टी में पैदा होता है और फिर भगवान भी उसका भोग लगाते हैं तो तुझे किस बात का दोष ?

अन्न ग्रहण करने में किसी बात का दोष नहीं मानना चाहिये।

४७९ धोली भेंता जाहो जेरा खबर पड़ हैं ।

कचहरी जाओगे तब विदित होगा कि अपराध के लिये क्या दण्ड मिलता है।

गाँवों में अन्य सभी-राजकीय-भवनों को छोड़ कर-मकानों की दीवालें या तो मिट्टी से पुती होती हैं या गेरुआं रंग से। इसलिये 'धोली भेंता से' राजकीय-भवन, कचहरी रावरा आदि की ओर प्रकाश पड़ता है।

४८० नई नां डींगा हरखो नमी ने रेवूं ।

नदी में जो लम्बी २ घास होती है, अत्यधिक जल प्रवाह में भी झुक कर अपनी रक्षा कर लेती है, उसी प्रकार हमें भी झुक

(विनम्रता से) रहना चाहिये, जिससे जीवन के संघर्ष में अपनी रक्षा सहज ही में की जा सके।

४८१ नखाँ आंगली चे.टी।

नाखुनों से अंगुली दूर रहती है

कई विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के समीप रहने पर भी उनमें परस्पर मिलनसारिता न होने के कारण दूर ही समझी जायँगी।

४८२ नगध गणहो जेरां ते खबर पड़ हें।

जब नकद (रुपैये) गिनोगे (खर्च करोगे) तब पता चलेगा।

इस कहावत का प्रयोग जब किया जाता है जब कोई व्यक्ति विचार और व्यवहार का अन्तर न समझ कर बढ़ २ कर बातें करता है।

४८३ नर भमरां भोमका भागे।

पुरुपार्थी मनुष्य पृथ्वी को चीरते हैं।

तात्पर्य यह कि पुरुषार्थी व्यक्ति ही धरती पर हल चला, उसे खोद भाँति २ की सम्पत्ति को प्राप्त करताहै।

४८४ नटे जणानो नाक कटे।

एक बार कह फिर मना कर देने पर मान-हानि होती है।

इसलिये कहा गया है-"प्राण जाय पर प्रण न जाई"- कही हुई बात अवश्य पूरी करनी चाहिये।

४८५ नटे तीने हूं कटे ने हूं वटे ।

एक बार हां कर फिर मना करने की जिसकी प्रकृति ही पड़ चुकी है, उसके लिये क्या तो मान-हानि और क्या मान-प्राप्ति ।

४८६ नवरां नी गवरी* ने भांडा नी होली-: ।

बेकार लोगों के लिये 'गवरी' और भांडों के लिये होली का त्यौहार है ।

तात्पर्य यह है कि बेकाम-काजी व्यक्ति ही इतने लम्बे समय तक 'गवरी' खेलने और होली के गाने में अपना समय लगा सकता है ।

४८७ नवरी नखरा करे ।

बेकार स्त्री ही अत्यधिक शृंगारिक प्रसाधनों में अपना समय लगाती है ।

जिस स्त्री पर कार्य की जिम्मेवरी है वह अपना अधिकांश समय बनाव-शृंगार में नहीं लगा सकती ।

---

* वर्षा-ऋतु में भील-लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर 'गवरी' खेलते फिरते हैं, जिसमें भाँतर की नकलें होती हैं । इनकी मान्यतानुसार पार्वती (गौरी) इनकी सजातीयिनी है और वर्षा में वह अपने पीहर आती है, जिसको प्रसन्न करने के लिये ये खेल खेलते हैं ।

-: होली के दिन से बहुत पहले और बाद तक भांड लोग असभ्य-होली गीतों को गाते फिरते थे, आज भी कहीं २ ऐसा होता है ।

४८८ नवरी नातरां नंगे राखै ।

बेकाम-काजी स्त्री पुनर्विवाह की खोज में रहती है ।

ठाले व्यक्ति के मस्तिष्क में कुचक्र चलते ही रहते हैं ।

Idle man's Brain is devils workshop.

४८९ नवले नावे दाड़ा पामणी पाँच दाड़ा ।

नया नया ही कोई व्यक्ति यदि किसी के यहाँ जायगा तो अधिक से अधिक नौ दिन सम्मान प्राप्त कर सकेगा और इसी प्रकार कोई मेहमान पाँच दिन अच्छी तरह रखा जायगा ।

तात्पर्य यह कि अधिक समय तक कोई किसी पर भार बन कर नहीं रह सकता ।

४९० नवा घोड़ा नेसांण ।

नये घोड़े के संकेत की आवश्यता होती है ।

अर्थात् नये घोड़े को साधे बिना सवारी नहीं करनी चाहिये ।

४९१ नाई आटो खादो हियारमे कूतरू कूटक्यू ।

नाई में तो आटा खाया और सियरमा में कुत्ते को पीटा ।

यानि किसी के अपराध की सजा उसी के समान या पड़ोसी दूसरे व्यक्ति को अन्य स्थान पर देने के लिवे इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

४९२ नाग ने आग लूमतां वला नी करे ।

सर्प और अग्नि मनुष्य को लगते देर नहीं करते ।
दोनों से दूर रहना ही हितकर है ।

४९३ नाटा बाबा नी धूणी तक धाम ।

भगे हुए साधू की पहुँच उसकी धूनी तक होती है ।
किसी व्यक्ति की सीमित शक्ति के लिये इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

४९४ नाड़ा खाड़ा हे काल ना गाड़ा ।

नाले और पोखर अकाल में बड़े लाभप्रद होते हैं ।
किसी छोटी वस्तु का महत्त्व उसकी लघुता के कारण कम नहीं हो जाता । समय पर छोटी और बड़ी-सभी वस्तुयें-उपयोगी सिद्ध होती हैं ।

४९५ नाना चोरा मांटी मरावी ने भेरा ।

बच्चे बड़ों में झगड़ा करवा कर पुनः घुल-मिल जाते हैं ।
इसलिये बच्चों की बात को गंभीरता पूर्वक लेकर बड़ों को नहीं झगड़ना चाहिये ।

४९६ नार कूट नकटू थाई जाय ते हूं कटे ।

स्त्री को मारने से वह मानोपमान-शून्य हो जाती है, इससे न तो मारने वाले को ही कोई लाभ होता है और न मार खाने वाले का ही कुछ बिगड़ता है ।

तात्पर्य यह कि स्त्री के साथ मार-पीट का व्यवहार करने से उसकी प्रकृति बदली नहीं जा सकती।

४६७ नार चोर ना कुण करे संग।

स्त्री और चोर का साथ कोई नहीं करता।

नारी यात्रा की कठिनाइयों का सामना नहीं कर सकती और चोर अपने साथी को भी कु-कृत्यों में लपेट सकता है।

४६८ नार ना मूंडा मांये हात नी दड़वो।

शेर के मुँह में हाथ नहीं डालना चाहिये।

अपने से अधिक शक्तिशाली से दुश्मनी मोल नहीं लेना चाहिये, जिसमें हानि की ही संभावना रहती है।

४६६ नौकरी तरवारें नी धार।

नौकरी करना तलवार की धार पर चलना है।

वही व्यक्ति सफलता पूर्वक नौकरी कर सकता है, जो नियमित, अनुशासन-प्रिय, मिलनसार एवं परिश्रमी हो और इन सभी बातों का निर्वाह करना सर्व-साधारण के लिये कठिन होता है-इसलिये कहा जाता है कि नौकरी करना बड़ा कठिन कार्य है। दूसरी ओर भीलों की अपनी स्वच्छन्द प्रकृति के कारण भी यह कार्य उनके लिये और अधिक कठिन होता है।

५०० नी ते जात नी, नी भाँत नी ।

न तो वह (स्त्री) जाति की ही है और न अन्य स्त्रियोचित गुणों से ही युक्त है ।

यानि किसी भी प्रकार की समानता जिसमें न मिले, उसके लिये इस कहावत का उपयोग किया जाता है ।

५०१ नी तो घर नी, ने आंगण नी ।

न तो गृह-कार्य के योग्य और न बाह्य-कार्य करने में ही समर्थ ।

सभी ओर से अयोग्य स्त्री के लिये यह कहावत कही जाती है ।

५०२ नी मरे ने नी माचो चोड़े ।

न तो मौत आती है न बीमारी दूर होती है ।

जब कोई अयोग्य व्यक्ति किसी ऐसे पद पर आ जाय, जिस कार्य को करने में वह असमर्थ हो और उससे चिपका रहे; ऐसी स्थिति में यह कहावत चरितार्थ होती है ।

५०३ नीर नवाणां, धान कोटारां ठरे हैं ।

जल कुओं में तथा अन्न कोठार (संग्रहालय) में ही बना रहता है ।

उपयुक्त स्थान के अभाव में कोई वस्तु सुरक्षित नहीं रहती ।

५०४ पंच घणां ने चोवरा हांकड़ा ।

पंच बहुत हैं और चौरा (पंचायती का स्थान) छोटा है ।

तात्पर्य यह कि पंचायत के अवसर पर बहुत से लोग पहुँच जाते हैं।

५०५ पगरकू पग नू काम नू, बीजो हूं काम आवे।

जूता पाँव के ही काम आ सकता है, दूसरा उसका क्या उपयोग ?

किसी निकृष्ट व्यक्ति को लेकर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

५०६ पग नी जोड़ी ने भाई नी जोड़ी राम नी तोड़े ते ठीक रे।

पैर और भाई की जोड़ी यदि परमात्मा भंग नहीं करे तो अच्छा है।

कोई एक पाँव टूट जाने पर व्यक्ति अपंग हो जाता है और इसी प्रकार किसी का भाई नष्ट हो जाने से उसका सहायक समाप्त हो जाता है– दोनों ही स्थितियाँ बड़ी कष्टप्रद हैं।

५०७ पगां आड़ी जोई ने नी हींडे ते ठोकर लागे।

पैरों की ओर देख कर नहीं चलने से ठोकर लगती है।

बिना दूरदर्शिता के कोई काम करने से कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, इसलिये चारों ओर देख-भाल कर के ही कोई काम करना चाहिये।

५०८ पगे लागजो माता ज़मन्ये रांडी कै मो हरखी थाजो ।

ज़मीन माता को दण्डवत करना और मेरे समान विनम्र बनना विधवा इस प्रकार कहती है ।

५०९ परेम बड़ो के पकवान ।

प्रेम श्रेष्ठ कि पकवान ? प्रेम के बिना अच्छे से अच्छे भोजन में भी अपमान की कटुता आ जाती है । क्योंकि जहाँ प्रेम नहीं होगा, मान भी वहाँ कैसे संभव है ।

५१० परसूं लागी आग, काल दियो तार, आज कोल देखो मेवाड़ नी चो मीना नी पोल ।

परसों आग लगी, कल तार दिया, आज उत्तर आने की आशा है । किन्तु उत्तर आया छः माह बाद ।

तभी तो मेवाड़ की पोल के सम्बन्ध में यह कहावत प्रचलित हुई ।

५११ पांच तेड़े ने पन्दरे आवे जणांनो हूं ठकाणो ।

पाँच को निमन्त्रण देने पर पन्द्रह आवें तो उनका क्या ठिकाना हो सकता है ?

बिना निमन्त्रण के इस प्रकार जाने से कोई विशेष स्थान नहीं मिलता ।

५१२ पांच जणा नूं काम पांच जणाज करहे, एक जणा हूं कई नी वे ।

पाँच व्यक्तियों का काम पाँच से ही हो सकना सम्भव है, एक व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता ।

५१३ पागड़्या वाली ते रे नी चींगरय्यांवालीए कूंण पूचे ।

पगड़ी बाँधने वाले (सम्पन्न लागों) लोगों की बात भी (आये वख्त) नहीं रहती तो छींदी वालों (भील जो सर पर वस्त्र बाँधते हैं) को कौन पूछता है ।

तात्पर्य यह कि जब धनी लोगों की बात भी नहीं मानी जाती तो निर्धनों की क्या चल सकती है ।

मेवाड़ी में भी इसी प्रकार कहा कहा गया है-"बड़ा २ तो वया जाय ने डोकरी के मने पार उतार ।"

५१४ पाड़ोसी कान भर हें, पेटनी भर हें ।

आस-पास के रहने वाले स्वार्थमय बातें भर करेंगे, उदर-पूर्ति नहीं करेंगे ।

उन लोगों के लिये इस कहावत का प्रयोग किया जाता है जो अपने पड़ोसियों की बातों में आकर ऐसा-वैसा काम कर अपने उदर-पोषण के कार्य में विघ्न खड़ा कर बैठते हैं ।

५१५ पाड़ोसी भाग ना आलवानो, कै ते चालन, भालवन ।

पड़ौसी भागीदार की भाँति हिस्सा नहीं देने का, वह या तो छलनी में बचा हुआ व्यर्थ-अन्न देता है या शिक्षा ।

५१६ पाणी तो आय्यो ने, पण पेही ग्यो ।

जल आया तो नहीं किन्तु जो था भी वह प्रवेश कर गया (उड़ गया) ।

तात्पर्य वह कि जहाँ जल की आवश्यकता थी, वह प्राप्त न हुआ किन्तु जो था वह भी समाप्त हो गया ।

५१७ पाणी नो परकोटो हाथां मांये नी हवाये ।

पानी का बुलबुला होथों से नहीं पकड़ा जा सकता ।

नाशवान वस्तु को कितना ही प्रयत्न करने पर भी बचाया नहीं जा सकता ।

५१८ पाणी में आग बाले, भाटा ना वेला पाड़ ज्यांहो है ।

जल में अग्नि प्रज्वलित करना पत्थर का बन्धन तैयार करने के समान है ।

यानि न तो पानी में आग ही पैदा की जा सकती है और न पत्थर का बन्धन ही तैयार किया जा सकता है । असंभव को संभव नहीं बनाया जा सकता

५१९ पाणी हरका ठंडा, पवन हरका पातला थाई ने रेवू।

जल के समान शीतल एवं वायु के समान पतला बन कर संसार में रहना चाहिये।

संसार में जल के समान शीतल यानि क्रोध रहित एवं वायु के समान पतला यानि गर्व-रहित हो कर रहने से सफलता पूर्वक जीवन-यापन किया जा सकता है।

५२० पातरू फडूकवा नूं, गाड़ा हेत टूटवाना, डूणी डगाडग बेड़लू फूटवा नू।

बारीक वस्त्र शीघ्र फट जाता है, गहरा प्रेम टूट जाता है और हिलती हुई इंडोणी हर रखा हुआ बेवड़ा-घड़ा-फूट जाता है।

न तो किसी से अत्यधिक हलके सम्बन्ध हीं, न डगमग करते हुए एवं न अत्यधिक निकट के सम्बन्ध बनाने चाहियें; क्योंकि तीनों ही स्थितियों में उनके छिन्न-भिन्न होने का भय बना रहता है।

५२१ पाना आड़ी परथमी वसे।

पत्ति की ओट में पृथ्वी बसती है।
साधरण सी ओट में बड़ीं २ बातें हो जाया करती हैं।

५२२ पाप नां पगां पाणी में देखैं ।

पाप के पद-चिन्ह तुरंत जल में भी दीख पड़ते हैं ।

पाप लाख प्रयत्न करने पर भी छिपाया नहीं जा सकता ।

५२३ पामणी पामणी हाप मार जो, तो खाहें धरे ना धणी हें ।

पाहुनी ! पाहुनी ! ! सांप मार, तो वह प्रत्युत्तर देती है कि वह तो घर के स्वामी को ही डसेगा ।

किसी को अच्छा कार्य करने को कहा जाय, किन्तु वह अपना भला-बुरा यदि नहीं सोच सके तो उक्त कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

५२४ पारकी चाकरी हदा खोटी ।

दूसरों की नोकरी या सेवा सदा बुरी समझी जाती है ।

इसलिये कहा गया है: "नौकरी न करवी, घास खोद खाइये, और खोदे खोदे आस-पास आपणे दूर जाइये । "

खास करके स्वछन्द प्रकृति के भीलों के लिये यह और भी कठिन होता है किसी की नौकरी करें ।

५२५ पारकी दलाली मां कई नी हाथे आवे ।

दूसरे की दलाली में कोई लाभ नहीं होता ।

दूसरों के लिये इधर-उधर की बातें करना मूर्खता है, जिससे कोई लाभ न हो ।

पारकी पामणी पारके नी पणावणी ।

पराई पाहुनी का विवाह किसी दूसरे के साथ नहीं करना चाहिये ।

तात्पर्य यह कि किसी दूसरे की चीज़ को जिस पर अपना कोई अधिकार नहीं, किसी अन्य व्यक्ति को नहीं सौंपना चाहिये ।

५२७ पारके गाल भराहें, पेट नी भराहें ।

दूसरे लोग बातों की भूख भले पूरी कर दें, पेट की भूख नहीं मेट सकते ।

यानि अन्य लोग इधर-उधर की चिकनी-चुपड़ी बातें भले ही करें, पेट-पूर्ति का साधन नहीं जुटा सकते ।

५२८ पुजारी नी पोल मांये पोल भाले है ।

पुजारी के द्वार के भीतर पोल देखने को मिलती है ।

पुजारी लोग बाहर से कुछ और होते हैं और भीतर से कुछ और ।

५२९ पूंजी गांठ नी, विद्या कंठ नी वे ते काम आवे ।

सम्पत्ति अपने अधिकार में तथा विद्या स्वयं के कण्ठ में होने पर ही काम आ सकती है ।

जो सम्पत्ति किसी अन्य के अधिकार में है तथा विद्या से कोई व्यक्ति पूर्ण रूपेण विभूषित है, तो वह अपने किस कामका ।

५३० पीठे एंठा ने मूंडे मीठां हारा है।

पीठ पीछे झूठे और मुँह पर मीठे सभी लोग होते हैं।

सामने तो बुराई नहीं करते किन्तु पीठ पीछे सभी बुराई करते हैं।

५३१ पेट पाड़ोसी माते नी वादारय्यो है, भज़ा माते वदारय्यो है।

पेट पड़ौसी के बल पर नहीं वरन् अपनी भुजाओं के बल बढ़ाया है।

अपने परिश्रम से बढ़ाये बड़े पेट वाले व्यक्ति के लिये इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

५३२ पेटे खाबो है पेटे बांधबो नी।

पेट में खाना है, पेटके बाँधना नहीं

अधिक आहार वाले व्यक्ति को जब इस सम्बन्ध में कहा जाय, तो उक्त प्रकार से वह उत्तर देता है।

५३३ पेल कोल् नो ते वावड़ो, पाना खोली नोडावड़ेज।

प्रथम वर्षा के बाद बुवाई होती है एवं प्रथम बार स्त्री की

कोख से उत्पन्न सन्तान मजबूत होती है।

प्रथम बार हुए किसी भी कार्य का अधिक महत्त्व होता है।

५३४ पेल तो गाम नो चाकर ने फेर ठाकर।

पहले तो गांव की अत्यधिक सेवा करने वाले बाद में स्वामी के समान बन जाते हैं।

"करेगा सेवा सो पावेगा मेवा।"

५३५ पेट मांये भूखी हूं कोयरा वियाँयें ने वली वली न वऊनी वात करे।

पेट में तो भूख से जानवर पैदा हो रहे हैं और वह रह रह कर विवाह की बात करता है।

दरिद्रता से ग्रसित कोई व्यक्तिबुभुक्षा-पीड़ित होकर या उसके यहाँ आये हुए मेहमानों की ऐसी स्थिति होते हुए भी जो वह शादी-विवाह की बात बार बार करे तो कोई बुद्धिमानी नहीं। क्योंकि विवाह मोने पर तो एक प्राणी का भार और भी बढ़ जाता है।

लाभ एवं नियम को नहीं देखता।

५३६ फायदो कायदो नी जोवे।

कोई ऐसा व्यक्ति जो लाभ-हानी के विवेक से शून्य है तथा नियमों का उल्लंघन करता है, उसके सम्बन्ध में यह कहावत चरितार्थ होती है।

५३७ फायलां रेई ने पड़ी ने पचताणे हूं थाये ।

पीछे रह कर गिर जाने पर या पिछड़ जाने पर क्या पश्चाताप हो सकता है ।

यानि समय चूकने पर जब काम बिगड़ जाता है तो फिर पछतावा करना व्यर्थ है ।

५३८ फूल फूल्या ते कुंवारा रे मद्या के मोये परणावो ।

पुष्प के समान खिले हुए पुत्र तो कँवारे हैं और बीच की स्थिति वाला कहता है कि मेरा विवाह करो ।

तात्पर्य यह कि जो कार्य प्रथम होना चाहिये तथा जिसकी संभावना अधिक है वह भी नहीं हो पा रहा तो वह कम संभावना वाला मध्यम कार्य होना कैसे संभव है ।

५३९ फोत्यो है—हूं काम नो ।

जगह २ घूमने वाला बेकार व्यक्ति किसी काम का नहीं समझा जाता ।

५४० बगलाए हाबू हूं देवो ।

बगुले के साबुन क्या लगाना ।

किसी समझदार व्यक्ति को समझाना व्यर्थ है ।

५४१ बचके बतको कोई नी जाणे लसको ।

कन्धे से पीछे पीठ पर बाँधे गये वस्त्र में मदिरा भरने के

वर्तन को धारण करने वाले की नीचता को कहीं जाना जा सकता।

धोके से यदि कोई काम किया जाता है तो वास्तविकता को समझना टेढ़ी खीर हो जाती है।

५४२ बलत्या ए हूं बालवो।

जल रहे को और क्या जलाना।

दुःखी व्यक्ति को और दुःखी नहीं बनाना चाहिये।

५४३ बलद बेटी जठे जाई बैठे वठे बापोती।

बैल और बेटी जहाँ जाकर जम जाते हैं, वहीं अपनी पैत्रिक सम्पत्ति बना लेते हैं।

जिसके यहाँ पर बैल जाता है, वही उसका स्वामी बनकर उसकी रक्षा करता है। इसी प्रकार जब बेटी विवाह करके बाप के घर से पति-गृह को जाती है तो वही गृह उसके लिये सब-कुछ बन जाता है।

५४४ बांधी मूठी आपनी, खूली मूठी जातनी।

बँधी हुई मुट्ठी स्वयं की तथा खुली हुई मुट्ठी जाति की समझी जाती है।

कोई बात जब तक अपने तहं छिपी रहती है, कोई बात नहीं, किन्तु उसके प्रकट होने पर जाति के लोग उस पर अपना अधिकार समझने लगते हैं।

५४५ बाप घरे एंड जोवू पण वोर एंड नी जोवू ।

हे पिता ! घर भले बुरा देखना, परन्तु पति त्रुटि-पूर्ण न ढूंढना ।

घर त्रुटिपूर्ण होने पर यदि पति सुयोग्य होता है तो सभी त्रुटियों का दूर हो सकना सम्भव है ।

५४६ बाप जहां बेटा, मां जांहीं डीकरी ।

पिता जैसा पुत्र और माता जैसी पुत्री ।

पिता का प्रभाव पुत्र पर और माता का पुत्री पर पड़ना बहुत स्वाभाविक है ।

५४७ बापड़ो बापड़ो करे जो वलद थोड़ी है ।

बेचारा बेचारा करते हो सो वह बैल थोड़ा ही है ।

बैल पशु होने से असहाय होता है, किन्तु मानव पशु के समान बेचारा नहीं होता, इसलिये बेचारा कहना उचित नहीं ।

५४८ बाप मरी ग्यो, कणन हाथांमां में बटकू रोटो नी मेल्यो ।

पिता के देहावसान पर किसी के हाथ पर एक टुकड़ा रोटी का नहीं रक्खा ।

मृत्युभोज की प्रथा आवश्यक समझी जाती है ।

५४९ बामण वाल़ो बबराहो है।

यह तो ब्राह्मण का 'बबराटा' है।

ब्राह्मण बार बार दया-भक्ति आदि की बातें करते हैं, परन्तु वह ढोंग तक ही सीमित होती है।

इसी प्रकार व्यर्थ के उपदेश बार २ दुहराने पर यह कहावत कही जाती है।

५५० बारे बारे बेटा जणिया, कापड़ी नोको नी पलाल़्यो ती चा़मलि़यो मँही मँही आड़ी जोई रय्यो है।

बारह २ पुत्र हुए फिर भी नहाना तो दूर रहा, कंचुकी की कस तक नहीं भिगोई, फिर भी ईश्वर उस पर प्रसन्न है।

बिना प्रयत्न के ही जब मनोवांछित फल मिल जाता है तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

५५१ बारे मीना खाऊँ जतरा कण्का रामजी दीदा है।

बारह महीने खाया जा सके उतना अन्न ईश्वर ने दिया है।

अधिक अन्न प्राप्त होने पर प्रसन्नता व्यक्त की जाती है, क्योंकि भोजन जीवन की प्रमुख आवश्यकता है।

५५२ वाल़्ल्यू बल़े ने राल़्ल्यू रल़े जतरे माते नी लेवू ।

जलने वाले जल जाय (कोई आपत्ति समाप्त हो जाय) और झगड़ा करने वाले झगड़ते रहें, तब तक उस आपत्ति को अपने सर पर नहीं लेना चाहिये ।

तात्पर्य यह कि जहाँ तक हो सके विपत्ति को अपने से दूर रखना चाहिये ।

५५३ बियां नी फूट, तीजाए लाभ ।

दो की फूट में तीसरे को लाभ होता है ।

अतः परस्पर फूट पैदा कर हानि नहीं उठानी चाहिये ।

५५४ वेच़ू ना ज़ाब नी जाणे ने ज़ाई ने काला उतारे ।

बिच्छू उतारने का मन्त्र भी नहीं जानता और जाकर काले विशैले सर्प का विश उतारता है ।

जो व्यक्ति साधारण कार्य भी कर सकने की क्षमता नहीं रखता वह यदि किसी असाधारण कार्य को हाथ में ले तो बड़ा हास्यास्पद लगता है ।

५५५ बेटा करे तो बाप के दो करजे, आप के दो हके करजे।

बेटा ! करे तो बाप कहे वैसा करना। अपनी इच्छानुसार मत करना।

पिता के कहे अनुसार करने में हानि की आशङ्का कम रहती है क्योंकि अनुभवी होने के कारण सोच-समझ कर ही कुछ करने को वे कहते हैं, किन्तु अनुभव की कच्चाई के कारण पुत्र स्वच्छन्दता से कार्य करने पर हानि उठा सकता है।

५५६ बेटो जण कि घरे चढ़।

पुत्रवती हो अथवा घर को छोड़।

किसी ऐसी स्त्री को जिसके पुत्र नहीं होता, सम्भवतः उसका पति कहता है कि या तो पुत्र-प्रसव को प्राप्त कर या गृह-त्याग कर।

५५७ बेटो पाएने, वऊ बाएने परखांये।

पुत्र की पालने में तथा बहु को आते ही द्वार पर जांच हो जाती है।

दोनों के गुणों का पता शीघ्र ही चल जाता है।

५५८ बे दड़ा कल नो पाणी पीवो है तो एम ने करवू।

दो दिन शान्ति से पानी पीना (जीवित रहना) है तो इस प्रकार (अनुचित कार्य) नहीं करना चाहिये।

जीवन की लघु अवधी को शान्ति पूर्वक बिताने के लिये कोई ऐसा वैसा अनुचित काम नहीं करना चाहिये।

५५९ बैठे काम नी चाले काम ते कीदे चाल है।

काम बैठे रहने से नहीं वरन् करने से बनता है।

५६० बोल्ये बोल्ये केई बात बोलाई जाये।

बोलते २ अर्थात बात करते २ कई बातें बोलने में आ-जाती हैं।

इसलिये बात-चीत करते समय काफी सावधानी बरतनी चाहिये, जिससे कोई अनुचित बात कहने में न आजाय।

५६१ बोली नो कई बन्ध नी है।

बोलने में कोई रुकावट नहीं होती।

व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अनुचित बात कह सकता है किन्तु बाद में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अतः बोलते समय ध्यान रखना चाहिये।

५६२ बोले नी जतरो बोये।

जितना बोलता नहीं उतना भीतर ही भीतर नुकसान पहुँचाता है।

चुपचाप भीतर ही भीतर जो षड्यंत्र करता है उसके लिये इस कहावत का प्रयोग होता है।

५६३ भणन्या ना आंखां मांये धूलो पड़े।

शिक्षितों की आंखों में धूल पड़ती है।

शिक्षित को यदि, कोई अशिक्षित मूर्ख बना देता है तो इस कहावत को प्रयुक्त किया जाता है।

५६४ भण्यो अणभण्याए ठगे।

पढ़ा हुआ अनपढ़ ठगता है, यह उचित नहीं।

५६५ भक्ति टाल मुक्ति ने थाये।

भक्ति के बिना मुक्ति नहीं होती।

जन्म-मरण के आवागमन से मुक्त होने के लिये ईश्वर-भक्ति अनिवार्य मानी जाती जाता है।

५६६ भमन्ये भमन्ये भोव न वीते।

घूमते रहने से जीवन व्यतीत नहीं होता। अर्थात् जीवन सफल नहीं होता।

५६७ भरीया समन्द मांये भाटो दड़वो हाउ ने है।

भरे हुए समुद्र में पत्थर डालना अच्छा नहीं है।

किसी के बने-बनावे काम को बिगाड़ने की चेष्टा करना उचित नहीं।

५६८ भलान दन दूणा रात चोगणा बढ़े भण घटे नी।

भले का दिन दूना रात चौगुना बढ़ना होता है, घटना नहीं।

ईश्वर का सहयोग अच्छे व्यक्ति को प्राप्त होता है।

५६९ भलाये भलो कै, खोटाये भलो कै ज्यो कूंण।

भले को भला सभी कहते हैं, बुरे को भला कोई नहीं कहता।

बुरा भला नहीं कहा जा सकता।

५७० भील चाली नू हूं राखवू ने हूं दूखवू।

भील और बकरी का क्या तो रखना और क्या दुःख देखना।

अर्थात् दोनों पर अधिक व्यय नहीं करना पड़ता। भील मोटा खा-पहिन कर काम कर लेगा और बकरी का निर्वाह जंगली पत्तियों से हो जायगा तथा कोई विशेष सेवा की आवश्यकता भी नहीं रहेगी।

५७१ भलो मनख हे तो वो भगवान है।

भला मनुष्य भगवान के समान समझा जाता है।

ईश्वर सदा अच्छे काम करता है, उसी प्रकार आदमी अच्छा तभी कहलायगा जब वह अच्छे काम करेगा।

५७२ भाई आपणां भाभी पारकी, कई बाँधे राकी।

भाई अपने हैं किन्तु भाभी पराई है तो वह राखी कैसे बँधा सकता है।

बहिन राखी के उपहार के लिये निराश होकर कहती है। अवसर पर भी जब व्यक्ति विशेष से कुछ मिल सकने की आशा नहीं रहती तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

५७३ भाई कूंण तो चोटो ने कूंण मोटो, मारी होंड़ी पाचे आंगली बरोबर।

भाई कौन तो बड़ा है ने कौन छोटा, मेरे लिये तो पाँचों अंगुलियाँ बराबर हैं—यानि उनका समान महत्त्व है।

निर्णायक की दृष्टि सभी पर समान होनी चाहिये।

५७४ भागू टूटू झूंपड़ू वे ते ठालू बूलू आवी ऊबू।

टूटा-फूटा झोंपड़ा हो तो कोई आकर खड़ा तो रह सके।

प्रत्येक व्यक्ति को मकान की बड़ी आवश्यकता होती है, चाहे वह कैसा भी क्यों न हो।

५७५ भागू धाड़ू के' ड़ां माते।

असफल सामूहिक लूट में कुछ नहीं मिला तो भगते २ वे बछड़ों को भगा ले जाते हैं।

नहीं मिलने से तो कुछ मिलना अच्छा ही है।

५७६ भागू भील वालरे हंदाये कै चाल्या।

टूटा हुआ भील झाड़ियों को खेत में जला कर या बकरियों को पालने पर पुनः अपनी स्थिति सुधार लेता है।

तात्पर्य यह कि किसी की बिगड़ी स्थिति कड़े परिश्रम से पुनः सुधर जाती है।

५७७ भायां ना हांडा रात दाड़ो भमड़ता रें।

भाइयों में आपस का झगड़ा चलता ही रहता है।

इसलिये इस बात पर चिन्तित होना व्यर्थ समझा जाता है।

५७८ भीड़ भाय्या हूं भागे।

कठिन समय भाइयों से ही निकलता है।

यानि आड़े समय में घर के लोग ही काम आते हैं।

५७६ भील भैंस ना बांका हेंगड़ा।

भील और भैंस के टेड़े सींग होते हैं।

दोनों से बचते रहना चाहिये।

५८० भूतां भेलू रेवू, फटकार भामू नी बिहवू।

भूतों के साथ रह कर फटकार से डरना नहीं चाहिये।

५८१ भूखे मरे बे लगाई नां लोक ।

दो स्त्रियों वाला पति भूखे मरता है।

क्योंकि दोनों स्त्रियां अपने पति की सुविधा के लिये एक-दूसरे के भरोसे रहती हैं।

५८२ भूंडी रांड ना हूं भरोसा ।

कुचलन स्त्री का विश्वास नहीं किया जा सकता।

५८३ भेरूनाथ भला करे ने घर पाड़ी ने चौंतरा ।

भेरूजी भला क्या करें, वे तो दूसरों के घर पड़वा कर अपने लिये चबूतरा तैयार करवाते हैं।

बड़े आदमी दूसरों का भला तो क्या करें, एक दूसरे में फूट पैदा कर के अपना ही स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

५८४ भेला जतरे भाई, भाग पड्या ने भागड्या ।

सम्मिलित रूप से रहते हैं उस समय तक तो भाई बने रहते हैं और आपस में हिस्सा होते ही वे भागीदार रूप में परिणत हो जाते हैं।

साथ २ रहने पर समझौते से काम चल जाता है, किन्तु अलग होते ही अधिकारों के लिये झगड़ा प्रारंभ हो जाता है।

५८५ भो भूमिका वांकी लोग ।

डर से स्थान भी बड़ा अजीब लगने लगता है।

५८६ भोयें नो पड़यो कई भोयें थोड़े वे ।

भूमि का पड़ा कोई ज़मीन पर ही थोड़े रहता है ।

समय की परिवर्त्तन शीलता के साथ किसी के बुरे दिनों में भी परिवर्तन अवश्य आता है ।

५८७ भोला ना भगवान हैं ।

सीधे लोगों का सहायक ईश्वर समझा जाता है।

५८८ भोलो थाई ने भोलवीन, आपणो भलो करे है ।

कपटी व्यक्ति भोला बन कर दूसरों को भुलावे में डाल कर अपना स्वार्थ सिद्ध करता है ।

अतः ऐसी मीठी बातें करने वालों से पहले ही सावधानी बरतनी चाहिये ।

५८९ मंगरे लाये लागे ते लागवे दियो, तमा हाते हके धामो ।

पहाड़ पर आग लगे (लड़ाई हो) तो लगने (होने) दो, तुम तुम उसके साथ २ मत दौड़ो ।

व्यर्थ ही किसी की लड़ाई में नहीं पड़ना चाहिये ।

५९० मजूरी नो मुलाइजो नी, घरे नो मुलाइजो ।

पारिश्रमिक के विषय में मुलाहजा नहीं रक्खा जा सकता ।

मुलाहजा तो घर का यानि घर पर ही रक्खा जा सकता है।

५९१ मते मते मेवाड़ भांग्यो।

मत की विभिन्ताओं में मेवाड़ नष्ट हो गयाा।

किसी भी देश की समृद्धि के लिये मतैक्य होना आवश्यक है।

५९२ मन कै मालन्या वेहों, करम कै कींकोड़ा वीणू।

मन कहता है महलों में बैठूं, किन्तु भाग्य कहता है 'कींकोड़ा' जंगली-शाक इकट्ठा करूं।

मन की इच्छा भाग्य के विरुद्ध पूर्ण होना सम्भव नहीं।

५९३ मनख कतराक दाड़ा हाग्यो रे।

मनुष्य कितने दिन काबू में रहता हुआ काम दे सकता है।

किसी के नहीं चाहने पर उससे अधिक दिनों तक काम नहीं लिया जा सकता।

५९४ मनख कूतरा माते कूतरू पाड़ी ने वेगला हरखी जाय।

मनुष्य कुत्तों को लड़ा कर दूर हट जाता है।

यानि एक दूसरे को लड़ा कर वह दूर खड़ा २ देखता है।

५९५ मनख नूं माजनो खाएड़ा मांये।

मनुष्य का मान जूते लगाने (सजा देने) में रहता है।

अर्थात् वह ठीक तरह से दण्ड के भयसे काम करता रहता है।

५९६ मनख मेलो मनख, चोपा मेलो चोपो।

मनुष्य के साथ मनुष्य एवं पशुओं के साथ पशु एकत्रित होते हैं।

तात्पर्य यह कि मनुष्य के साथ मनुष्य का एवं पशु के साथ पशु का निभाव हो सकता है। समझदार के साथ मूर्ख का निभाव नहीं हो सकता।

५९७ मनख वातां वातां मांये वलुम्बावी दिये।

मनुष्य बातों ही बातों में भुलावा दे देता है।

इसलिये किसी की बातों में नहीं आना चाहिये वरन् स्वयं बहुत सोच-विचार कर काम करना चाहिये।

५९८ मनख हूँ करे, जमानो करे।

मनुष्य कुछ नहीं करता, समय ही सब कुछ करवाता है।

समय बड़ा शक्तिशाली होता है, उसी के अनुसार मनुष्य को कार्य करना पड़ता है।

५९९ मनखां ने गाल में गोला उठे।

मनुष्यों के गालों में तोप के गोले उठते हैं, जिससे बड़ा अनर्थ हो जाता है। मनुष्य को सदा सोच-समझ कर बोलना चाहिये।

६०० मन देवता नी है, मन वे जठे जाई ने बेहे ।

मन ईश्वर नहीं है, वह तो इच्छानुसार कहीं भी जाकर बैठ जाता है ।

देवता में बुरी प्रवृत्ति नहीं होती किन्तु मन बुरी प्रवृत्तियों की ओर भी चलायमान होता है ।

६०१ ममता हूँ नी मरवो, ममता कणीक दण मारी दड़े ।

गर्व ही गर्व में चकनाचूर नहीं होना चाहिये–किसी दिन इससे विताश तक हो जाता है ।

गर्व वश हठ पकड़ अपना विनाश नहीं करना चाहिये ।

६०२ मरती दण राम राम करे ते राम हूँ करे ।

मरने समय राम राम किया जाता है तो राम क्या कर सकता है ।

पहले ही यदि राम को याद किया गया होता तो कष्ट पड़ने पर काम आता ।

६०३ मरती दन भाभाजी खीचड़ी जीमो ।

मृत्यु-समय पर वृद्ध सम्बन्धी पुरुष को कहा जाये कि खीचड़ी खाओ ।

अन्त समय में ही लोगों को अपने-पराये का भान होता है ।

६०४ मरहें जेरां हारो गांठड़ी बांधीने लेई न जाहें।

मरने पर सब गांठ बाँध कर ले जायेंगे।

अत्यधिक संग्रह-वृत्ति वाले कंजूस व्यक्ति के लिये यह कहावत कही जाती है।

६०५ मरदनी मूच ने कूतरानी पूंच वांकीज रे।

मर्द की मूंछ और कुत्ते की पूंछ दोनों टेढ़ी ही रहती है।

कितना ही प्रयत्न करने पर भी जब किसी का टेढ़ापन नहीं जाता तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

६०६ मरद वगर होना धके मसाण।

पुरुष के बिना शून्य-स्थान श्मशान के समान भयावना लगता है।

६०७ मरवा वाला मरी ने गया, मोये फायले मारी न गया।

मरने वाला तो मर गया, किन्तु मरने पर पीछे मुझ को भी मारता गया।

मरने पर जब कोई कर्ज विगेरह छोड़ जाता है तो इस कहावत का प्रयोग होता है।

६०८ मरी ने मालवे नी जावू।

मर कर मालवे नहीं जाना है।

अत्यधिक कष्ट उठा कर किसी अच्छे, किन्तु दूरस्थ स्थान पर जाना ठीक नहीं।

६०९ मरे जणानी मोज ने जीवे जणा नी मौत।

मरने वाला तो मर कर सुखी हो जाता है, परन्तु जीवित व्यक्ति को कष्ट भोगना पड़ता है।

मरने पर व्यक्ति अपनी जिम्मेवरियों से मुक्त हो जाता है किन्तु उसके पीछे वाला जीवित व्यक्ति कष्ट उठाने को रह जाता है।

६१० मलगालू वाणियो मांये पड़ी न मारे।

दरिद्र दिखाई देने वाला बनिया लोगों की सहानुभूति प्राप्त कर अनुचित लाभ उठाता है।

६११ मांगय्या घी ऊं चूरमों नी थाये।

मांगे हुए घी से चूरमा नहीं बनता।

इधर उधर से माँगकर लाई वस्तुओं से न तो अधिक समय तक काम चलाया जा सकता है और न किसी भी अच्छे कार्य को पूरा ही किया जा सकता है।

६१२ माँगय्ये मंगलवारे मौत नी आवे।

माँगने से ही मंगलवार को मृत्यु नहीं हो जाती।

तात्पर्य यह कि मंगलवार को मरने से कोई विशेष हानि नहीं होती, ऐसा समझा जाता है, किन्तु माँगने पर वह भी नहीं मिलती।

६१३ मां तो एक मां है ।

माँ के द्वारा जो निस्वार्थ-प्रेम संसार में पुत्र को मिलता है वह अन्य कोई नहीं दे सकता ।

६१४ मां बाप जलम दिये, जमारो हाथ नी दीये ।

माँ बाप तो जन्म दे देते हैं, जीवन भर साथ नहीं देते ।

जीवन सफलता पूर्वक बिताने के लिये मात-पिता पर आश्रित रहना कोई बुद्धिमानी नहीं । इसके लिये तो स्वावलम्बी होने से ही काम चलता है ।

६१५ माचली लगाई उल्टी मत, उल्टे पाणी चढ़े ।

मछली एवं स्त्री की बुद्धि उलटी होती है, मछली जल-प्रवाह के विपरीत बहती है और स्त्री व्यवहार -विरुद्धकार्य करती है ।

६१६ मानवू हारा नूं, करवू मन नू ।

सभी की बातें सुनना चाहिये, किन्तु करना वही चाहिये जो स्वयं की दृष्टि में उचित लगे ।

६१७ मान नो कण भलो, को मान नो मण खोटो ।

प्रतिष्ठा पूर्वक एक दाना भी मिले तो अच्छा है परंतु अपमान से मण यानि थोकबन्द भी कोई चीज़ मिले तो बुरा !

सम्मान के बिना जीवन दूभर हो जाता है, इसलिये जीवन में मान और प्रतिष्ठा का सर्वोपरि स्थान है ।

६१८ मान वे तो मंगरे चढ़वू पड़े ।

यदि सम्मान हो तो पहाड़ भी चढ़ना पड़े ।

यानि प्रेम और मान के लिये कठिन से कठिन कार्य भी करने पड़ते हैं ।

६१९ मामा आय्या मोड़ा खाहें वणाना फोड़ा ।

मामा विलम्ब कर के आया तो अपने दुःखों को सहन करेगा ।

यदि कोई मेहमान किसी के यहाँ अधिक रात गये देरी से पहुँचता है तो कष्ट सहन करने का कारण वह स्वयं होना है ।

६२० मायलो तो रंग्यो नी ने लबरो रंगीने फरता हेंडे ।

भीतर से तो अपने को शुद्ध किया नहीं और बाहर से वस्त्र रंग कर फिरता रहता है ।

जहाँ तक अन्तरात्मा शुद्धता के रंग में नहीं रंगी जाती ऊपर से वस्त्रों को रंगने से कोई लाभ नहीं ।

६२१ मार आवे ने मामा चीते आवे, हाऊ आवे ने खूब-भावे ।

कठिनाई के समय तो मामा की सुधि हो आती है और कोई अच्छा अवसर आता है तो उसे बहुत पसन्द किया जाता है ।

बहाने बाज और आनन्द ही आनन्द चाहने वाले के लिये यह कहावत कही जाती है ।

६२२ मारी ने रोवो पड़े तेवो नी करवो ।

मार कर रोना पड़े ऐसा नहीं करना चाहिये ।

किसी को कष्ट पहुँचाने पर स्वय पर भी आपत्ति आ जाय ऐसा काम नहीं करना चाहिये ।

६२३ मारे खावो नी ते पचवो हांए ।

मुझे जब खाना ही नहीं तो शरीर तोड़ परिश्रम क्यों करूँ ।

जिस काम को करने से कोई लाभ नहीं मिल सकता ऐसा काम करनाही व्यर्थ है ।

६२४ मारे मोरल्या धोरी हाजा रेहें ते कणीनी जूटी ने करूं ।

मेरे आगे चलने वाले बैल जिवित रहें तो मुझे किसी झूट-कपट करने की आवश्यकता नहीं ।

बैल अच्छे होने पर खेती अच्छी प्रकार से होगी, तो फिर किसके लिये अन्य लोगों की खुशामद की जाय ।

६२५ मारे लाड़ला हेठ वणारा वदारया मोटा पेट ।

मुझे सेठ प्यारे लगते हैं इसलिये उनके पेट बढ़ाने में मैंने योग प्रदान किया है ।

माहजन अनुचित रूप से धन कमा कर अपना घर भरते हैं, उसी पर व्यंग किया गया है ।

६२६ माल नो मोल है, जात नो मोल नी है।

माल का मोल होता है, जाति का नहिं।

किसी भी जाति के श्रेष्ठ व्यक्ति को मान्यता मिल सिकती है, प्रश्न श्रेष्ठता का है, जाति का नहीं।

६२७ माल भावे ने मालवो चींते आवे।

माल अच्छा लगता है इसलिये मालवे की (वहाँ जा रहने की) याद आती है।

मालवे के उपजाऊपन के लिये एवं लोगों के बार२ वहाँ अस्थाई रूप से जा बसने को लेकर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

६२८ माल हूं मोल भारी है।

माल से उसका मूल्य अधिक है।

ऐसी अवस्था में माल खरीदना ठीक नहीं।

६२९ मीठी मीठी वात करी ने आपणों काम काढ़े।

मीठी मीठी बातें करके अपना काम निकालते हैं।

स्वार्थी लोग जो मृदु-वाणी से अपना काम निकलवा लेते हैं, उनके लिये इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

६३० माटू तीयू हदा कड़वू।

मिष्ट-भाषी सदा कड़वा होता है।

दिखावटी मीठेपन के ताने बाने में कडु.आहट रहती है।

६३१ मीयांज़ी वा़ला मनसोमा है, भरवी ने खाली करवी ।

मीयांजी वाला विचार है, भरना और खाली करना ।

मीयांजी बड़े २ विचार करने पर भी प्रति दिन लाते हैं और प्रति दिन खाते हैं । इसी प्रकार के अस्थाई विचारों को लेकर यह कहावत कही जाती है ।

६३२ मीयांजी वा़ल़ी मोर पोखावणी बात है ।

मींयाजी के समान मोर को डराने जैसी बात है ।

किसी व्यक्ति को डराने का असफल प्रयत्न करने के लिये यह कहावत कही जाती है ।

६३३ मीरां ममता नी छोड़ग्यी, मेवाड़ मीरां राख-त्यु वणां नू नाम ।

मीरां ने अपनी लगन को नहीं छोड़ा और मेवाड़ में मीरां ने अपना नाम अमर किया ।

लाखों प्रयत्नोपरान्त भी जब कोई अच्छे कार्य को करना नहीं छोड़े, वही ससार में अमरता प्राप्त करता है ।

६३४ मुंडा मांयल़ी मारी ने हाथां मायल़ी थारी ।

मुँह में की मेरी और हाथों में की तेरी ।

मुँह में जो रोटी का कोर है उसे तो दे सकना सम्भव नहीं, परन्तु मेरे हाथ में जो रोटी है उस पर तुम्हारा अधिकार समझो।

(भील लोग बहुधा रोटी हाथ में लेकर ही खाते हैं)

६३५ मुवाए हूं मारवू।

मरे हुए को क्या मारना।

जो व्यक्ति पहले ही अत्यधिक दुःखी है उसे और अधिक दुःखी बनाना ठीक नहीं।

६३६ मूंडका देतू आवे, अणये कूण हादे।

बिना बुलाये जो आता है उसकी सेवा-सुश्रुषा कौन करे।

बिना निमन्त्रण के जबरदस्ती आने वाले की हाल-हमाल नहीं की जाती।

६३७ मूंडांमातेके जन्डो नाम आदमी।

तत्काल मुँह पर साफ बात करने वाला ही पुरुषार्थी-व्यक्ति माना जाता है।

पीठ पीछे बात करना कोई पुरुषार्थता का लक्षण नहीं।

६३८ मूंडे ते आंहां वाला, पूठे भांहवा वाला घणा है।

मुँह पर हँसने वाले एवं पीठ पीछे भोंकने वालों की कमी नहीं।

मुँह पर तो मीठी २ बातें करते हैं और पीठ पीछे बुराई करते हैं, ऐसे लोग संसार में अधिक हैं।

६३९ मेनत सार है पेट हारू करवी पड़े ।

उदर-पूर्ति के लिये परिश्रम करना अनिवार्य समझा जाता है ।

६४० मेवाड़ नी वारा गाड़ा पोल ।

मेवाड़ में बारे गाड़ों की पोल है ।

मेवाड़ का शासन अत्यधिक त्रुटिपूर्ण है, इसको प्रकट करने के लिये इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

६४१ मेवाड़ा ने हारां सेरवाड़ा देखें ।

मेवाड़ी लोगों को सभी शहर वाले देखते हैं ।

मेवाड़ के लोगों में कोई ऐसी विलक्षणता होती है कि अन्य सभी शहर वालों की दृष्टि उनकी ओर चली आती है ।

६४२ मोचड़ी में मोर, ना आवे चोर, ना आवे वारे ।

जूते में मोहरें छिपा कर रखने से न तो चोर ही आकर लूटेगा और न उधार माँगने वाला दूल्हा ही ।

६४३ मोज मांय मौत है ।

आनन्द में मौत मानी जाती है ।

क्योंकि कभी २ बड़े आनन्द में बड़े २ विघ्न भी उपस्थित हो जाया करते हैं ।

६४४ मोटक्यार नां मेड़का है वलो न वाट कूंण आले ।

जवानी का गर्व है तो फिर दूसरों को रास्ता कौन दे । युवकों को अन्य लोगों की साधन-सुविधाओं का ध्यान भी रखना चाहिये ।

६४५ मोटा चोटा भेला रेवा हूं फायदो है ।

बड़े और छोटे-सभी को-साथ में मिल कर रहने में लाभ है । मिलन सारिता शक्ति की द्योतक है ।

६४६ मोठा घराणां ना ठीकरा हाऊ खरेहां वे ।

बड़े घराने के निकृष्ट बर्तन अच्छे कैसे हो सकते हैं ।

उच्च वंश में उत्पन्न होकर व्यक्ति जब निम्न कार्य करता है तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

६४७ मोटा घरे ना चादा मांये चेकलू देखाये ।

बड़े घर की दीवालों में छेद होता है ।

उच्च घराने में प्रायः कमजोरियां पाई जाती हैं, उन्हीं को लेकर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

६४८ मोटो रूजोले पेट, भाव थाई ग्यो चोटो वणने पड़ग्यो टोटो ।

भाव उतरने से घाटा हुआ तो महाजन भी पूर्व कही हुई बात से मनाकर देता है ।

व्यापारी नीचा देखने के लिये तैयार हो जाते हैं किन्तु हानि नहीं उठाते।

६४९ मोटा जतरा बाप, चोटा जतरा भाई।

बड़े पिता और छोटे भाई।

स्त्री को अपने से बड़ों के साथ पिता तुल्य और छोटों के साथ अनुज-सा व्यवहार करना चाहिये।

६५० मोत ऊं मरे जणाये जेर देई ने नी मारवू।

मोत से ही जो मर रहा हो, उसको जहर देकर मारना ठीक नहीं।

अपने आप सीधी तरह कोई मान जाये तो उसके साथ कड़ा व्यवहार करना ठीक नहीं।

६५१ मोर ने तो बोलवू ने अन्दर ने बरवू।

मोर का बोलना और इन्द्र का बरसना।

प्रायः किसी अच्छा कार्य करने वाले व्यक्ति के लिये इस कहावत का प्रयोग किया जाता है कि काम करना न करना उसी के हाथ में है।

६५२ मोरला दलवा जे ते खूटा नी है।

पहले का पीसना ही अभी तक समाप्त नहीं हुआ है।

तात्पर्य यह कि पहले की कठिनाइयां भी समाप्त न होने पावें

और अन्य संघर्ष आ खड़े हों ऐसी स्थिति में यह कहावत चरितार्थ होती है।

६५३ मोरलो जमावी ने फायलो मेलवो।

पहले का कदम जमा कर अगला कदम उठाना चाहिये।

बड़ी दूरदर्शिता से पिछला काम छोड़ना चाहिये।

६५४ मोरा महला वाली हार जीत नी करवी।

मोर और इन्द्र वाली हार-जीत नहीं करनी चाहिये।

एक बार मयूर और इन्द्र में झगड़ा होने पर इन्द्र के बारह वर्ष तक वर्षा नहीं करने से संसार में त्राहि-त्राहि मच गई। तात्पर्य यह कि इस प्रकार अपने अहम में आकर व्यर्थ में स्वयं परेशान होना तथा औरों को भी कष्ट पहुँचाना कोई ठीक बात नहीं।

६५५ मोरे आगला भव ना लेख भगतवा पड़े।

मेरे पूर्व जन्म के संस्कारों के फल भुगतने ही पड़ेंगे।

भारतीय-दर्शन के अनुसार पूर्व-जन्म के कर्मों के परिणाम पर ही वर्तमान-जीवन के सुख-दुख निर्भर करते हैं।

६५६ मोलू, दूध दाँत पाड़ूं।

सीधा-सादा दीखने वाला सीधा माँ का पुत्र बड़ा भयावह समझा जाता है। ऊपर से भोला-भाला पर भीतर से काला।

६५७ ये तो गूंटका मांये मूंगो है।

यह तो घूंघट में ही अच्छी दीखती है।

जो स्त्री ऊपर से बनाव-शृंगार द्वारा ही अपनी कुरूपता या वयस्कता को छिपाने का प्रयत्न करती है, उसके लिये यह कहावत काम में लाई जाती है।

६५८ ये तो बेहता कागला उड़ावे।

यह तो बैठे हुए कौए को उड़ा देता है।

किसी की उच्छृंखलता को लक्ष कर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है जो अपनी उच्छृंखलता वश बिना किसी कारण के चुपचाप बैठे कौओं तक को उड़ा देता है।

६५९ ये तो वगर पेंदा नी घड़ग है।

यह तो बिना पेंदे की 'घेड़' है।

जिस व्यक्ति के स्वयं के कोई सिद्धान्त न हों, और अपने स्वार्थ के लिये दूसरों के इशारों पर इधर-उधर ढुल-मुल होता रहे, उसके लिये प्रायः इस कहावत को काम में लाया जाता है।

६६० यह तो उपाध्यो उपाधा करे, बीजू को ने करे।

यह उपाध्याय (ब्राह्मण) तो झगड़ा करवाता है, और कोई काम नहीं करता।

इधर-उधर की लाग-लपेट पूर्ण बातें कर एक-दूसरे में झगड़ा उत्पन्न करवाने पर इस कहावत को काम में लाया जाता है।

६६१ रत आय्यां फल पाके ।

ऋतु आने पर ही फल पकते हैं ।

जो काम जिस समय पर होने का होता है उससे पहले नहीं हो सकता ।

६६२ रली ने हाथे आय्यो है थोड़ा गणा दाड़ा वी रले हैं ।

बड़ी कठिनाई से हाथ आया है-थोड़े-बहुत दिन वे ही रख कर प्रसन्न होवें ।

अकर्मण्य के परिश्रम से कुछ कार्य हथियाने पर कुछ दिनों उसे ही करने देने के लिये यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

६६३ रांगड़ रात पड़य्ये रण में आद आवे ।

शूरवीर रात पड़ने पर या रण में याद आते हैं ।

बिशेष प्रकार के व्यक्ति विशेष अवसर पर ही याद आते हैं ।

६६४ रांडिया केरां रण चड़े, रांगड़ा ना केरां वे रायता ।

साहसहीन व्यक्ति किस प्रकार युद्ध में जा सकते हैं और वीरों की दुर्दशा युद्ध में कैसे संभव है ।

साहसहीन व्यक्ति की अनुपस्थिति में शूरवीरों की दुर्दशा नहीं होती । अथवा शूरवीर युद्ध में लड़ कर भी बेदाग (बचे) रहते हैं ।

६६५ रांदी ने रमणे नी जावो।

भोजन बना कर खेलने के लिये नहीं जाना चाहिये।

किसी काम के तैयार हो जाने पर उसका पूर्ण उपयोग करने तक उसे यों ही नहीं छोड़ देना चाहिये।

६६६ रागे गावो ने रागे रोवो तं हाऊ लागं।

राग से गाना और राग से रोना अच्छा लगता है।

समय २ पर ढंग से किया जाने वाला प्रत्येक कार्य अच्छा लगता है।

६६७ राजू ना तो मलवा दुखल्या ना बलवा।

प्रसन्न व्यक्ति परस्पर मिल कर सुख मनाते हैं तो दुःखी अपने दुःख की चर्चा कर जलते रहते हैं।

६६८ राझू जतरे रईस रीश्यां पूठे रागस।

प्रसन्न है तब तक रईस और क्रोधित होने के बाद राक्षस।

मानववृत्तियां प्रसन्नता के समय मनुष्य को दातार बना देती हैं किन्तु क्रोध में वही मनुष्य राक्षस बन कर पशुवत् आचरण करने लगता है।

६६९ राती नो दणू दाड़े नी खूटे।

रात्रि का पीसने के लिये रक्खा गया अनाज दिन भर में भी समाप्त नहीं होता।

निश्चित कार्य निश्चित समय पर न होने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

६७० राती पागड़्या वाला फरवे दियो।

लाल पगड़ी वालों-महाजनों को-आने दो फिर देखो क्या हाल होता है ?

कर्ज़-वसूली करने वालों को डर बताने के लिये इसका प्रयोग किया जाता है।

६७१ राते कूण जागे, के ते जोगी ने कै भोगी।

रात्रि को कौन जगता है या तो योगी या भोगी।

कोई व्यक्ति किसी विशेष कार्य को विशेष समय में करे और पूछने पर मना करे तो इस कहावत का उपयोग होता है।

६७२ राते कूंण कूण जागे, कै ते चोर, के मोर के ढोर

रात्रि को कौन २ जगते है—चोर, मोर अथवा ढोर या पशु।

६७३ राम ना घरे ना उलटा न्याव।

ईश्वर के घर का भी यानि ईश्वर द्वारा भी प्रतिकूल न्याय हो जाता है।

सत् पर असत् की विजय होने पर यह कहावत चरितार्थ होती है।

६७४ राम नी कला भारी है ।

ईश्वर की माया अपरंपार है ।

ईश्वर-लीला को कोई नहीं पहुँच सकता ।

६७५ राम नी कुदरत न्यारी वणाऊं कोई नी पूगे ।

ईश्वर की प्रकृति (कुदरत) निराली है, जिसका पार कोई नहीं पा सकता ।

सर्वेश्वर की अज्ञात सत्ता को लेकर इस कहावत को कहा जाता है ।

६७६ राम भरोसे खेती है, हदारवू वगाड़वू वणाए हाथ है

संसार-चक्र (खेती) ईश्वर भरोसे चलता है । अच्छा या बुरा जो भी होता है, उसका कारण रूप वही है ।

भाग्यवाद को लेकर यह कहावत कही जाती है ।

६७७ राम मोरे लेका हे, मूंडू मीठू पले करो ।

ईश्वर के आगे सभी बातों का हिसाब देना ही होगा, अभी भले अच्छे-बुरे कामों को करके अपने को सन्तुष्ट कर लो ।

बुरे काम वाले सांसारिक दृष्टि से भले अपने को सुखी अनुभव करें किन्तु मृत्युपरान्त ईश्वर द्वारा अवश्य दण्डित किये जायँगे ।

६७८ राम लचमण बेड़े मांये रेय्या ने नाम [illegible] ।

राम लक्ष्मण वन में रेह और उनका नाम (संसार में) रहा ।

परहित के लिये कठिनाइयाँ सहन करनेपर इन्सान अमर हो जाता है।

६७९ री रत्ना नो राग दनिया हूं न्यारो।

क्रोधी और धनवान की स्थिति संसार में जनसाधारण से भिन्न देखी जाती है।

क्रोध की मदान्धता एवं धन का नशा लोगों के आचरण एवं व्यावहार में जनसाधारण से भिन्न परिवर्तन उपस्थित कर देता है।

६८० रीस मारचो रतन पैदा थावे।

क्रोध को शान्त कर लेने पर रत्न (विनम्रता आदि) उत्पन्न होते हैं अर्थात् क्रोध से रहित मनुष्य सात्विक-गुण-रूपी रत्नों से विभूषित होता है।

६८१ रूखड़ा माथे घणा फलफूल रूपाला, आपणा नी है।

वृक्ष पर बहुत से सुन्दर फल-फूल हैं, पर वे अपने नहीं।

समस्त संसार भाँति २ के रूप, रस और माधुर्य से परिपूर्ण है, परन्तु उस पर प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार नहीं।

६८२ रूड़ी रूपाली कर्मे कजोड़ी।

शील और सौन्दर्य से युक्त होने पर भी भाग्य प्रतिकूल है।

किसी सुन्दर एवं गुणों से युक्त स्त्री को कष्ट में देखा जाय तो इस कहावत का प्रयोग होता है ।

६८३ रूप्या ने मोंढ़े मूच् है वातन मोंड़े नी है ।

रुपय्यों के मुंह पर मूँछ+होती है, बातों के मुख पर नहीं अर्थात् संसार में धनी-मानी लोगों का ही अधिक महत्त्व है, साधारण व्यक्ति का नहीं, जो बात-रूपीधन का स्वामी है ।

६८४ रूपाए कतीर कैय्ये क़तीर नी थाये ।

चाँदी को रांगा कह देने से वह रांगा हो नहीं जाता ।

अच्छे आदमी को बुरा कह देने से वह बुरा नहीं हो जाता । कह देने मात्र से खरी चीज़ खोटी नहीं हो जाती ।

६८५ रूपो भाई काली राते उठाड़े ।

रुपये-पैसे के लिये मनुष्य को अंधेरी रात्रि में भी जग कर काम करना पड़ता है या उसकी निगरानी करनी पड़ती है ।

धन एकत्रित करना एवं उसकी रक्षा करना-दोनों के लिये कठिनाइयाँ उठानो पड़ती हैं ।

६८६ रूपाली देखी ने रीझवो नी ।

सौन्दर्य शालिनी को देख लेने मात्र से उस पर मुग्ध हो जाना उचित नहीं ।

+मूँछ का होना बड़प्पन, वीरता आदि का प्रतीक है ।

ऊपर से रूपवती होने पर भी संभव है अन्तर में कुटिलता भरी हो।

६८७ रेग्या काम रावण ना रेग्या।

बचे हुए काम रावण के* भी रह गये।

किसी भी कार्य को प्रारंभ कर अधूरा छोड़ देने पर फिर पूरा किया जा सकना सम्भव नहीं होता। रावण जैसा महान् शक्तिशाली राजा भी अधूरे कार्य को पूरा न कर सका। इसलिये जिस काम में हाथ डाला जाय उसे पूरा करके ही छोड़ना चाहिये।

६८८ रेंटवाली घड़ग है, भरी आवे ने रीती आवे।

रहँट की घेड़ों के समान है जो भरी भी आती है और खाली भी।

किसी भी कार्य में हाथ डाला जाय उसमें हानि और लाभ दोनों की संभावना रहती है।

६८९ रोई रोई ने जमारो पूरो कीदो थारे घर में कई सुख नी दीठो।

रोते-धोते उम्र बिता दी, तुम्हारे घर में कोई सुख नहीं देखा।

---

* रावण ने पृथ्वी से आकाश तक सीढ़ी बनाने का काम आरंभ किया था, किन्तु उसकी मृत्यु हो जाने से ज्यों का त्यों बना रहा।

दु:खी पत्नी उक्त कहावत में अपना दु:ख पति से प्रकट कर रही है।

६६० रोक चार परचूणी पांच खोटा।

रोकड़ चार आगे-पीछे मिलने वाले पाँच से अच्छे।

बाद में अधिक मिलने की आशा में अभी का कम मिलना अच्छा होता है।

६६१ रोड़ी मांये रतन है तो रतन रोड़ी समान है।

कूड़े में के रत्न कूड़े के समान ही होते हैं (लगते हैं)।

व्यक्ति चाहे कितना ही अच्छा क्यों न हो, संगति से ही जाना जाता है।

६६२ लगाईय्ये हूजे मायनू, आदमीए हूजे बार नूं।

स्त्री को गृह-कार्य की और पुरुष को बाहर के कार्य की सूझती है, तभी गृहस्थी का कार्य चलता है।

६६३ लगाई ना चालां ने लागवूं, हेंडती हेंडती गेर काड़े।

स्त्री के भुलावे में नहीं आना चाहिये, वह रास्ते चलती चलती घर बरबाद करवा देती है।

स्त्री का आकर्षण बड़ा तीव्र होता है और वह अत्यधिक चालाक होती है, इसलिये कोई भी काम बड़ी सोच-समझ से करना चाहिये।

६६४ लगाई ना लक्खण लाज लूगड़ा में परकाये ।

स्त्री के लक्षण लज्जा एवं वस्त्रों से मालूम किये जाते हैं ।

सँवरे हुए वस्त्रों एवं लज्जा रूपी भूषण से ही स्त्रीयोचित गुणों का आभास होता है ।

६६५ लगाई ने फाँयल़ मत ।

स्त्री की बुद्धि 'पच्छमबुद्धि', काम बिगड़ने के बाद उपजने वाली समझी जाती है ।

अत्यधिक व्यग्रता के कारण कोई निर्णय स्त्री पहले नहीं बना सकती । काम बिगड़ने पर वस्तु-स्थिति का आभास होता है ।

६६६ लच्मी केई ने नी आये ने केई ने नी जाये ।

लक्ष्मी (धन) कहकर नहीं आती और न कहकर जाती ही है ।

धन की अचानक प्राप्ति और उसी प्रकार लुप्त हो जाने को लेकर यह कहावत कही जाती है ।

६६७ लच्मी पाँच दाड़ा नी पामणी ।

लक्ष्मी पाँच दिनों की महमान है ।

धन किसी के पास स्थाई रूप से नहीं रहता ।

६६८ लांबो हेलो ने चोटी मनुवेर ।

लम्बी आवाज देकर छोटी और थोड़ी मनुहार करना उचित नहीं अर्थात् थोड़े खर्च के लिये अधिक खर्च जैसा प्रदर्शन करना अच्छा नहीं ।

६९९ लाइ मांये लाय ने लगाड़वी ।

आग में आग नहीं लगानी चाहिये ।

झगड़े में झगड़ा नहीं बढ़ाना चाहिये ।

७०० लागवो तो लोहार नूं, वाजवो हांनार नूं ।

लगना तो लोहार का और बजना स्वर्णकार का ।

लोहार अपने बड़े हथोड़े को लोह पर शक्ति के साथ पटकता है परन्तु सुनार चाँदी-सोने पर हथोड़ी को बड़ी देर तक पटकता रहता है, जिसकी ध्वनि बड़ी अच्छी होती है । तात्पर्य यह कि बड़े व्यक्ति का थोड़ा कहना भी बहुत महत्वपूर्ण होता है ।

७०१ लागी तो हीक नी तें मांगो भीख ।

लग जाय तो शिक्षा नहीं तो भीख माँगनी पड़ती है ।

किसी के द्वारा दी गई अच्छी शिक्षा नहीं मानने पर परिणाम बुरा होता है ।

७०२ लाजे लबरू ओढ़वू हे ।

लज्जा रखने के लिये फटा-पुराना वस्त्र ओढ़ना पड़ता है ।

बुरे दिनों में अपनी-मान-मर्यादा की रक्षा जब नहीं चाहते हुए भी अपर्याप्त साधनों से की जाय तो इस कहावत का प्रयोग होता है ।

७०३ लाटी ने नी धाय्यो एवा चाटी ने धाहे ।

लाटी के-अन्न के-भरपूर होने पर भी जो तृप्त नहीं हुआ तो अब चाट कर क्या तृप्त हो सकेगा ।

तात्पर्य यह कि समृद्धावस्था में जिसे सन्तोष न हो सका अब इधर-उधर से माँग कर जीवन-यापन करने पर उसे किस प्रकार तृप्ति हो सकेगी ।

७०४ लाड़ी ना खाएड़ा लाड़ा ने माता में ।

विवाह के पूर्व अन्य वस्त्राभूषणों के साथ दुल्हिन के लिये जूते भी वर-पक्ष वाले उठा कर लाते हैं ।

तभी से स्त्री का भार एवं तज्जनित चिन्तायें पुरुष के सर पर छाई रहती हैं ।

७०५ लाड़ी मरो के लाड़ो, तोरण नो टको त्यांर ।

दुल्हिन का देह वसान हो जाये या दूल्हे का, तोरण का (उसको बनाने के पारिश्रमिक का) पैसा तो ज्यों का त्यों देना बना रहता है ।

चाहे हानि हो या लाभ, परिश्रम करने वाला तो अपना पैसा लेगा ही ।

७०६ लाड़ी हूनी जाये ने रांडी नो वलावो ।

दुल्हिन (जो धन और यौवन से परिपूर्ण होती है) वह तो

सूनी-बिना रक्षक के-जाती है और विधवा-स्त्री को मार्ग-रक्षक दिये जाते हैं।

आवश्यकता पड़ने पर तो किसी प्रकार की सहायता नहीं मिल पाती और समय निकल जाने के बाद जब ऐसा किया जाता है तो यह कहावत चरितार्थ होती है। इसमें समाज के प्रति बड़ा मार्मिक व्यंग भरा हुआ है-जीवित रहते कोई किसी को नहीं पूछता, परन्तु मृत्युपरान्त 'मृत्यु-भोज' और 'गुण-गान' किया जाता है।

७०७ लिम्बड़ानो कीड़ो लिम्बड़ा माय राजू।

नीम का कीट नीम में ही प्रसन्न रहता है।

जो जिस वातावरण में रम जाता है, कष्ट होते हुए भी उसका त्याग नहीं करना चाहता।

७०८ लुगाई नू जमारू है जोई व्चारी ने फरवू पड़े।

स्त्री-जन्म प्राप्त हुआ है, बहुत सोच-समझकर चलना पड़ता है।

पुरुष, समाज में कुछ भी करने को स्वतन्त्रत है, पर स्त्री नहीं-इस लिये नारी को बहुत सोच -विचार कर कोई भी काम करना चाहिये।

७०९ लूचा हूं लाख पांवड़ा, हाथी हूं हजार पांवड़ा।

बदमाश व्यक्ति से लाख और हाथी से हजार कदम दूर रहना चाहिये।

बदमाश व्यक्ति और हाथी के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता कि कब और किस प्रकार बिगड़ पड़े। इसलिये इनसे विशेष सावधानी बरतनी चाहिये। फिर भी हाथी से बदमाश अधिक खतरनाक होता है।

७१० लेवू एक ने देवू बे ।

लेना एक और देने दो।

(अ) किसी से कुछ माँगकर या उधार लेने में सदा यही स्थिति होती है। (ब) कभी २ एक नये काम को करने पर पहले का काम भी बिगड़ता है—इन दोनों स्थितियों में सावधान रहना चाहिये।

७११ लेवू देवू हाऊकारां नो काम है।

लेन-देन साहूकारों का कार्य है।

साहुकार ही समय पर लेन-देन कर सकते हैं, प्रत्येक व्यक्ति नहीं।

७१२ लींपयू लोप्यू झूपड़ो रूपालो लागे ।

लींपा-पोता हुआ झोंपड़ा अच्छा लगता है।

७१३ लोक लगाई नो एक मतो, पले करो बो मता ।

पति-पत्नी की एक राय हो तो अन्य लोगों का बहुमत भले हो—उससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं।

दो व्यक्ति के परस्पर एकमत होने पर अन्य लोगों का बहुमत प्रभावशाली नहीं रहता।

७१४ वऊ जाणे वीशल्यू, हाऊ जांणे धोय्यू।

सास बहु के भरोसे समझती है कि उसने (कपड़ा, बर्तन इत्यादि) धो दिया है, किन्तु पूरी तरह नहीं धोने की वास्तविकता का पता बहु को रहता है।

७१५ वऊ बाहदो कीदे हीरा वण हे।

बहु के पशुशाला से गोबर आदि की सफाई कर लेने के बाद कलेवा किया जायगा।

तात्पर्य यह कि प्रातः कलेवा करने के पूर्व आवश्यक कार्यों से निवृत्त हो जाना चाहिये।

७१६ वखेरो करे वाणियानी नो ने मरे रचपुताणी नो।

झगड़ा-टण्टा तो करता है बनियानी का (पुत्र) और कष्ट उठाता है रजपुतानी का (पुत्र)।

यानि महाजन लोग लेन-देन में परस्पर झगड़ा करते हैं और इसको निपटाने में कष्ट उठाना पड़ता है शासक वर्ग को।

७१७ वगड़य्यो दूध वाड़े वरोवणाँ।

बिगड़े हुए दूध को बाड़े में आदर सहित पधरा देना चाहिये।

उत्कृष्ट वस्तु में बुराई पैदा होने पर आदर सहित उसे दूर कर देना ही बुद्धिमानी है, उसको चिपटाये रहना नहीं चाहिये।

७१८ वगड़े जाये ते बूकरो लेई ने आवे।

जंगल में जावे तो थोड़ी बहुत बेचने योग्य सामग्री लावे-जिससे निर्वाह हो सके।

बेकार व्यक्ति के लिये यह कहावत कही जाती है।

७१९ वगत को वगत वलती आवे-रांम पाणी पाये जेम पीवो पड़े।

समय कुसमय बारी २ से आते रहते हैं-ऐसी स्थिति में जिस प्रकार ईश्वर सभी को जीवित रखता है, उसी तरह रहना पड़ता है।

७२० वगत पड़े आम्बो आमली भालवे पड़े।

समय पर आम को इमली भी बताना पड़ता है।

कभी २ काम बनाने के लिये झूठ भी बोलना पड़ता है।

७२१ वगर दुकड़ग्यो तमासो है।

बिना पैसे का तमाशा (खेल) है।

जिस कार्य में कोई पैसा-टका खर्च न हो, आनन्द प्राप्त हो जके, तब यह कहावत चरितार्थ होती है।

७२२ वणनी जे वगत।

समय पर जो हो जाय सो ठीक है।

परिस्थितियों पर मानव के अधिकांश कार्य-कलाप निर्भर करते हैं–इसलिये जैसी परिस्थिति हो उसके अनुकूल कार्य हो जाय वह ठीक होता है।

७२३ वणां ने मोत ही वाड़ो दड़ो ते हाच् नी बोले।

उनका सर ही काट कर क्यों न फेंक दिया जाय तो भी सत्य नहीं बोलते।

निपट झूठ बोलने वाले व्यक्तियों के लिये इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

७२४ वणा मोरे पेंड़ा धूजे।

उसके सामने लोगों के पैर कांपते हैं।

किसी आतंककारी व्यक्ति को लेकर यह कहावत कही जाती है।

७२५ वणे वगत जणी दन हारा अवला फरे।

जिस दिन काम बनने को होता है सभी लोग विपरीत हो जाते हैं।

तात्पर्य यह कि बने बनाये काम को बिगाड़ने वाले लोग संसार में अधिक होते हैं।

७२६ वत्तू मलवा वालू पेट पाल हें-परवार नी पाले।

अधिक प्राप्त करने वाला अपना ही पेट पालता है, परिवार का पालन नहीं करेगा।

अधिक प्राप्त किये हुए में प्राप्त करने वाले का ही अधिकार समझा जाता है।

७२७ वचार करवा हूँ कई थावा नो नी, करवा हूं थावा नो।

सोचने मात्र से कोई काम नहीं होता, वह तो करने से होता है।

७२८ वचार कीदे हूं वे फायले मोरे मरवू है।

आगे-पीछे मरना तो है ही-फिर चिन्ता करना व्यर्थ है।

७२९ वला ना पामणा कोवला ना वेरी।

समय के महमान और अ-समय का वेरी।

महमान किसी के यहाँ अ-समय पहुंचता है तो बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है।

७३० वलावे न वाचरू वाड़े वाट जोवे।

गाय-भैंस को चरने के लिये भेजते ही बछड़ा अपने स्थान पर उसके पुनः लौट आने की प्रतीक्षा करता है।

माँ का प्रेम सबसे बढ़ कर माना गया है।

७३१ वली न वार आवे ते चावे हूं।

गया समय पुनः आ जावे तो फिर कुछ नहीं चाहिये किन्तु गया समय पुनः आता नहीं।

७३२ वाटे ही वाली न वेट नी करनी ।

इधर-उधर की बैगार को अपने प्रयत्न से हथिया कर नहीं करना चाहिये ।

टलती हुई आफत को नहीं लेना चाहिये ।

७३३ वाड़ग्यो गलो ने फीटो हा ।

गला काटा और प्राणान्त हुआ ।

गर्दन काटने पर व्यक्ति अवश्यमेव मर जाता है ।

७३४ वाड़ाग्यी मून्डी बाकला बूके-जणां हूं करां ।

काटा हुआ मुँह भी उबाला हुआ अनाज खावे तो क्या किया जा सकता है ।

किसी को अनर्थ करने के लिये असमर्थ कर देने पर भी वह अनर्थ करे तो कोई उपाय नहीं किया जा सकता ।

७३५ वाड़ ही जेराँ वेलो चढ़ग्यो ।

बाड़ थी जिससे बेला चढ़ गया ।

निर्बल व्यक्ति बलवान की सहायता बिना पनप नहीं सकता ।

७३६ वाण्यो बामण थाइने वेहवानू हूं काम चालवानो ।

बनिया ब्राह्मण बन कर बैठ जाय तो क्या काम चल सकता है ।

७३७ वाणन्या वाळी मत राखी ने कमावो ।

वणिक-बुद्धि रख कर कमाई करना चाहिये ।

सभी बातों को सहन करता हुआ बनिया कमाई कर अपना स्वार्थ पूरा करता है और किसी बात की चिन्ता नहीं करता ।

७३८ वाणी रुपाळी है, मनख रुपाळो नी है ।

बोली सुन्दर है, मनुष्य सुन्दर नहीं ।

सौन्दर्य का माधुर्य जितना आकर्षक नहीं जितना वाणी का आकर्षण होता है ।

७३९ वात वात में वगरो लागे ।

बात बात में झगड़ा हो जाता है ।

इसलिये बहुत सोच-समझ कर बात-चीत करना चाहिये ।

७४० वातां बलदस्या गोटा चणाय्या ।

बलवदरत्या के पंच बातें बनाने में रहे और चणाय्या के पंच भोजन कर गये ।

कुछ लोगों के झगड़े में जब दूसरों का काम बन जाता है तब यह कहावत कही जाती है ।

७४१ वाते वाळी वात रेई जावे ते ठीक ।

सफलता मिलने से बात रह जाय तो अच्छा ।

७४२ बाय भरय्यो खेत नी रे, हलदी भरय्यो धोर नी रे ।

बीज बोने के लिये तैयार किया गया खेत नहीं रहता अर्थात् उसमें बीज बो दिया जाता है। इसी प्रकार विवाह के पूर्व जिस दुल्हे के हल्दी लगा दी गई है वह कुँआरा नहीं रह सकता।

७४३ वापरय्यो वदे, हगरय्यो हलै ।

काम में लाने पर वस्तु बढ़ती है, किन्तु जोड़ २ कर रक्खी गई बिगड़ती है।

७४४ वीते देस नो मूंडय्यो है, कणांए नी आई करे ।

वह तो देश भर का मूंडा हुआ है, वह किसी से हार नहीं मानता।

७४५ वेरी गारे नो खोटो ।

शत्रु मिट्टी का भी बुरा होता है।
किसी भी अवस्था में शत्रु हानि पहुंचा सकता है।

७४६ वैरी वगत माते वगरो करे ।

शत्रु समय देख कर झगड़ा करता है।
अर्थात् बनते हुए काम को बिगाड़ देता है।

७४७ वेलो वाड़ खाये पच्चे उपा हूं लांगे ।

बाड़ ही यदि बेल का विनाश करने लगे तो उसकी रक्षा का अन्य उपाय ही क्या है।

तात्पर्य यह कि जिसका जो रक्षक है वही भक्षक बन जाये तो उसकी रक्षा अन्य कौन करेगा।

७४८ शक्ति ने भक्ति जोर नी है।

बल और भक्ति का परस्पर जोड़ा नहीं।

ईश्वर-भक्ति के लिये शक्ति का होना आवश्यक नहीं, उसी प्रकार शक्तिशाली बनने के लिये ईश्वर-भक्ति का होना अनिवार्य नहीं।

७४९ शेष करणालो हाकी है, बीजू कूंण जांणे।

सहस्त्र-किरणों वाला (सूर्य) साक्षी है, दूसरा कौन जानता है।

किसी सच्चे को जब झूठा बनाया जाता है तो वह यही कह-कर सन्तोष करता है।

७५० साधू नो फटकारो खोटो।

साधू की ताड़ना बुरी होती है।

इसीलिये साधू का बिगाड़ करना उचित नहीं। क्योंकि शाप आदि से वह अनिष्ट भी कर सकता है।

७५१ सुख दुख नी जोड़ी है।

सुख-दुख की जोड़ी समझी जाती है।

संसार में इसलिये दुःख से नहीं डर कर दोनों को समान रूप से ग्रहण करना चाहिये।

७५२ सुखनो तो एक भलो, दुःख ना बे खोटा ।

सुख में प्राप्त हुई एक वस्तु अच्छी, दुःख में उससे द्विगुणित भी बुरी ।

सुख में प्राप्त कम वस्तु भी लाभकारी होती है किन्तु दुःख की अवस्था में विशेष मात्रा भी उस वस्तु की मिल जाय तो लाभ न होगा ।

७५३ सेंग दाड़ो तपत्या तापत्यो हूं ।

दिन भर तपस्या तापी है ।

किसी काम को दिन भर कठिन परिश्रम के साथ किया जाने पर भी उसका मूल्यांकन नहीं किया जाय तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

७५४ सेबासी देई सके भण करी नी सके ।

शाबाशी दे सकता है—पीठ ठोक सकता है, किन्तु (उस काम को) कर नहीं सकता ।

कई व्यक्ति इस प्रकार के होते हैं कि किसी अच्छे काम को करने पर शाबाशी-बढ़ावा दे सकते हैं, किन्तु उस काम को वे स्वयं नहीं कर सकते, तब यह कहावत चरितार्थ होती है ।

७५५ सेर नी दवा ने जंगल नी हवा ।

शहर की दवा और जंगल की हवा दोनों समान समझी जाती है।

शहर में औषधि लेकर जिस स्वास्थ्य को ठीक रखा जाता है, वही जंगल की आब हवा (खुली हवा) से अच्छा रहता है—किसी औषधि के बिना ही।

७५६ हँस चुगे मोती वो ना चुगे चणा।

हँस तो मोती ही चुगता है—चने नहीं।

अच्छी वस्तु का उपयोग करने वाला व्यक्ति कभी साधारण वस्तु का उपयोग नहीं करेगा, चाहे वह मर क्यों न जाय। इसी लिये कहा भी गया है—"कै हँसा मोती चुगै कै लंघन कर जाय।"

७५७ हँस मोती चुगे कां गांठे गरथ।

हँस मोती चुगता है, उसकी गांठ में पैसा कहाँ ?

जो व्यक्ति श्रेष्ठ वस्तुओं का उपयोग करेगा स्वाभाविक रूप से अधिक पैसा खर्च होगा। ऐसी स्थिति में वह संग्रह कहाँ से कर सकता है।

७५८ हक़ नो मण खवाये, बेहक़ नो कण नी खवाये।

अपने हक़ का (अधिकार का) मन भर खाया जा सकता है परन्तु दूसरों का अनुचित ढंग से लिया गया कण भी नहीं खाया जा सकता अर्थात् खाने पर हजम नहीं किया जा सकता।

७५९ हगते होते नी बलवु।

बिना किसी की सम्मति के अपनी इच्छा से किसी के साथ नहीं जल मरना चाहिये।

इतनी भलमनसाहत भी किस काम की कि बिना किसी के बुलाये ही हम किसी के साथ २ जल मरें।

७६० हरका नां भाई हारा हरका।

हरके के सभी भाई हरके के समान होते हैं।

एक ही स्थान पर उत्पन्न एवं पले हुए सभी व्यक्ति समान होंगे।

७६१ हरणी नी गत हींयारू जाणे, बीजू कूंण जाणे।

हिरनी की चाल शृगाल ही जानता है, दूसरा कौन जाने।

सदा निकट और साथ में रहने वाला व्यक्ति ही किसी की गति-विधि को पहिचान सकता है।

७६२ हरी खेती गांभण भैंस नो हूं भरोसो।

हरी खेती पूर्ण रूप से पक जाने पर और ग्याभिन भैंस के निर्विघ्न रूप से बच्चा दे देने पर ही फल प्राप्त हुआ समझना चाहिये; क्योंकि इसके बीच में भी कई विघ्नों के आने की आशंका बनी रहती है।

७६३ हलका जे झलका।

हलके–तुच्छ–व्यक्ति कुछ भी अनुपयुक्त बात बोल उठते हैं।

छिछलापन गहराई लिये नहीं होता। गंभीरता के अभाव में न कहने योग्य बात को पचा जाना ऐसे व्यक्ति की सामर्थ्य के परे होता है।

७६४ हाऊ जोई ने माटी कीदो, कुबार होई ने नवड़ग यो।

अच्छा देख कर पति बनाया किन्तु कुम्भकार के समान निकला।

कुम्हार मिट्टी के बर्तन बना कर उल्टे रखने से मूर्ख समझा जाता है–इसी प्रकार उसकी सम्पत्ति भी मिट्टी और गधे को छोड़ कर और कुछ नहीं होती।

अतः अच्छा काम करते हुए भी जब निराशा जनक फल होता है तो इस कहावत को प्रयुक्त किया जाता है।

७६५ हाऊ हरखू देखाये तो हारां नी आंख फूटे।

अच्छे–समृद्धिशाली–दीखने पर सभी की आँखों में अखरता है।

ईर्षा वश ऐसा होता है, जो ठीक नहीं।

७६६ हाऊ देखाये ते आवज़्यो नी ते जाज्यो।

अच्छा समझो तो हमारे यहाँ आना नहीं तो आगे बढ़ जाना।

जिस व्यक्ति को कहीं पर जाना यदि अच्छा नहीं लगे तो उसकी रुचि के प्रतिकूल उसे बुलाना ठीक नहीं।

७६७ हाऊ भूण्डो हगरवो परे, हाउ कूण न भूण्डो कूण।

अच्छे और बुरे सभी प्रकार के लोगों से व्यवहार रखना पड़ता है। सबसे मिल कर रहने वाले व्यक्ति के लिये कौन अच्छा और कौन बुरा। मिलनसार व्यक्ति का सभी से मेल होता है।

७६८ हाऊकारा ए हारा पूचे, आदमी ए को नी पूचे।

साहुकार को सभी पूछते हैं, आदमी को कोई नहीं पूछता।

लेन-देन में ईमानदारी की पूछ सभी करते हैं, व्यक्ति विशेष की नहीं।

७६९ हाऊकारो हेंडता नो काम हारे।

साहूकारा-लेन-देन की नियमितता-शीघ्रता में भी किसी का काम नहीं रुकने देती।

लेने-देन में नियमितना बरतने वाले को रुपैया शीघ्र मिल जाया करता है।

७७० हाऊ भूंडा झाबे थोड़ू ऊबो रेवू हे।

अच्छे-बुरे की छाया में थोड़े खड़ा रहना है।

किसी से विशेष काम न पड़ने की स्थिति में उसके अच्छे-बुरे का ध्यान रखने की कोई खास आवश्यकता नहीं।

७७१ भूंडा कई धोई ने थोड़ू पीवे।

अच्छा-बुरा कोई धोकर थोड़े पीना है। तो फिर चिन्ता क्यों की जाय।

७७२ हाऊ भोंडा ना जाबे ने बेहवो है।

अच्छे-बुरे की छाया में थोड़े बैठना है।

अच्छे-बुरे सभी मनुष्यों को निभाने के लिये यह कहावत कही जाता है।

७७३ हाऊ लारे हाऊ खोटा लारे खोटो।

अच्छे के साथ अच्छा, बुरे के साथ बुरा।
जैसे के साथ वैसा व्यवहार किया जाता है।

७७४ हाऊ हारा चावे, बोदूं को नी चावे।

अच्छे को सभी चाहते हैं, बुरे को (कमजोर को) कोई नहीं चाहता।

७७५ हाकर खातां दाँत पड़े ते हूं करवू पड़े।

मिश्री खाते हुए दाँत गिरें तो क्या उपाय किया जा सकता है।
सुख-लाभ हेतु यदि मार्ग में कठिनाइयाँ भी उठानी पड़ती हैं तो यह कहावत चरितार्थ होती है।

७७६ हांगणी हगाई बमण वैर।

समीप की सगाई-अत्यधिक वैर या दुश्मनी।
कहीं पास ही में सगाई होकर जब विवाह हो जाता है तो आये दिन कोई न कोई झगड़ा होता रहता है।

७७७ हाच वे ते हो को माते हू आवे।

किसी में सत्य हो तो उसके लिये लोग सो कोस दूर से आते हैं।

यह कहावत किसी प्रसिद्धि-प्राप्त देवता या साधु सन्यासी के बारे में कही जाती है।

७७८ हाजा वाळो नागो देखाये, फाटा वाळा नी देखाये।

अच्छे वस्त्रों वाला बेपरवाही से रहता है किन्तु फटे वस्त्रों वाला अपनी लज्जा बचाने में तत्पर रहता है।

७७९ हाजी हेरा न लेखा पूरा।

सेठ सावधानी बरत कर सभी के लेखों को पूरा कर देता है।

तात्पर्य यह कि सेठ बड़ी सावधानी के साथ आसामी की सम्पत्ति पर अपना अधिकार कर लेखा-जोखा बराबर कर देता है।

७८० हात हूरा भांजी ने एक हूरो गड़्यो है।

सात शूरमाओं को मिलाकर एक सुअर का निर्माण किया गया है। सुअर में अत्यधिक बल होता है।

७८१ हाथ पग वाडो, राम वाएने काडो।

हाथ-पैर काटो और राम (पति के लिये सम्बोधन) को बाहर निकालो।

एक पति अपनी पत्नी की परीक्षा-हेतु अपने मित्रों में सलाह कर मुर्दे के समान पैर चौड़े कर घर में गिर जाता है, जब उसे बाहर निकालने के लिये गृह-द्वार तोड़ा जाता है तो उसकी पत्नी

राम के नाम पर उसके हाथ-पाँव काट कर उसे बाहर निकालने को कहती है, जिससे गृह द्वार को तोड़ा न जाय। क्रत्रिम-प्रेम को लेकर यह कहावत कही जाती है।

७८२ हाथल भाली ने हूकू नाकू खणाड़ दू।

जंघा दिखाकर सूखा नाका खुदवाया।

स्त्री के क्रत्रिम प्रेम का विश्वास कर लेने पर पुनः जब पुरुष धोखा खाता है तो इस कहावत का प्रयोग होता है।

७८३ हाथी ना दाँत भालवाना न्यारा ने खावाना न्यारा।

हाथी के दाँत खाने के और होते हैं तथा दिखाने के और। दोहरी नीति बरतने पर यह कहावत चरितार्थ होती है।

७८४ हाथी ने कानां मांये मच्छरू पूं पूं केर ते पू पू की दे हूँ वे।

हाथी के कानों में मच्छर 'भिन्न भिन्न' की ध्वनि करता है, तो उससे होता क्या है ?

शक्तिशाली का निर्बल कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

७८५ हाथी ने कीदे समद ने अडो लावे।

हाथी के चाहने पर समुद्र का पानी उथला नहीं किया जा सकता।

शक्तिशाली अत्यधिक बलवान का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

७८६ हाथी ने डाड़ा मांये डालां नी रे।

हाथी की डाढ़ों (दांतों) में आई हुई पेड़ की डालियां नहीं बचतीं।

सबल व्यक्ति के दाव में आ जाने पर निर्बल के लिये कोई चारा शेष नहीं रह जाता ।

७८७ हांठा ने भरोसे ढाँड पिलाई जाहें ।

ईख के भरोसे उसके समान अन्य डन्ठल (ढाँड) भी कुचला जाते हैं ।

जिस पर कष्ट आना होता है, उसके साथ नहीं रहना चाहिये अन्यथा साथ रहने वाले पर भी आपत्ति आने की आशंका रहती है ।

७८८ हाप तो परो गियो न धांहरो कूटत्ये हूं थावा नूं ।

साँप चला गया तो फिर उसके रेंगने के चिन्ह को पीटने से क्या होने वाला है ?

समय पर यदि कोई काम नहीं हो सका । तो पीछे उसकी स्मृति को बार २ दोहराने से कोई लाभ नहीं ।

७८९ हांपरया वाली होली अगारा भोरी जाये ।

सें वर गांव की होली अंगारों में पूर्ण होती है ।

तात्पर्य यह कि लोग-बाग अधजली होली के अंगारे एक-दूसरे डालते हैं और इस प्रकार होली का अस्तीत्व अंगारों के बिखरने के साथ समाप्त हो जाता है ।

७९० हायरी ना हतरे कायदा ।

ससुराल के सतरह कायदे होते हैं ।

ससुराल में लड़के या लड़की को बहुत अधिक नियमपूर्वक रहना पड़ता है ।

७९१ हारी आंटी देवी भण पेटे पाव आटा नी आंटी नी देवी ।

अन्य सभी प्रकार के कष्टों को सहन कर लेना किन्तु उदर पूर्त्यर्थ पाव आटा किसी प्रकार प्राप्त करना चाहिये।

अन्य साधन-सुविधाओं को भले समाप्त कर दिया जाय परन्तु पाव आटा पेट को अवश्य मिलना चाहिये।

७६२ हारू चोडी ने टीनका नो दीवो टमकावो।

सब छोड़ कर लकड़ी का दीपक तो जलाओ।

जो भी चीज़ पास में हो समय पर उसीसे काम चलाना चाहिये।

७६३ हालिए हूभे खेतनूं, धणी ए हूभ बार नूं।

भागीदार को खेत की ही चिन्ता रहती है, जिसमें उसका भाग है, किन्तु खेत के स्वामी को बाहर की भी सभी प्रकार की बातों की चिन्तायें रहती हैं।

७६४ हीदा माते हारा चाटू दिये।

सीधे पर सभी लकड़ी का चाटू देते हैं।

सरलता में सभी सहायक खड़े हो जाते हैं।

७६५ हीरा नो मोल हीरो करे

हीरे का मूल्य हीरा ही कर सकता है।

अच्छे व्यक्ति की परख अच्छा पारखी ही कर सकता है।

७६६ हुकम वगर पान नी हाले।

ईश्वर की आज्ञा बिना पेड़ का पत्ता तक नहीं हिल सकता।

संसार का प्रत्येक कार्य ईश्वरीय-इच्छा से नियन्त्रित है।

७६७ हूंर तेवो हांतरो

जैसी जिसकी स्थिति हो उसी के अनुसार ख़ातिरदारी होगी।

७९८ हूता बैठा मोत मोल नी लेणी ।

जान-बूझ कर आपत्ति को निमन्त्रण नहीं देना चाहिये ।

७९९ हूता हाप नी जगाड़वो ।

सोये हुए साँप को नहीं जगाना चाहिये ।

तात्पर्य यह है कि अकारण ही किसी शक्तिशाली से दुश्मनी मोल नहीं लेना चाहिये ।

८०० हे ऊपला तूं जाणे, तो ऊपलो हूं जाणे, चारे खूंणा वाला जांणे ।

हे ईश्वर ! तू जानता, तो फिर कौन नहीं जानता । तब तो चारों दिशाओं को जानकारी होती है ।

ईश्वर के व्यापक रूप की ओर इंगित है कि जब वह जानता है तो कण २ से वह चीज़ छिपी नहीं रहती ।

८०१ हेंदरा वाला हड़या है, चूटता वला नी करे ।

रस्से को इशारे से खुल जाने वाली गांठ है, खुलते देर नहीं करेगी ।

किसी अविश्वासी व्यक्ति के विश्वास योग्य कार्य स्वीकृत करने पर यह कहावत शंका स्वरूप कही जाती है ।

८०२ हेरण्या नो हांड है ।

गांव के पास वाले मार्ग पर विचरण करने वाला सांड है । जो व्यक्ति दूर न जाकर गांव के आस-पास अनुचित कार्य करता है उसके लिये यह कहावत कही जाती है ।

———

भीली-शब्द-कोष

(अ)

अस- घोड़ा । संज्ञा, पु० (सं० अश्व)

असतरी- पत्नी । संज्ञा, स्त्री० (सं० स्त्री)

अचबचाने- अचानक । क्रिया विशेषण

अदोरू- कठिन कार्य । सं०, पु०

अएना= सप्तर्षि । व्यक्तिवाचक संज्ञा, पु०

अहूँ- इसे, ऐसा । सर्वनाम, उभयलिंग

अनवाये- अनाज । संज्ञा (सं० अन्न)

अन्दर- इन्द्र देवता । सं०, व्यक्तिवाचक (सं० इन्द्र)

अबला- निर्बल । विशेषण, पु०

अणीको-[1] तिनका । सं० पु०, एक०

अलापएया- बातों की लम्बी उड़ान- गप्पें । संज्ञा

अदर अदर- धीरे धीरे । क्रिया बिशेषण

---

१. नुकीला होने के कारण संभवतः तिनके के लिये 'अणीके' शब्द का प्रयोग किया जाता है, 'अणीहालो', अणी भीली भाषा एवं राजस्थानी दोनों में किसी वस्तु विशेष की नोक को कहते हैं।

अलोटो– बंड, ताकतवर । विशेषण, पु०

अखली– उजाड़, निर्जन । सं०, स्त्री०

अठोलाई– ध्वंस, प्रलय । सं०, स्त्री०

अंकागाड़ी– हवाई जहाज, वायुयान । सं० स्त्री०

अलुणु– बिना नमक का ।

अक्खलो– असमान, उबड़खाबड़ । विशेषण, पु०

(आ)

आछटवो– शस्त्र विशेष का चलाना, वार करना, प्रहार करना । क्रिया । आछटी– वार किया, चलाया ।

आणवो– लाना, लाकर । क्रिया

आहंसी–साहस वाला । विशेषण, पु०

आखर–अक्षर । सं०, पु०

आखर–अप्सरा । सं०, स्त्री०

आवनो–आना हुवा । विशेषण, पु०

आमली–इमली । सं०, स्त्री०, (सं० अम्ल)

आंगली–अँगुरी । सं०, स्त्री० (सं० अंगुलि)

आड़ी–तरफ, ओर; उदा० पगाँ आड़ी–पैरों की तरफ । अव्यय

आद्‌या–आ गये । क्रिया, भूतकाल ('आबो' धातु से)

आंगण–आँगन । संज्ञा, पु० (शु० अङ्गण)

आड़ो–सहायक । (आड़ो आबो-क्रिया), विशेषण, पु० (स्त्री० आड़ी)

आंइनो–समीप में । क्रिया विशेषण, देशवाची

आकड़ो[1]–अर्क–अक, आक, आकड़ो। सं०, पु० (सं० अर्क)

आखो–अखण्ड, सम्पूर्ण, आखा। विशेषण, पु० (सं० अखण्ड)

आगतो–जल्दबाज़। विशेषण, पु०

आहोज–आसोज, एक मास का नाम। संज्ञा (सं० आश्विन)

आड़ो–पड़ा हुआ। विशेषण, पु०, (स्त्री० आड़ी)

आँटो–वैर–भाव। संज्ञा, पु०

आमलवो–ऐंठना, मरोडना, उदा० कान आमले। क्रिया।

आल–धक्का। संज्ञा, पु०

आमलो–ऐंठ बल; उदा० डोरी बळे, डोरी नो आमळो नी बळे। सं०, पु०

आँथमिया[2]–सन्ध्या। संज्ञा, स्त्री०

आत–आत्मा–अत्ता–आत। संज्ञा, स्त्री० (सं० आत्मा)

(उ)

उधरो–उदार; उदा० चत उधराँ–दिल का उदार। विशेषण, पु०

(ऊ)

ऊँणाह–घुमाव। उदा० नध बंकी ऊँणाह–नदी घुमाव के कारण शोभित होती है। सं०, पु०

ऊतळो–छिछला, उथला, कम गहरा। विशेषण, पु०

---

१. एक प्रकार का विख्यात वृक्ष जो गर्मी में हरा-भरा रहता है उसमें दुग्ध भी निकलता है।

२. कदाचित् 'अस्तमित' से बना है।

ऊनो–गरम । विशेषण, पु० (स्त्री० ऊनी)

ऊबो–खड़ा हुआ । विशेषण, पु० (स्त्री० ऊबी)

ऊपाद्‌ध्यो–उपाध्याय–उपाध्यो–उपाद्‌ध्यो=ब्राह्मण उपाध्याय । सं० पु०
(सं० उपाध्याय)

ऊंदरो–चूहा (उन्दरु, उन्दर, ऊंदर,) । संज्ञा, पु०, (बहु० ऊंदरा,
स्त्री० ऊंदरी । सं० उन्दरू

ऊठाड़वो–लगाना । क्रिया ।

ऊँदू–उलटा विशेषण, पु०

ऊबो–खड़ा । विशेषण, पु०

(ए)

एकल–एक । संख्यावाचक शब्द

एंड–त्रुटिपूर्ण । विशेषण, पु०

ऐंठो–झूंठा । विशेषण, पु०

एके कारो–एकता । संज्ञा भाववाचक, पु०

(ओ.)

ओठमण–रक्षक । संज्ञा, पु०

ओलकवो–देखना, पहिचानना । क्रिया० (सं० अवलोकन)

ओको–बुरी लगने वाली । विशेषण, पु०, (स्त्री० ओकी)

ओसन–ध्यान, खयाल । संज्ञा, पु०

ओच्‌लो–ओछा, नीच, तुच्छ व्यक्ति । विशेषण, पु०

ओगणीस–उन्नीस । संख्या वाचक शब्द ।

ओगनिया–कानों के ऊपरी भाग में पहिनने की सोने अथवा चाँदी
की पत्तियाँ । सं०, स्त्री०

इंटालो–झूँठी, उच्छिष्ट । विशेषण, पु० ।

(ओ)

ओखर–आक्षेपयुक्त । विशेषण, पु० ।

(क)

कोएली–कोयल । संज्ञा, स्त्री० ।

कंकू–कुंकुम । संज्ञा, पु० ।

कह–ऊँट (करम–करह–कह) । संज्ञा, पु० (सं० करम)

कलो–दुर्ग । संज्ञा, पु० ।

कढवो–काढवो, बाहर निकलना, निकालना । क्रिया (कढ्यो–भूत–निकला)

कम्बली–ऊन की कम्बल । संज्ञा, स्त्री० (सं० कम्बल)

कुमारज्या–दुष्ट अथवा कुलटा पत्नी । संज्ञा, स्त्री० (सं० कुमार्या)

काग्यो–एक जानवर जो धान में लग कर धान को नष्ट करता है । संज्ञा, पु० ।

कूँज–पेट । संज्ञा, पु० (उदा० बाकर कूँजो– जिसका पेट बकरे जैसा हो)

काँकड़–गाँव के पास का जंगल । संज्ञा, पु० ।

कलिंदर–गुफा । संज्ञा स्त्री० ।

करवत–लकड़ी का औजार । संज्ञा, पु० (मि० करोत–हाड़ोती)

कंमधांण–राठोड़ वंशी क्षत्रिय । संज्ञा, पु० ।

केकांण–घोड़ा । संज्ञा, पु० ।

क्रतांत–यमराज, मृत्यु के देवता। संज्ञा, पु० (सं० कृतान्त)।

कुलको–मिट्टी का छोटा बर्तन जिसके द्वारा बड़े बर्तन में से पानी निकाला जाता है। सं० पु०।

कुवार–कुम्हार। संज्ञा, पु० (सं० कुम्भकार)

कापड़ी–काँचली। संज्ञा, स्त्री० (सं० कञ्चुकी)

कींकोडा–वन करेला, एक जंगली शाक। सं०, पु० (मि० ककोड़ा–हाड़ोती)

काढ़बो–निकालना। क्रिया (उदा० काम काढ़बो-काम बनाना।

कूटबो–पीटना, मारना। क्रिया।

काल़ा–अकाल। संज्ञा, पु०।

कोटारां–कोठार, धन-धान्यादि संग्रह करने का मकान। सं० पु० बहु०

कोल–इक़रार। संज्ञा स्त्री०।

कोयरो–गन्दे पानी में रहने वाला एक कीड़ा। सं० पु०।

कुंवारो–अविवाहित, क्वाँरा। विशेषण, पु० (सं० कुमार)

का.ल.ले–आने वाला दिन, यह शब्द बीते हुए दिन के लिये भी प्रयुक्त होता है। (कल्य, कल्ल, का.ल.ले) (मि०–कल–हि०), का.ल (हा०) क्रिया विशेषण, समय बोधक (सं० कल्य)

कीदी–किया। क्रिया, भूतकाल, स्त्रीलिंग के साथ प्रयुक्त (सं० 'कृ' धातु से ही यह रूप बना है) पु० कीदो

केवो[1]– कथ–कह–कहना–केवो–क्रियो (शु० कहना–हि०)

कूड़ा[2]– (कूप, कूवो, कूओ, कूड़ो) कुआँ, कूप । संज्ञा, पुल्लिंग (सं० कूप)

कूतरो–कुत्ता । संज्ञा, स्त्री० ।

कूला–कष्ट । संज्ञा, पु० ।

कोली–एक हाथ में आ जाय उतना घास, भाव विशेष । भाववाचक

कडूयँ– ५ कोली का एक 'कडूयँ' होता है । घास का पूला । भाववाचक

---

१ राजस्थानी में क्रिया के अन्त में 'वो' रहता है । जिससे उसका वास्तविक धातुरूप ज्ञात होता है, हिन्दी में जिस प्रकार प्रत्येक क्रिया का धातुरूप बताने के लिये 'ना' का प्रयोग किया जाता है । हिन्दी का 'ह' यदि वह किसी क्रिया के मध्य में प्रयुक्त होता है तो उसका रूप राजस्थानी व भीली में 'ए' के रूप में पाया जाता है ।

उदा०–रहना–रेवो, कहना–केवो ।

२ राजस्थानी व भीली में 'ड़' अथार का बाहुल्य है, किसी भी शब्द में जहाँ केवल स्वर होता है, 'ड़' का आदेश कर दिया जाता है, हाड़ोती में 'कूप' के लिये 'कुओ' अथवा 'कूओ' का प्रयोग होता है, अतः 'ड' का बाहुल्य राजस्थानी की सब बोलियों में नहीं है, भीली पर मेवाड़ी का प्रभाव है अतः 'ड' का प्रयोग मिलता है ।

करसो–किसान। संज्ञा, पु० (सं० कृषक)।

केड़ा–बछड़े (मि० केरड़ा–हाड़ोती) संज्ञा, पु०, बहु०।

कुलकी–मिट्टी का छोटा सा बर्तन। संज्ञा, स्त्री० (मि० कुल्हड़ी)

काकड़ी–ककड़ी (मि० काँकड़ी–हाड़ोती) संज्ञा, स्त्री०।

कूकड़ो–मुर्गा। कुक्कुट–कुक्कुड़–कूकड़–कूकड़ो। संज्ञा, पु० (सं० कुक्कुट)

कायदो[१]– मान, इज्जत। संज्ञा, पु० (फा० कायद, अर० कायदा)।

कागलो–कौआ। संज्ञा, पु० (सं० काक)।

कजोड़ो–विमुख, अभागा। विशेषण, पु०।

कतीर–रांगा। संज्ञा, पु०।

काँकड़ी-पत्थर के टुकड़े (काँकरी–हाड़ोती)। संज्ञा, स्त्री०।

कोदरा–कोदों, एक प्रकार का निकृष्ट अनाज। सं०, पु०।

कड़ी–किवाड़। संज्ञा, स्त्री०।

कातरिया–काँच की चूड़ियाँ। संज्ञा, स्त्री०।

काम्बीयाँ–पीतल की पैर में पहिनने की टेढ़ी मेढ़ी चूड़ी जिसे भील स्त्रियाँ पहिनती है। संज्ञा, स्त्री०।

काण्डिया-बांस की फच्चरों से बनी ढक्कनदार डलियाँ। संज्ञा०स्त्री।

कंठेली–गले में पहनने का आभूषण विशेषण। (मि० कंठीहाड़ोती) संज्ञा स्त्री०।

---

२ फारसी एवं अरबी में इसका अर्थ ढंग होता है अथवा व्याकरण यहाँ इसका अर्थ मान होता है।

कावाचे-कवायद, । संज्ञा पु० ।

केगर-एक प्रकार का पक्षी जिसका वर्णन भीली लोक गीतों में मिलता है । बायीं ओर इसका बोलना अपशकुन माना जाता हैं । संज्ञा पु० ।

कौलो-कोना । संज्ञा, पु० ।

खुरसान कदाचित इस शब्द का सम्बन्ध 'खुरासान' देश से है जिसके आसपास से ही मुगल भारत में आये थे । मुगल । संज्ञा पु० ।

(ख)

खळ-खली, तेल निकालने पर बची तिल्ली का भूसा । संज्ञा स्त्री० ।

खरळी-खेत में पानी देने के लिये बनाई गई नाली, नहर । संज्ञा स्त्री० ।

खाली-हिस्सेदार, साझीदार । संज्ञा पु० ।

खल-दुष्ट (वि०) शत्रु (संज्ञा) (विशेषण), पु० ।

खाता-आतुरता । संज्ञा भाववाचक, स्त्री० ।

खीजवो-क्रोधित होना । क्रिया ।

खीजावो-क्रोधित करना । क्रिया (खीज+प्रेरणार्थक)

खीजायो-क्रोधित किया । (भूत) ।

खायबो-परखना (क्रिया) ।

खीचड़ी-चाँवल दाल का बना हुआ खाद्य विशेष, खिचड़ी । संज्ञा० स्त्री० ।

खाटकाई-पिता की बची हुई सम्पत्ति, जायदाद । संज्ञा ।

खपटां-लड़ाई झगड़ा, मि० खटपट । संज्ञा, स्त्री० ।

खाखरो-पलाश का पेड़ । संज्ञा, पु० ।

खली-गिलहरी । संज्ञा, पु० ।

खांडल्यू-बिना सिंग का बैल । संज्ञा० पु० ।

खाण्डो-जूता, संज्ञा, पु० ।

खात-सेंध, वह मार्ग विशेष जो चोर चोरी करने के लिये बनाते हैं । संज्ञा० स्त्री० ।

खाल-चमड़ा । संज्ञा, स्त्री० ।

खलाँ-खलिहांन, (मि० खलाण-हाड़ोती) । संज्ञा० पु० ।

खाडो-खड्डा । संज्ञा० पु० ।

खेड़ा-वह वर्षा जो कुछ दिनों तक रुक रुक कर होती है । संज्ञा, स्त्री०

खांड-शक्कर । संज्ञा, स्त्री० ।

खीर-क्षीर, खीर । दूध में चाँवल पकाकर उसमें शक्कर डालकर जो खाद्य बनाया जाता है । संज्ञा, पु० । (सं० क्षीर) ।

खोडूँ-लंगड़ा, । विशेषण, पु० (सं० खञ्ज) ।

(ग)

गूणो-गधे अथवा भैंसे पर अनाज भरकर रखा जाने वाला थैला । संज्ञा, पु० । (सं, गोणी) ।

गुल-गुड़ । संज्ञा, पु० (सं० गुड़) ।

गुड़ावो-मार गिराना । क्रिया ।

गोटा-गोठ (सामूहिक भोजन) संज्ञा, स्त्री० (सं० गोष्ठी) ।

गोलनी- मटकी, मिट्टी का बड़ा बर्तन। संज्ञा स्त्री०
गांभण-गर्भवती। विशेषण, स्त्री० (सं०गर्भिणी)।
गांठडी- गांठडी, गांठ, संज्ञा, स्त्री० (सं० ग्रन्थि)।
गवरी-[१] गौरी, गोरी-गवरी। संज्ञा, स्त्री० (सं०गौरी)
गाडो- दृढ, मजबूत, गाढा। विशेषण, पु०।
गावडूं- गर्दन, (उदाहरण ऊंट नूँ गावडूँ लाम्बो) संज्ञा, पु.।
गट्ठा- गांव का वृद्ध पुरुष, अथवा मुखिया। सं, पु०।
गंडक- कुत्ता। संज्ञा,पु०।
गोठीपणा- मित्रता-दोस्ती। भाववाचक संज्ञा (सं०गोष्ठी)।
गधेडो-गधा (डा०डी०आदि का राजस्थानी व भीली में बाहुल्य होता है यह प्रत्यय स्वार्थ में प्रयुक्त होता है। संज्ञा पु०,स्त्री०गधेड़ी।
गमेती- मुखिया, सरकार द्वारा नियुक्त गांव कामु खिया। संज्ञा,पु०
गारो- मिट्टी, संज्ञा. पु०।
गलियो- मीठा, स्वादिष्ट। विशेषण पु०।
गोल- गुड़, गन्ने के रस से बनी हुई मिठी वस्तु (संज्ञा,पु०)

---

१. शिव की पत्नी; एक प्रकार का नृत्य विशेष जो भीलों में प्रचलित है। यह नृत्य पार्वती के जीवन से ही सम्बन्धित होता है और साल भर में एक महीने भर होता है। इन दिनों नृत्य में भाग लेने वाले भील खान-पान, आचार-विचार की दृष्टि से पूर्ण रूपेण शुद्ध रहते हैं। यह नृत्य बड़ा कला पूर्ण है। गौरी से सम्बन्धित होने के कारण यह नृत्य भी 'गवरी' कहलाता है।

गादो– कीचड़ (ओकारान्त शब्दों के रूप में अन्य विभक्तियों में में 'ओ' के स्थान पर 'अ' आदेश होकर विभक्ति बोधक अव्यय लगता है। उदाहरण– गादा मांये (कीचड़ में) गादानी (कीचड़की) आदि। संज्ञा, पु०।

गुवाल– गोपाल-गोवाला, गुवाल।

ग्वाल, गाय, भैंस बकरी आदि चराने वाला (यद्यपि 'गोपाल' शब्द का तात्पर्य केवल गाय का रखवाला ही है, फिर भी गुवाल शब्द का प्रयोग केवल गायों के चरवाहे के ही लिये नहीं होत। संज्ञा, पु० (सं०गोपाल)।

गोड़ो–घुटना। संज्ञा, पु०, बहु० गोड़ा।

गोलो–छाछ बिलाने का मिट्टी का बड़ा बर्तन। संज्ञा, पु०, बहु० गोला

गण्नू–पानी छानने का कपड़ा; हाड़ोती में इसको 'नातणा' कहते हैं संज्ञा, पु०।

गलको–मिष्टान्न, स्वादिष्ट भोजन। संज्ञा, पु०

गोदो–नया मजबूत, बैल। संज्ञा, पु०, बहु० गोदा (संस्कृत गौः)

गूँरको– घूँघट (मि० गूँगटो, हाड़ोती) संज्ञा, पु०।

गराबो–घडवाना, बनवाना। (मि० घड़ावो–हाड़ोती)। क्रिया। (प्रा०घड्डेइ)

गोदो–केड़ा गाय का बच्चा। संज्ञा० पु०।

गली डुणिया–गिल्ली डंडे का खेल। संज्ञा, पु०।

गागरो–लहँगा (मि०घाघरो-हाड़ोती)। संज्ञा, पु०।

गुमतुं–घूमता,। विशेषण पु०।

गेणो– गिरवी । विशेषण, पु० ।

(घ)

घोखो–चोट (उदा० आँखते रेई जाये ने घोखो नीकली जाये । (आँख रह जाती है और आँख की चोट अच्छी हो जाती है) । संज्ञा पु० ।

घणो–अत्यधिक, उदा० मैं घणूँ काम कीदो । विशेषण, पु०–घणी स्त्री० घणूँ पु० ।

घरे–घर, मकान, गृह–घर-घरे । संज्ञा, पु०, । (सं० गृह)

घाणी–तिल्ली आदि का तेल निकालने का यन्त्र विशेष जो बैल के द्वारा संचालित होता है ! संज्ञा, स्त्री० ।

घटूल्यो–छोटा घड़ा–'ल्यो' प्रत्यय अतिशाप लघुत्व का द्योतक है ।) है ।) जातिवाचक संज्ञा, पु० ।

घरांडो–जोर की आवाज, गाय व बैल के रभाने के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है :

घट्टी–घरट्ट, घट्ट, घट्टी । चक्की आटा पीसने का पत्थर का हस्त संचालित यन्त्र क्शिेष । संज्ञा, स्त्री० (सं० घरट्ट)

घोघलो–गला, गल प्रदेश । संज्ञा, पु० (सं० ग्रीवा) ।

(च)

चोत–चौथ, कर । (मराठे पेशवा 'चौथ' वसूल करते थे) संज्ञा, स्त्री० ।

चांदमारी–बन्दूक से निशान मारने का अभ्यास । संज्ञा,स्त्री०

चाँदण–चन्दन संज्ञा, पु० (सं० चन्दन)।

चख–चक्षु, नैत्र। संज्ञा, स्त्री० (सं० चाक्षुप)

चुगबो–चुगना। क्रिया। (सं० चि०)

चाबो–चाहना, पसन्द करना। क्रिया।

चाटू–लकड़ी का बड़ा चम्मच। संज्ञा, पु०।

चड़बो–छोड़ना। क्रिया।

चाली–बकरी (मि० छाली–हाड़ोती)। संज्ञा, पु०। (सं० छागे)

चादो–घर की बाजू की दोनों ऊँची दीवारें 'चांदा' कहलाती है। संज्ञा, पु०।

चोलू–छेद, छिद्र। संज्ञा पु०।

चौवटो–चौराहा, जहाँ गाँव की पंचायत आदि हुवा करती है। संज्ञा पु०।

चो–चतुर–चउर्–चो, चार। संख्यावाचक, सं० चतुर)।

चींगरद्यां–फटा सा लम्बा वस्त्र जो सिर पर लपेटने के काम में गरीब लोग लाते हैं, छींदी। संज्ञा, स्त्री० बहु०, एक चींगरदी।

चालन्न–चालनी में आटा आदि चालने (छानने) के पश्चात् बचा हुआ भूसा। सज्ञा, पु०।

चपा–(क्रि०) बिलकुल; (वि०) स्पष्ट। क्रिया विशेषण रूप में भी प्रयुक्त होता है।

चूटबो–छूटना भीली बोली में कई स्थानों पर महाप्राण के स्थान पर अल्प प्राण का अधिकता से प्रयोग मिलता है।

चाचलो–दक्ष, फुर्तीला, चञ्चल । बहुधा इस शब्द का प्रयोग 'दक्ष' अर्थ में होता है । विशेषण, पु०, स्त्री०, चाचली । सं० चञ्चल ।

चीरा–वह मनुष्य जो मरने के बाद किसी जीवित व्यक्ति के शरीर में 'भाव' लाकर बोलता है ।

चौकली–वह स्त्री जो मरने के पश्चात् किसी जीवित व्यक्ति के शरीर में भाव लाकर बोलती है । संज्ञा, स्त्री० ।

चोरू–छोटा लड़का । (मि०–छोरा–हाड़ोती) संज्ञा० पु० ।

चाकराई–सेवकाई, सेवा । (चाकरी, हिन्दी) । संज्ञा भाववाचक, स्त्री० ।

चेटी–दूर, (छेटी, दूरी-हाड़ोती) । विशेषण, पु०, स्त्री० चेटी ।

चोकी–पहरा, संज्ञा, स्त्री० ।

चेनाल–कुलटा स्त्री, भ्रष्ट चरित्र स्त्री, । विशेषण, स्त्री० ।

चूरमूँ–आटे को घी में भुनकर शक्कर मिलाकर बनाया गया लड्डू अथवा चूर्ण विशेष ।

चाणीबो–छानना, उदाहरण–पाणी पीजे चाणी ने । क्रिया ।

चोगू–वह तुर्रा जो दूल्हा सिर पर लगाता है । संज्ञा, पु० ।

चाने–गुप्त (मि० छाने, हाड़ोती) विशेषण, पु० ।

चोड़े–स्पष्ट, व्यक्त । विशेषण, पु० ।

चाणनी–चालनी, छलनी, संज्ञा, स्त्री०

चेतान–दुष्ट, नीच, शैतान । संज्ञा, पु० (फा. शैतान) ।

चोची–थोड़ा, अतिन्यून वस्तु । (मि. चोचा पे मोजो, हाड़ोती) विशेषण, पु०, स्त्री० चोची ।

चचून्दरी–छछूंदर, एक जानवर । संज्ञा, स्त्री० ।

चोपूँ–मवेशी, पशु । संज्ञा, पु० ।

चारो–घास । संज्ञा, पु० ।

चोवटियो–पञ्चायत में बढ़ २ कर बोलने वाला व्यक्ति । संज्ञा, पु० ।

चेकलो–भगने का रास्ता । संज्ञा, पु०, बहु. चेकला (चेकलाँ) ।

चा–छाछ, मट्ठा । संज्ञा, स्त्री० (सं. छात्र) ।

चतरी–छतरी, देवरा, छोटा मन्दिर । संज्ञा, स्त्री० (सं. छात्र) ।

चेला–शिष्य, चेला । संज्ञा, पु० ।

चावनी–छावनी, सेना के पड़ाव का स्थान । संज्ञा स्त्री० ।

चोगेलो–छोगा, सुनहरी तुर्रा जिसे दुल्हा, सिर में लगाता है ।
संज्ञा पु० ।

चारो–घास । संज्ञा पु० ।

(छ)

छत–चमत्कार, छत्र । संज्ञा, पु० ।

छायली–छाया । संज्ञा, स्त्री० ।

(ज)

जोरव–आनन्द । संज्ञा, पु० ।

जोरवा करिवो–आनन्द से रहना । क्रिया ।

जर–जरी, कोटे का काम । संज्ञा, पु० ।

जोड़ी–जूता; जोड़ा (दो वस्तुएँ) । संज्ञा, स्त्री० ।

जोइबो–देखना । क्रिया ।

जेणो–पतला, हल्का, विशेषण, पु० ।

जुमका-गुच्छा, (मि. झूमका) संज्ञा, एक वचन ।

जतरे-कदाचित 'यत' के स्थान पर 'जत' हो गया और काल का बोध कराने के लिये 'रे' प्रत्यय जोड़ दिया गया है। जब तक। क्रिया विवेषण (सं. यावत)।

जमारो-जीवन। संज्ञा, पु०।

जेम-जिस भाँति। अव्यय।

जोदो-योद्धा, जोधा-जोदो, मज़बूत व्यक्ति, वीर।

जेलू-कुल्टा स्त्री। संज्ञा, स्त्री०।

जक-झष-झख, जक। मछली, मु. जक मारवो, व्यर्थ समय गँवाना। संज्ञा, पु० (सं. झष)

जमारू- जीवन। संज्ञा. पु०।

जेलवो- लेना; मंजूर करना (मि० झेलवो-हाड़ोती) उदाहरण नूतो जेलियो-निमन्त्रण स्वीकार किया। क्रिया।

जेटको- तलवार। संज्ञा, पु०।

जूनूं- प्राचीन। विशेषण, पु०। (सं. जीर्ण) स्त्री० जूनी।

जातरी- यात्री। संज्ञा, पु०।

जंजाल- स्वप्न। संज्ञा, पु०।

जेठाणी- पति के ज्येष्ठ भ्राता की पत्नी। संज्ञा, स्त्री०।

जानडली- बरात, जान। संज्ञा, स्त्री०।

जानियो-बराती। संज्ञा, पु०।

जूठ- असत्य, झूंठ। भाववाचक संज्ञा,।

जेर- विप, जहर, (रा० व भीली में ह० 'ए' में परिवर्तित हो

जाता है। जैसे — रहना, रेबो। संज्ञा, पु०।

जलमवो– जन्म लेना, क्रिया।

जोत– प्रकाश, देवताओं के मन्दिरों में जो दीपक जलाये जाते हैं, उनके लिये विशेष रूपेण 'जोत' शब्द का प्रयोग होता है।

जटे– जहाँ, जिस स्थान पर। काल वाचक, क्रिया विशेषण।

(झ)

झुलसवो– झुलस जाना। क्रिया।

झोंक– बड़ा वेग।

झेंडलू–मुड़े सींग वाली गाय। संज्ञा स्त्री०।

(ट)

टांकी–पत्थर काटने का औजार। संज्ञा० स्त्री० (सं० टङ्क)

टका–दो पैसे, संज्ञा, पु०।

टाल्यो–गंजा मनुष्य। विशेषण, पु०।

टेव–आदत, किन्तु 'बुरी आदत' के लिये प्रयुक्त होता है। संज्ञा, स्त्री०।

टीलू–टीका, तिलक। संज्ञा, पु०। (सं० तिलक)

टोटो–कमी। संज्ञा, पु०।

टापरी–झोंपड़ी। संज्ञा, स्त्री०।

टोटी–कमी, न्यूनता। संज्ञा, पु०।

टोटियाँ–कान के आभूषण। संज्ञा, पु०।

टीटा–वीर, क्षत्रिय। विशेषण, संज्ञा, पु०।

(ठ)

ठाकुर–मामूली राजपूत किसी क्षेत्रिय के तुच्छत्व को द्योतित करने वाले के लिये इस नाम से पुकारा जाता है।

ठालूबूलू–निकम्मा, भूला। विशेषण, पु०।

ठीकरो–निकृष्ट बर्तन, ठीकरी–मिट्टी के फूटे बर्तन का टुकड़ा।

ठोड़–स्थान, ठान, ठोड़ (मि० ठोर-हाड़ोती), सं०, स्त्री० (सं० स्थान)।

ठाकराई–स्वामित्व (व्रज, ठकुराई)। संज्ञा, भाववाचक, स्त्री०।

ठावू–स्थाई। विशेषण, पु०। (सं० स्थायी)।

ठा–खबर। संज्ञा, स्त्री०।

(ड)

डांठा–मद, गर्व। संज्ञा, पु०।

ड़लो–बड़ा टुकड़ा। संज्ञा, पु०।

डांगरो–बैल। संज्ञा, पु०।

ड़ाण–कदम। संज्ञा, पु०।

डीकरी–पुत्री, लड़की। संज्ञा, स्त्री०।

डां–बछड़े। संज्ञा, पु०, बहुवचन।

डींगो–नदी के पास जो प्रवाह के कारण झुक जाता है पर उखड़ता नहीं।

डूंगी–कुए पर की गेंडूरी जिस पर पानी भरने वाले घड़ा रख देते हैं।

डावड़ो–बच्चा, लड़का।

डोबी–भैंस, संज्ञा, स्त्री०।

डाकण-डायन, वह स्त्री जिसकी बाल-बच्चों पर नजर लग जाती है।

डूंगर-पर्वत, पहाड़। संज्ञा, पु०।

डाम-दाग जो बीमारी को मिटाने के लिए लगाया जाता है। भीलों में व्याधिग्रस्त अंग विशेष को जलाने की प्रथा प्रचलित है। हाड़ोती बोली में इसे 'चांचवा' कहते हैं। यह डाम गरम कोल्हू अथवा ठीकरी के अग्र भाग को उस स्थान पर छुआ-कर लगाया जाता है ज्यों ज्यों वह घाव पक कर ठीक होता जाता है त्यों-त्यों व्याधि मिटती जाती है। संज्ञा, पु०,।

डूमड़ो-नीच जाति विशेष, डोंम। संज्ञा, पु० (स्त्री०डूमड़ी)।

डेंडकी-मेंढक। संज्ञा, स्त्री०।

डोकरो-बुडढ़ा। संज्ञा, पु०।

डावुं-दाहिनी ओर। विशेषण।

डोटी-कपड़े का गेंद। संज्ञा, स्त्री०।

(ढ)

ढावो-नदी का तीर। संज्ञा, पु०।

ढाही-गाय। संज्ञा, स्त्री०।

ढांढू-पशु। संज्ञा, उभय लिंग।

ढीच-अग्नि परीक्षा। संज्ञा, स्त्री०।

ढ़ोला-पति के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। संज्ञा, पु०

ढोलीडूँ-पलंग (मि० ढोलणी-हाड़ोती)। संज्ञा, पु०।

ढ़ाल-ढाल, समुद्र अथवा नदी का तीर। संज्ञा, स्त्री०।

(त)

तमा–तू , तुम । सर्वनाम ।

त्रफ–ओर, तरफ (उदा० चहुं त्रफाँ-चारों तरफ) । संज्ञा, स्त्री० (उ० तरफ) ।

तन्न–शरीर । संज्ञा, पु० (सं०तनु) ।

तल–तिल्ली का दाना । संज्ञा, पु० (सं० तिल) ।

त्याग–(संज्ञा) त्याग । (वि०) दानी अथवा त्यागी । संज्ञा (विशेषण), पु० ।

तपत्या–तपस्या । संज्ञा, स्त्री० ।

तेवार–त्यौहार (मि० तुवार-हाड़ोती) संज्ञा, पु० ।

तेड़वो– निमन्त्रित करना । क्रिया ।

तजारा–छिलके, सारहीन वस्तु । सज्ञा, पु०, वहुवचन ।

ताकड़ी– तराजू । संज्ञा, स्त्री० ।

तणी–तराजू को उठाने के लिए निर्मित ऊपरी भाग (मि०ताणी-हाड़ोती) संज्ञा, स्त्री० ।

तेड़ियावों-बुलाना । क्रिया ।

तम्बुरा–वाद्य यन्त्र विशेष । संज्ञा, पु० ।

तोरादार बन्दूक–बिना टोपी की बन्दूक । संज्ञा, स्त्री० ।

तागली–चांदी अथवा सोने के तारों से बनी हुई हाँसली जो गले में पहनी जाती है । संज्ञा, स्त्री० ।

तवरी–खिड़की । संज्ञा, स्त्री०, बहु०-तवरियां ।

(थ)

थटायवो-दौड़ाना । क्रिया ।

थटायो-दौड़ाया हुवा । विशेषण, पु० ।

थूकरो-थोड़ी सी सामग्री, वस्तु की न्यूनता अथवा तुच्छता का आधिक्य बताने के लिए प्रयोग होता है । संज्ञा, पु० ।

थाये-होना । क्रिया ।

थीगलो-चेगल्ला, पेबन्द । संज्ञा, पु० ।

थेईया-कूद कर । क्रिया विशेषण ।

थापड़ा कोल्हू । संज्ञा, पु० ।

(द)

दरीया-दड़ी, कपड़े की बनी गैंद । संज्ञा, स्त्री० ।

दावो-मुकदमा । संज्ञा, पु० ।

दूणो-दूध दोहने का मिट्टी का बर्तन । संज्ञा, पु० (सं. दोहनी)

द्रव-रुपया-पैसा, माल, द्रव्य । संज्ञा, पु० (सं. द्रव्य)

दुसाल-ऊनी दुशाले । संज्ञा, पु० ।

दत-दान । संज्ञा, पु० ।

दतराह-दानमार्ग । संज्ञा, पु० (दत+दाह) ।

दपट-दान देने की आतुरता । संज्ञा, स्त्री० ।

दुकाइदूयो-मेवाड़ का एक सिक्का जो दो पाई का होता है । संज्ञा, पु० ।

दकत्या-दुःख में । संज्ञा ।

दाड़ी-दिन । संज्ञा, पु० ।

दालिदराइ- दरिद्रता-दरिद्राई-दलिद्राइ-दालिदरार, दरिद्रता, गरीबी । संज्ञा, भाववाचक, स्त्री० ।

दई-दधि-दही-दई-दही । संज्ञा, पु० (सं०दधि) ।

दूणो-दही जमाने का या रखने का मिट्टी का पात्र । संज्ञा, पु० । (सं० दोहिनी) ।

दलवी-किसी अनाज को मोटा पीसना, चने, मूंग, उड़द आदि की दाल बनाने को दलना कहते हैं, मिथ्यानुकरण के कारण गेहूँ आदि को बुर बुरा पीसने को 'दलना' कहने लग गए और वह दली हुई वस्तु दलिया । 'दलना' का 'दाल' शब्द से घनिष्ठ सम्बन्ध है । क्रिया । (सं० दल)

दलाई-किसी अनाज के दलने का पारिश्रमिक । भाववाचक संज्ञा, स्त्री० ।

दोगलो-धोखेबाज़, दग़ाबाज़ । यह शब्द फारसी के 'दग़ा' शब्द' से बना है । अर्थ है, दग़ा करने वाला ।विशेषण, पु० (फा० दग़ाबाज़) ।

दारू-शराब, मदिरा । संज्ञा, पु० ।

दीवो-दीप-दीव-दीवी-दीपक । संज्ञा, पु० ।

दूद-दुग्ध-दुध्ध-दूध-दूद-दूध । संज्ञा, पु० (सं०दुग्ध) ।

दुरबन-दुर्बीन, दूरबीन । संज्ञा, पु० ।

दोयरो-आभूषण विशेष जो गले में पहना जाता है । संज्ञा, पु० ।

देवर-पति का छोटा भाई । संज्ञा, पु० ।

(ध)

धनसचा-धन का संचय करने वाला। विशेषण, पु०, एक० बहु० धनसचाँ (धन+सचा)।

धोको-डर, भय। संज्ञा, पु० (धोखा)।

धाडू-लूट, डाका (मि० धाड़ो-हाड़ोती)।

धकबो-जलना, प्रज्वलित होना। क्रिया।

धोरी-बैल। संज्ञा, पु०।

धनाई-धान्य, अनाज। संज्ञा, पु०। (सं० धान्य)।

धोलो-धवल-धोल-धोलो-श्वेत, सफेद। विशेषण, पु०। धोली (सं० धवल)।

धूणी-वह स्थान जहाँ साधुलोग आग जलाए रखते हैं। संज्ञा, स्त्री०। निश्चय करना। क्रिया।

धणी- स्वामी, पति (सम्भवतः यह शब्द 'धणो' से संबंधित है। संज्ञा, पु०।

धाढ़ो-तृप्त, (मि०धपवी (तृप्त होना) हाड़ोती)। विशेषण, पु०, स्त्री, धाढी।

धागड़ो-झगड़े को बढ़ाने का प्रयत्न। संज्ञा, पु०।

धूरीई-बैल। संज्ञा, पु०।

धालो-रीति-रिवाज। संज्ञा, पु०।

धर-उत्तर दिशा। संज्ञा, स्त्री०।

धधमबो-गर्जन करना, प्रायः मेघ की गर्जना के लिये प्रयुक्त होता है। क्रिया.

धरुँ–ध्रुव–ध्रुअ–ध्रु–धरु–धरुँ ध्रुव का तारा। संज्ञा, पु० (सं.ध्रुव)

धुमाल–धूम, हुल्लड़। संज्ञा, पु०।

धोली–सफेद, यह शब्द संज्ञा रूप से भी श्वेत गौओं के लिए प्रयुक्त होता है। विशेषण, स्त्री०।

(न)

निरफल–फलहीन, व्यर्थ। विशेषण, पु० (सं. निष्फल)

नत–प्रतिदिन। क्रिया विशेषण (सं. नित्य)

नाह–पति। संज्ञा, पु० (सं. नाथ)

ने–नदी (मि. कितो व ओगुण जग करत, नै वै चढ़ती बार-बिहारी) सज्ञा, स्त्री०।

नध–नदी। संज्ञा, स्त्री० (सं. नद)

नमीबो–नमना, झुकना। क्रिया (सं. - नम्)

नवरो–निकम्मा। सन्भवतः 'वर' शब्द जिसका अर्थ श्रेष्ठ होता है, उसके निषेधर्थक अव्यय लगाकर बनाया गया 'नवर'–नवरो–अश्रेष्ठ, जो किसी काम का नहो।

नातरो–पुनर्विवाह जो निम्न जातियों में प्रचलित है। (मि.-नानो-हाड़ोती)। संज्ञा, पु०।

नाटो–भगा हुवा। विशेषण, पु०।

नकटो–छिन्न नासिक, बे इज्जत। इस शब्द की उद्भूति 'नाककटों' से हुई है। धीरे धीरे प्रयत्न लाघव के कारण 'नकटो' शब्द बोल-चाल में प्रचलित हो गया। विशेषण, पु०।

नार–स्त्री। संज्ञा, स्त्री० (सं. - नारि)

नार–शेर, सिंह । संज्ञा, पु० ।

नीर–जल । संज्ञा, पु० (सं. नीर)

नवाणो–कुआँ । संज्ञा, पु० ।

नूँठबो–तौलना, गिनना । नूह्या; नूठ्यो । विशेषण, तौला हुवा, गिना हुवा; तौली हुई, गिनी हुई । क्रिया सकर्मक ।

नू–का । सम्बन्ध बोधक अव्यय (नू, नी, ने) यथा, 'अक्कल नू खाबो है ।' (अक़्ल का खाना है)

नी–नहीं । निषेधार्थक अव्यय ।

नखरा–बनठन, फैशन का शौक । संज्ञा, नखराली (नखरे वाली)

नूतबो–निमन्त्रण देना । क्रिया ।

नेज–पानी खींचने की रस्सी । संज्ञा, स्त्री० ।

नटबो–मना करना । क्रिया ।

नाड़ो–नस, (नाड़ी), नाला (उदा. नाड़ा खाड़ा नाले-खाले) संज्ञा, पु० ।

नानडिया–बच्चा (मि. नहनो-हाड़ोती) । संज्ञा, पु० ।

नींदरे–नींद । संज्ञा, पु० (सं. निद्रा)

नेवण–कुआँ । संज्ञा, पु० ।

नमना–यशु कीर्ति । संज्ञा, पु० ।

नन्दी–पति की बहिन, ननद । संज्ञा, स्त्री० ।

नोबतू तेयू–एक प्रकार का वाद्य विशेष जो बांस का बनता है । इसकी सूरत मुरली जैसी होती है ।

नानु–छोटा । विशेषण पु० ।

(प)

पलो–तेल निकालने का बड़ा चम्मच । संज्ञा, पु० ।

पून–कूल्हे, नितम्ब । संज्ञा, पु० ।

पेलो–दूसरा अन्य । विशेषण पु० ।

पेंड़ो–पेर । संज्ञा, पु० ।

पठा–परन्तु । समुच्चय बोधक अव्यय ।

पलाऴवो–धोना, साफ करना । क्रिया ।

पोरवाबो–डराना, धमकाना ।

पछींत–घर के पीछे की दीवार । संज्ञा, पु० ।

पगरकूं–जूता (मि. पगरखी - हाड़ोती) संज्ञा, पु० (पादरक्षो)

परेम–प्रीति, स्नेह । संज्ञा पु० । (सं. प्रेम) ।

परसूँ–परसों, कालवाची शब्द (सं. परेश्व) ।

पागड़ी– पगड़ी, सिर पर लपेटने का वस्त्र विशेष ।

परबोटो–जल का बुद्बुदा । संज्ञा, पु० (सं. बुब्दुप)

पान–पर्ण - पण्ण - पाण - पान, पत्ते ।

परथमी–पृथ्वी, जमीन । संज्ञा, स्त्री० । पृथिवी)

पण्णाबो–विवाह करवाना । क्रिया ('पण्णबो' क्रिया का प्रेरणार्थक)

पोल–दर्वाजा; खोखलापन । सं. स्त्री० ।

पेल कोले–पहली बार हुई जोर की वृष्टि, जिसके बाद तुरन्त अनाज बो दिया जाता है । संज्ञा, स्त्री० ।

पाना खोली– प्रथम गर्भवाली स्त्री सं०, स्त्री० ।

पलाणबो-सवारी करना। क्रिया, (पलाण से पलाण) आवा विधिरूप।

पलाणो-पलाण (सं० पल्यङ्क, मि० जीणपलाण) आज्ञा वा विधिरूप।

पाणी-जल। संज्ञा, पु०।

पूगवो-पहूँचना। क्रिया, पुगावो (प्रेरणार्थक)।

पराल-वह धान जिसकी भूसी परिश्रम करने पर अलग होती है। संज्ञा, पु०।

पूमाहमबो-गर्व से फूल जाना। क्रिया।

पामणो-प्राघूर्णक-पाहुणअ-पाहुणा (हि०), पामणा (भी), पाहुना (मि०पावणो-हाड़ोती) संज्ञा, पु० (सं०प्राघूर्णक)।

पालल्यो-पत्थर का ढेर। संज्ञा, पु०बहु०पालल्या।

पेंदो-पेंदा-संज्ञा, पु०।

परचूणी-फुटकर। संज्ञा, स्त्री०।

पाडेलो-पट-पड-पाड-पाडेली वस्त्र। संज्ञा, पु० (सं०पट)।

पोटीड़ो-गूणी। संज्ञा, पु०।

पेटिया-भोजन का सामान। संज्ञा, पु०।

परबात-प्रातःकाल, सुबह। संज्ञा, पु० (सं० प्रभात)।

पायेग-अस्तबल, घुड़शाल। संज्ञा, पु०।

पावली-चवन्नी। संज्ञा, स्त्री०।

पडलो-शादी के समय में वधू के लिये लाई गई गोटों से सजी हुई साड़ी। संज्ञा, पु०।

पोटिया-लद्दू , बैल । संज्ञा, पु० ।

पीटी-पिष्टि-पीटी, उबटन, संज्ञा, स्त्री० (सं० पिष्टि) ।

पीजनिया-पीतलका पैजनियाँ जो भील स्त्रियाँ पैरों में पहनती हैं । संज्ञा, स्त्री० ।

पेगाँ-चौपाये । संज्ञा, पु० ।

परना-पति । संज्ञा, पु० ।

पारकु-पराया । विशेषण, पु० ।

बापा-पिता, बाप । संज्ञा,पु० ।

पानीपरी-परेंडी, पानी के बर्तन रखने का स्थान । संज्ञा, स्त्री० ।

पोईटो-गाय भैंस का गोबर (मि० पोटो, हाड़ोती) संज्ञा, पु० ।

पीयर-पितृ गृह । संज्ञा, पु० ।

पुछणो-प्रश्न- । संज्ञा, पु० । (सं० प्रश्न) ।

(फ)

फीटबो-निकल जाना । (क्रिया) ।

फायलो-बादका पश्चात् की । विशेषण, पु० ।

फटूकवानो-फटकने का वस्त्र, संज्ञा, पु० ।

फायले-पीछे । क्रिया विशेषण ।

फोदूयो-यत्र तत्र घूमता रहने वाला । विशेषण, पु० ।

फचड़को-गन्दा पानी अथवा कीचड़ का छींटा (मु० फचड़का उडाबो--किसी की दशा को अस्त व्यस्त करदेना, उदा० थारा फचड़का उड़ा देस्यूँ) । संज्ञा, (ओकारान्त पु० शब्दों के बहु वचन के 'आ' अंत में होता है,उदा०-फचड़को, फचड़का, गदेड़ो, गदेड़ा, पाड़ो, पाड़ा आदि) ।

फंभाटो–फुफ्कार, क्रोध । संज्ञा, पु० ।

फेरा–चक्कर, पाणि गृहण के समय अग्नि प्रदक्षिणा भी फेरा कहता है । संज्ञा, पु० । (हिन्दी हेरफेर)

फोरो–थोड़ा-थोड़ा, मन्द-मन्द । विशेषण, पु० ।

(ब)

बीदो–सुला हुवा उदा० एक गेहूँ ज्यो ही बीदो (एक गेहूं और वह भी सुला हुआ) । विशेषण, पु० ।

बाटण– बाँटने वाला, । विशेषण, पु० ।

बलंद–ऊँचा । विशेषण, पु० । (उ० बुलन्द)

बाड़ो– पशुओं के बांधने का स्थान । संज्ञा, पु० ।

बगरो–झगड़ा, संज्ञा, पु० ।

बीणबो-बहोरना, चुनना । क्रिया (हि० बनाना)

बीचू –वृश्चिक-उच्छू-दिच्छ-विच्छू (हि०) बीचूं (रा० भी०) सं०, पु०, (सं० वृश्चिक)

बकायबो–बखाना जाना. प्रशंसित होना । क्रिया

बेहता–बैठे हुए । विशेषण, पु०, बहु०

बेडो–वन, जंगल । संज्ञा, पु०

बाजरोटो–लकड़ी का चौकोर ऊँचा तख्ता । (मि० बाजोट–हाड़ोती संज्ञा, पु० ।

बाहीरा–स्त्री । संज्ञा, स्त्री०

बराड़–लगान, कर । संज्ञा, पु०

बाबो–साधु । संज्ञा, पु०

बुगलां–युद्ध का बाजा, बिगुल । संज्ञा, स्त्रि०

बादचाये–बादशाह । सं०, पु० ,) फा० पादशाह)

बोरीयूँ–मस्तक पर गूँथने का बोर की शक्ल का आभूषण विशेष । (मि० बोर-हाड़ोती) । सं०, पु०

बागां–बाग, वाटिकाये । सं०, पु०, बहुवचन

बीहल–जल्दी से । अव्यय, क्रिया विशेषण,

बन्दी–बूँदी, राजपूताना की एक स्टेट । सं० स्त्री०

बाकलो–उबाला हुआ अनाज, जिसे गाय भैंस को दिया जाता है । संज्ञा, पु० ।

बेलो–बेल, लता । संज्ञा, पु० (सं०वल्ली) ।

बोदूँ–कमजोर (मि० बोद्यो (दो)-हाड़ोती ।

बतको–मदिरा भरने का, मिट्टी का, केटली के आकार का बर्तन । (संज्ञा, पु०) ।

बालबो–जलाना । क्रिया ।

बलद–बलीवर्द-बलीवद्द-बलद, बैल । संज्ञा, पु० (सं०बलीवर्द) ।

बापोती–बापदादा की जमीन एवं सम्पत्ति । संज्ञा, स्त्री ।

बापड़ो–बेचरा, मि०झापड़ो-हाड़ोती) विशेषण, पु० ।

बटकू–वस्त्र का टुकड़ा (मि०बटका-हाड़ोती) संज्ञा, पु० ।

बेचू–बिच्छु, संज्ञा, पु० (सं० वृश्चिक) ।

बदारबो–बढ़ाना । क्रिया ।

बटो–बदला, अँग्रेजी के Barater शब्द में और इसमें कुछ समानता है ।

बीजो–दूसरा । विशेषण, पु० ।

बेड़लू–एक मटका और उस पर रखा हुआ घड़ा, ये दोनों 'वेवड़ा' कहलाते हैं । संज्ञा, पु० (मि० बेवड़ा-हाड़ोती) ।

बदार देवो–बढाना, उन्नत करना । क्रिया ।

बीयाबो–उत्पन्न होना। पैदा होना । क्रिया ।

वउ–वधू , वहू , वड़, दुहिल, लड़के की पत्नी । संज्ञा, स्त्री० सं० वधूः) ।

बीजो–दूसरा (विशेषण, पु०) स्त्री, बीजी ।

बलीतो–इन्धन, संज्ञा, पु० ।

वडायवो–काटना (उदा० ऊँट नूँ गावडूं लाम्वो वे ते वे दण ने बडाये–(ऊँट की गर्दन लम्बी है तो दोवार नहीं काटी जाती) । क्रिया ।

वाद्यां–बाइयाँ, स्त्रियाँ । संज्ञा, स्त्री० वहुवचन ।

वग–इस प्रकार की मक्खी जो वहुधा घोड़े आदि पशुओं के शरीर पर वैठती है । एक प्रकार की जूँ होती है । संज्ञा, स्त्री ।

वेला–वेला, होरा, समय, वक्त, । संज्ञा, स्त्री (सं० वेल्य) ।

वहीयर–पत्नी, स्त्री । संज्ञा, स्त्री०

(भ)

भखर–पहाड़ । संज्ञा, पु०

भीड़वो–सामना करना, भिड़ना । क्रिया.

भीड़ू–भिड़ कर, सामना करके । पूर्व कालिक क्रिया ।

भरवी–बन्दूक । संज्ञा, स्त्री०

भमनवो--घूमना । भमन्ये-घूमते-घूमते । क्रिया ।

भागू–अत्यन्त निर्धन । विशेषण, पु० ।

भूंडी–व्यभिचारी । विशेषण, पु० ।

भागदयो–भागिदार, बटायता । संज्ञा. पु० ।

भो-भय, डर । संज्ञा, पु० (सं० भय) ।

भांदवो–नष्ट कर देना । क्रिया ।

भेंत–दीवार । भित्ति - भीत - भेंत । संज्ञा, स्त्री० बहु० भेंता (सं. भित्ति) (मि. भींत - हाड़ोती) ।

भोमका–ज़मीन, आजीविका । भूमिका - भोमका । संज्ञा, स्त्री० (सं. भूमिका) ।

भांड–बहुरूपिया, एक प्रकार की मनोरंजनकर्ता जाति विशेष । संज्ञा पु. ।

भेलो–सम्मिलित - भेला होवो-शामिल होना (क्रि०) विशेषण, पु. ।

भालवन-राय, शिक्षा, सीख । संज्ञा, स्त्री० ।

भालवो–देखना (मि. देखना- भालना - हि०) ।

भजा–बाहु, हाथ । सं; स्त्री०, बहु० भजा (सं. भुजा) ।

भपयो–नपुंसक पुरुष । संज्ञा, पु० ।

भणवो–पढ़ना । क्रिया । भण्यो - पढ़ा हुआ (विशेषण) ।

भावे–जन्म, उत्पत्ति । भव - भो - भावे । सं; पु० (सं. भव) ।

भालवो–देखना । भूत० भाल्यो । क्रिया । (मि. देखना - भालना हिन्दी) ।

भाटो–पत्थर । संज्ञा, पु० ।

भारू–कई 'कड्यू' का समूह, घास का बण्डल; मि. भारा (हाड़ोती) भाववाचक ।

भेलो–एकत्रित । विशेषण; पु० (स्त्री० भेली) ।

भड़े–पास में । क्रिया विशेषण ।

भचिबो–भुसना, शब्द करना, कुत्तों के भोंकने के लिये प्रयुक्त होता है । क्रिया ।

भाद्यां–भाई । संज्ञा, पु० बहु० ।

भूंडो–खराब, बुरा । विशेषण, पु० बहु. भूंडा, स्त्री० भूंडी ।

भण–किन्तु । अव्यय, समुच्चय बोधक (मि. पण (किन्तु)-हाड़ोती)

भोपो–देवता एवं भेरूँ का सेवक जिसमें भेरू का भाव आता है और जो भूत-पिशाच आदि को निकालता है । संज्ञा पु० ।

भमरो–लट्टू, बच्चों के खेलने का खिलौना विशेष० । संज्ञा, पु० (मि० भँवरो–हा०) ।

भूरीयो–भूरा रंग, भूरे रंग का, अँग्रेज तथा यूरोपीयों के लिये भी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। विशेषण, (संज्ञा), पु० ।

भसतोयों–भिश्ती । संज्ञा, पु० ।

भालुजी–जेठानी, पति के बड़े भ्राता की पत्नी । संज्ञा, स्त्री० ।

भाजी–शाक, साग । संज्ञा, स्त्री० ।

भमरो–भँवरा । संज्ञा, पु० (सं० भ्रमर) ।

भामवो–घूमना क्रिया (सं० भ्रम) ।

(म)

मन्न–मन, दिल । सं०, न० (सं० मन)

मठो–मट्ठा, कञ्जूस । वि०, पु० । (यो तो घणूई मट्ठो छै–हाड़ोती)

मूळ–पर्वत की घाटी । संज्ञा, स्त्री० ।

मचरू-मच्छर । संज्ञा, पु० ।

मीनो महीना । सं०, पु० ।

मंगरो-पर्वतीय प्रदेश । संज्ञा, पु० ।

मजरी-पारिश्रमिक संज्ञा स्त्री० (उ० मजदूरी) मि० मजदूरी-हाड़ोती) ।

मालन्या-महल । संज्ञा, पु० ।

मलगातू-दरिद्र दीखने वाला मनुष्य । वि०, पु० ।

माचली-मछली । संज्ञा, स्त्री० ।

मायलो भीतरी, अन्तस्थ । विशेषण, पु० ।

मोरस्यो-अग्रगामी, आगे चलने वाला : विशेषण, पु० ।

मनसोमो-विचार, मनसूबा । संज्ञा, पु०, बहु० मनसोभा (उर्दू, मनसूबा) ।

मुवो-मरा हुआ । विशेषण, पु० ।

मोचड़ी-जूती । संज्ञा, स्त्री० ।

मोरलो-पहले का, पूर्ववर्ती । विशेषण, पु० ।

मईलो-मेह, वर्षा । मेह-मेईला-मेईलो । सं०, (हि० मेह) ।

माचो-खाट । मञ्च, मांच, माचो । सं०, पु० (सं० मञ्च) ।

मातो-सिर मस्तक । सं०, पु० (सं० मस्तक) (मि०माथो-हाड़ोती) ।

मांटी*-पति । संज्ञा, पु० ।

मूंडो-मुख । मुख-मुह-मूंडो । सं०, पु० (सं०मुख) मूंडे (सम्मुख, समान)

---

* राजस्थानी व भीली में पति के लिये मांटी शब्द का प्रयोग होता है ।

मनख-मनुष्य। संज्ञा, पु० (सं-मनुष्य)।

मातू-मोटा, हृष्ट-पुष्ट। विशेषण, पु० ।

मदड़ा-मदिरा, शराब। मद-मदड़ा। संज्ञा, पु० (सं० मद) ।

मसाण-श्मशान। संज्ञा, पु० ।

मोटक्यार-बड़े लोग, जवान लोग। विशेषण, पु० (मि० मोटय्यार-हाड़ोती)।

मोरत-मुहूर्त्त, शुभ काल। सं०, पु० (सं० मुहूर्त्त) ।

मटवो-नष्ट होना, मिटना। क्रिया, ।

मूँगो-मँहगा, मूल्यवान। विशेषण, पु० (मि० मँगो-हाड़ोती)।

मनुवेर-मनुहार, आग्रह। संज्ञा स्त्री० ।

मोरीला-मोड़, जिसे सिर पर दूल्हे बाँधा करते हैं। संज्ञा, पु० ।

मुते-मैं। सर्वनाम ।

मानवी-मनुष्य। संज्ञा, पु० ।

माते-में, ऊपर। अधिकरण बोधक अव्यय (मि० माळेजैपुरी)

मूँडवो-गुरुमन्त्र देना। क्रिया ।

मानता-देवता को जो भेंट चढ़ाई जाती है। सं०, स्त्री० ।

मशिने-मशीनगन। संज्ञा, स्त्री० ।

मा देबे-महादेव, शिव। संज्ञा, पु० ।

मँडे-मंडप। संज्ञा, पु० ।

मन्दल-माँदल, वाद्य विशेष। संज्ञा, पु० ।

मसला-मुसलमान। संज्ञा, पु०।

माँग–वह लड़की जिसके, साथ सगाई होती है। विवाह के पूर्व तक वह मांग कहलाती है। सं०, स्त्री०।

मँगेतड़–वह लड़का जिसकी सगाई होती है विवाह के पूर्व तक 'मँगेतड़' कहलाता है। संज्ञा, पु०।

मारी जाईयो–माँजाया, भाई। संज्ञा पु०।

मासूल–महसूल, टेक्स। संज्ञा, पु०।

मान्दू*–बीमार। विशेषण, पु०। (मि० माँदो–हरेती)।

मरवो–एक फूल का वृक्ष। संज्ञा, पु०।

मोगरो–पुष्प। संज्ञा, पु०।

(र)

रढ–ज़िद, आग्रह। संज्ञा, स्त्री०।

रददो–वह औजार जिससे बढ़ई लकड़ी समतल बनाता है। संज्ञा, पु० (रद्दा)।

रचपूत–क्षत्रिय, राजपूत। संज्ञा, पु० (सं० राजपुत्र)।

राळ–बिना, वगैर। अव्यय।

राखी–राखी। संज्ञा, स्त्री० (सं० रक्षिका)।

रांड:-:–विधवा स्त्री। संज्ञा, स्त्री० (सं० रण्डा)।

:-: इस शब्द का प्रयोग कुलटा स्त्रियों के लिये भी होता है। किसी स्त्री के कटु-स्वभाव को द्योतित करने के लिये भी इसका प्रयोग होता है।

रळी–व्यर्थ। विशेषण।

---

*कदाचित् संस्कृत मन्द शब्द से इसका अर्थ है।

रगड़ो-झंझट। संज्ञा, पु०

रमाडबो-खिलाना। क्रिया (सं० रम्) (मि० रमाबो-हाड़ोती)।

रत-ऋतु. मौसम। संज्ञा, स्त्री० (स० ऋतु)।

रांगड़-शूरवीर। विशेषण, पु०।

रांडियो-कमजोर, नपुंसक। विशेषण, पु०।

रायतो-छोंका हुआ मसालेदार मट्ठा। संज्ञा, पु०।

रागस-राक्षस। संज्ञा, पु०।

री-क्रोध। संज्ञा, पु० (मि०रीस-हाड़ोती)।

रूखड़ो वृक्ष। वृक्ष-रुक्ख-रूख-रूखड़ों। सं०,पु० (सं० वृक्ष)।

रूपालो-सुन्दर। 'रूप' शब्द से 'लो' प्रत्यय लगा कर बनाया गया है। विशेषण. पु० (स० रूपवान)।

रूड़ो-सुन्दर एवं आकर्षक वेषभूषा वाला विशेषण, पु०।

रूप्यो-रुपया। संज्ञा, पु०।

रेंट-रहँट। संज्ञा, स्त्री०।

रमबो-खेलना, क्रीड़ा करना। क्रिया।

राकेड़ी-मस्तक का आभूषण। संज्ञा, स्त्री० (मि० राखड़ी-हाड़ोती)।

रेबारन*-स्त्री। संज्ञा, स्त्री०।

---

* स्त्री को इस शब्द से कभी कभी सम्बोधित करते हैं। 'रेबारन' बहुधा ऊंटों को चराने वाली स्त्री को कहते हैं।

रेबारी+–पुरुष, पुरुष का सम्बोधन । संज्ञा, पु० ।
रुपरेल–एक प्रकार का पक्षी, जिसका दाहिने बोलना भीलों द्वारा अपशकुन माना जाता है । सं०, स्त्री० ।

(ल)

लार–साथ । सज्ञा, स्त्री० । उदा० थारी लार रूंलो (तेरे साथ रहूंगा)
लेच्–लच्छे, धागे । संज्ञा, पु० ।
लवरू–कपड़ा, वस्त्र । सं०, पु० ।
लबरो–वस्त्र । संज्ञा, पु० ।
लसको–चलने का नीचता पूर्ण ढंग । सं०, पु० ।
लोई–लोहू, रक्त । संज्ञा, पु० ।
लाड़लो–प्यारा । विशेषण, पु० ।
लाड़ी–वधू, दुलहिन । संज्ञा, स्त्री० ।
लुगाई–स्त्री संज्ञा, स्त्री० ।
लोड़ो–लौह, धातु विशेष । लौह-लोह-लो-लोड़ो । सं०, पु० (सं० लौह)
लक्खण–गुण । संज्ञा, पु०, बहु० लक्खण (सं० लक्षण)
लवणावो–भोजन बनाना । क्रिया । लवणावाली भोजन बनाने वाली स्त्री ।
लूगड़ो साड़ी । संज्ञा, पु० ।
लच्मी–लक्ष्मी । लक्ष्मी-लछमी-लच्मी । सं०, स्त्री० (सं० लक्ष्मी) ।
लींबड़ो–नीमका वृक्ष । निम्ब-नींब-लींबड़ो । सं०, पु० (सं० निम्ब) ।

+ 'रेबारी' बहुधा ऊंट चराने वालों को कहते हैं ।

लूचो-बदमाश, लुच्चा। विशेषण, पु०
लेपक्यो-लीपा हुवा। विशेषण, पु० (सं० लिम्पित)
लोडू-छोटू। विशेषण, पु० (सं० लघु)
लच्मी[1] (लशमी) लक्ष्मी। संज्ञा, स्त्री० (सं० लक्ष्मी)।
लार-साथ में। अव्यय।

(व)

वीराचालो-वीरता का आरम्भ। संज्ञा, पु०
वांसोलो-बढ़ई। संज्ञा, पु० (बांस-लो)
वेरागिर-डूँगरपुर। संज्ञा, पु०।
वीशलवो धो देना। क्रिया।
वगड़ो-वन, जंगल। संज्ञा, पु०।
वत्तू-बहुत मि० बत्तो-हाड़ोती (अधिक)। विशेषण पु०।
वला-समय, वेला। संज्ञा, पु०।
वायरदूयो-काम में लिया। विशेषण पु०।
वायरवो-काम में लाना। क्रिया।
वोर-दुल्हा। संज्ञा, पु० (सं० वर)।
वसवो-रहना, निवास करना। क्रिया।
वावड़ो-बावनी' वोना। संज्ञा, पु०।

---

१ धन, सम्पत्ति, पशुधन के लिए भी 'लच्मी' शब्द का प्रयोग बहुत अधिक मिलता है। उदा० लच्मी मरवे लागी मोरिया-हे-इन्द्र! पशु मरने लग गये हैं।

वेई-होकर (भूत्वा होइ ऊठा, होई, ह्वेई. वेई)। पूर्वकालिक क्रिया। सं० भूत्वा, व्रज० होई)।

वाणन्या-वनिया। संज्ञा, पु० (सं० वणिक)।

विहवो-डरना। क्रिया (सं० विह्वल)।

वीवा-शादी। संज्ञा, पु० (सं० विवाह)।

वाट राह, रास्ता, इन्तजार (मि० हि० वाट जोहना)। संज्ञा स्त्री०।

वटे-वहाँ उस स्थान पर (मि० उठै-हाड़ोती)। कालवाचक क्रिया विशेषण।

वलावो-मार्ग-रक्षक। संज्ञा, पु०।

वारो-बारी, नम्बर-संज्ञा, पु०।

वाउरा-पवन। संज्ञा, पु० (सं० वायु)।

वोरूं-शिया, बोहरा, मुसलमान व्यापारी। सं० पु०।

वाथणु-सोने के लिये विस्तर। संज्ञा, पु०।

(स)

समापवो-देना। क्रिया (सं०सम्+अर्प)।

समापण-देने के लिये। संज्ञा (संप्रदाय कारक बोधक प्रत्यय सहित) यह प्रत्यय 'तुमुन्' का ही विकृत रूप है।

सीदो-पेटिया जो ब्राह्मण को भोजनार्थ दिया जाता है। संज्ञा, प०।

सोय-अवसर। संज्ञा, पु०।

सालरो-खजूर के पत्तों का बना छोटा बिछौना, चटाई।

साल-कष्ट, दुःस। सज्ञा, पु० (सं० शल्य)।

समहर-युद्ध। संज्ञा० पु० । (सं० समर)

सेभरी-शम्भरी के राजा चौहानों के लिये यह शब्द प्रयुक्त होता है। संज्ञा-पु० ।

सुबो-सन्देह। संज्ञा, पु० (फ़ा-शुबह)।

सपह-राजा (संज्ञा० पु०) ।

सजोड़े-जोड़े के साथ, दोनो पति-पत्नी, । विशेषण पु० ।

साकुर-घोड़ा। संज्ञा० पु० ।

सचावो-संचित करना। क्रिया।

शेपकरनालो-सहस्र किरण वाला, सूर्य (विशेषण संज्ञा, पु०)

सेंग-समस्त, विशेषण पु० ।

सेर-शहर, नगर। संज्ञा० पु० । (उ० शहर)।

सेवासी-शाबाशी। संज्ञा, स्त्री० ।

समन्द-समुद्र। संज्ञा० पु० । (समुद्र)।

सेवाड़ो-भिन्न, अलग, । विशेषण, पु० बहु० सेवाड़ाँ।

सान्धा-जोड़, थेकली। संज्ञा० पु० ।

साउकार-साहूकार। संज्ञा, पु० ।

संगरा-यात्री लोग। संज्ञा, पु० ।

साजा-गुफा, खोह। संज्ञा, पु० ।

सन्टी-सन की लकड़ी; पतली लकड़ी। संज्ञा, स्त्री० ।

सीरोई-सिरोही, राजपूताने की एक स्टेट । संज्ञा, स्त्री० ।

(ह)

हल-शुद्ध । संज्ञा, पु० ।

होफां-हाहाकार । संज्ञा, पु० ।

हीरावण-कलेवा (मि० सिरावण-जयपुरी) ।

हा-साँस । संज्ञा, पु० सं० श्वास) ।

हगरदयो-संग्रह किया हुआ । विशेषण-पु० (सं०संगृहित)

हलवो-बिगड़ना । क्रिया ।

हाकी- साक्षी, गवाह । संज्ञा, उभयलिंग ।

हगत-बिना किसी के कहे, अपने आप । (मि० सगत, हाड़ोती)
अव्यय ।

हतरा-सत्रह । संख्या वाचक शब्द । (सं० सप्तदश) ।

हाकर-मिश्री । संज्ञा, स्त्री । (सं० शर्करा)

हांगणो-समीप स्थिति । विशेषण० पु० ।

हगाई-सगाई, सम्बन्ध । संज्ञा० स्त्री०

हूरो-सूअर । संज्ञा. पु० (सं० शूकर)

हाथल-जांघ, संज्ञा, स्त्री ।

हापरी-श्वसुरालय, सुसराल । संज्ञा, स्त्री ।

हेंदरो-फटे पुराने कपड़ों से बनाई गई रस्सी । (मि० सींदरो-
हाड़ोती) संज्ञा पु०

हड़पो-कोठी, निमक, मिर्च आदि रखने का पात्र । सं० पु० ।

हांतरो-सत्कार, खातिरदारी, संज्ञा० पु० सं० (सत्कार)

हूंट दशा, परिस्थिति । संज्ञा स्त्री० ।

हेरण्लो–गांव के पासकी संकीर्ण गली, संज्ञा० पु०

हाँड–बेल, साँड। संज्ञा पु०।

होडी–द्रष्टि, उदा० मारी होड़ी पाचे आंगली बर बर। मेरी द्रष्टि में पांचों अंगुलियां समान हैं।

हेठ–सेठ। संज्ञा, पु०।

हाऊ–अच्छा। विशेषण; उभय लिंग।

हांकड़ो–सँकरा। विशेषण। पु० (सं० संकीर्ण)।

हींडबो–चलना। क्रिया।

हेज– हेत, प्रेम। संज्ञा, पु०।

हाबू–साबुन। संज्ञा, पु०।

होरू–सरल। विशेषण। सं) सरल–हरल–होरु।

हद्‌या–हृदय (शुद्ध-हृदय) (हृदय-हदय; हदया)। संज्ञा, पु०।

हरको–समान, सदृश. (मि० सरको-हा०.) स्त्री० हरकी। विशेषण, समानता बोधक, पु० (सं० सदृशः, व्रज० सरिस)।

हाहू–सासू, पति की माता। (श्वश्रूः, सर-सू-सासू. हाऊ)। सज्ञा स्त्री०। (सं० श्वश्रुः)।

हामलबो–सुनना (उदा० अभी वात कणां हामली) हामलबो सांमल बो का ही रूप है और सम्भव है इनका उद्‌गम संस्कृत के 'श्र' से हो, किन्तु किस विकासक्रम से यह रूप हुआ यह संदिग्ध है। क्रिया।

हांचो–सत्य, सच, साच, साँच, हाँच, सत्य। विशेषण० पु० एकः। (सं० सत्य) बहु० हाँचा, स्त्री० हांची।

हूकवो–शुष्क–सुक्ख, सूख, सूखना (हि० सूखवो) हूकावो-(प्रेरणार्थक) सूखना। क्रिया। (सं० शुष्क), हूकणों.

हो–सौ, उदाहरण:–आदमी ना हो कायदा' संख्यावाचक शब्द।

हवराध–स्वार्थ। संज्ञा, पु० (सं० स्वार्थ)।

हाऊ–अच्छा। विशेषण।

हूरज–सूरज,सूर्य। संज्ञा।

हेंग–सींग। संज्ञा।

हांप–सांप, सर्प, सप्प, सांप, हांप। संज्ञा-पु० (सं० सर्प)।

हकत्यां–सुख में। संज्ञा।

हाग–डालपक आम, (मि० साग–हाड़ोती) संज्ञा० स्त्री।

हवाद–स्वाद, सवाद-हवाद जायका। संज्ञा, पु० (सं० स्वाद)

हेवा–सींवण, टांका। संज्ञा, पु०।

हादयो–सिद्ध–साध्या–हादयो, सधा हुआ। विशेपण, पु० (सं० सिद्ध)।

हांडी–मिट्टी का बर्तन। संज्ञा, स्त्री।

हाकवो–हल में जोतना, किसी यान विशेप में जुते हुए वाहन को चलाना। क्रिया।

हाली–सेवक, बहुधा यह शब्द खेती के लिये रोजगार अथवा अनाज पर रक्खे गये नौकर के लिये प्रयुक्त होता है। संज्ञा, पु०।

हेलो–बुलाने के लिये दी गई जोर की आवाज़। सं०, पु०

होनार–सुनार। संज्ञा, पु० (सं० स्वर्णकार)

हीक–सीख, उपदेश। शिक्षा–सिक्खा–सीख–हीक। संज्ञा, स्त्री० (सं० शिक्षा)

हलकारो–इधर-उधर समाचार चिट्ठी-पत्री पहुँचाने वाला। संज्ञा, पु०

हेंली–सखी। संज्ञा, स्त्री० (मि० सहेली)

कदाचित् इस शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'हला' शब्द से जिसको सखियाँ एक-दूसरे के सम्बोधन करने में प्रयुक्त करती थीं। नाटकादि में यह शब्द पाया जाता है।

हाटाँ–बाज़ार। संज्ञा, पु०, बहु०

हीलो–मन्द मन्द। विशेषण, पु० (मि० हौले हौले) उदा० हीलो पवन।

हुनारी–मिस्त्री, बढई। संज्ञा, पु०

हूकल–सूखा। शुष्क, सुक्ख, सूखा, हूकल। विशेषण, पु०, (सं० शुष्क)

हाँकी–गौना, द्विरागमन। संज्ञा, पु०

हकली–साँकल, कुन्दी। संज्ञा, स्त्री०

हीम–सीमा, हद। संज्ञा, स्त्री० (सं० सीमा)

हाँकबो–चलाना, घेरना। क्रिया।

हलावट–शिल्पकार, संगतराश। सं० पु०।

हेड़–धारा। सज्ञा, पु०।

हकनियो–शकुन। संज्ञा पु०, (सं० शकुन)

हायरो–हार। संज्ञा, पु० (सं० हार)